श्रीहरिः ।

हंसराजनिदानम् ।

कविवरहंसराजप्रणीतम्

माथुरदत्तरामकृतया हंसराजार्थबोधिन्या

भाषाटीकया सहितम् ।

(यस्मिन्नाडीपरीक्षापूर्वक-ज्वर, संग्रहणी, अर्शो, भगन्दर, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, राजयक्ष्म, कास, श्वास, च्छर्दि, तृष्णा, मूर्च्छा, दाहादिरोगाणामतिवाहुल्येनलक्षणकुलम्प्रदर्शितम्)

इदं पुस्तकं

खेमराज श्रीकृष्णदास श्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९६४ शके १८२९.

Printed at the Shri Venkateshwar
Steam Press:—BOMBAY.

भूमिका।

धन्य है वह परमेश्वर जिस्की कृपासे सारे संसारमें कैसे कैसे विचित्र चरित्र हो रहे हैं, देखिये यह कैसी ईश्वरकी अद्भुत रचना है कि सृष्टिमें अगणित जीव हैं, परन्तु यह नहीं कि एकसे दूसरे की भ्रांति हो—इसी प्रकारसे जितने पदार्थ सृष्टिमें हरएकके गुण दोष पृथक् पृथक् दिये हैं—देखिये बुद्धिमान् महात्मा पुरुषोंने जीवोंकी रक्षा और क्लेश निवारणके निमित्त कैसे २ विचार किये हैं—वैद्यक विद्यामें अनेकों प्रकारके ग्रन्थ बने हैं, जिनके द्वारा औषधियों करके कैसाही रोग हो विधिपूर्वक सेवनसे तुरन्तही लाभ होगा औषधियोंका तो फल प्रत्यक्ष है दृष्टान्तकी आवश्यकता नहीं॥

प्रथम महात्माओंने जो ग्रन्थवैद्यक विद्याके बनाये वह संस्कृतमें हैं, जो इस समय विशेषतर उपयोगी नहीं होते इस कारण वर्त्तमानकालके अनुसार विद्वान् सज्जनोंने उन ग्रन्थोंपर भाषाटीका बनानेका आरम्भ किया है, और बहुतसे ग्रन्थोंपर भाषाटीका बनभी गई है॥

हम अतीव प्रसन्नतापूर्वक इस बातको प्रकट करते हैं कि एक ग्रन्थ हंसराजनिदान जो भाषाटीकासहित है अवलोकन करने योग्य है—एक तो इस कविकी कविता श्लोकबद्ध अति अनूठी है और श्लोक ऐसे ललित हैं कि जिनके पढने और श्रवणमात्रहीसे चित्तको आनन्द होता है—दूसरे यह ग्रन्थ बहुत बडाभी नहीं है कि जिसके पढनेके लिये अवस्थाका एक भाग आवश्यक हो—और बहुत छोटाभी नहीं है इसीसे बहुधा लोग इसको पसन्द करते हैं कि केवल इसीके कण्ठाग्र करनेसे छोटे और बडे सम्पूर्ण अपने अभीष्ट फलको पहुंचते हैं॥

इन सव गुणोंके होते हुये इस ग्रन्थमें हंसराजार्थवोधिनी टीका भाषामें ऐसी हुई है कि मानों अमृतकुंड जो अति कठिन स्थल है उसके लानेके लिये रेलगाडी वनगई ॥

प्रथम तो यह ग्रन्थ केवल संस्कृत जाननेवालोंहीके लिये फलदायक था अव भाषा जाननेवाले वैद्यलोगभी उसी प्रकार अपना अर्थ प्राप्त करसक्तेहैं ॥

प्रथम इस अपूर्व्व अत्युत्तम ग्रन्थको हमने छपायाथा पश्चात् हमारी इच्छानुसार लखनऊमें मुंशीनिवलकिशोरजीने छापा था अव इस ग्रंथ (हंसराजनिदान) के सर्व प्रकारके छापनेका हक़ व रजिस्टरीका हक़ खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकटेश्वर छापाखाना वम्बई को दे दिया है इसलिये सूचित करताहूं कि अवसे कोई महाशय व उक्त महाशय इस ग्रंथके छापनेकी आशा न करें लाभकी कांक्षासें व्यर्थ व्यय न कर वैठें ॥

पण्डित दत्तराम चौवे

मथुरा

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

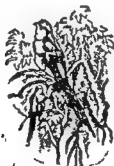
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–वम्बई.

हंसराजनिदानकी अनुक्रमणिका





इति हंसराजस्य विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

हंसराजनिदानम् ।

भाषाटीकासहितम् ।



हंसराजकवि हंसराज ग्रन्थके कर्त्ता ग्रन्थके आदिमें शिष्टाचार परिपालनके निमित्त और ग्रन्थकी निर्विघ्नसमाप्तिके निमित्त भले प्रकार उचित अपने इष्टदेव श्रीबालाजीको ध्यानपूर्वक स्रग्धरा छंद करके मंगलाचरण करतेहैं ॥ ध्यायेदिति ।

ध्यायेद्बालाम्प्रभाते विकसितवदनाम्फुल्लराजीवनेत्रां मुक्तावैदूर्यगर्भैरुचिरकनकजैर्भूषणैर्भूषितांगीम् ॥ विद्युत्कोटिच्छटाभां परिमलबहुलां दिव्यसिंहासनस्थां गीर्देवी तस्य दासी भवति सुरवनं नन्दनं केलिगेहम् ॥१॥ धत्ते ते चरणांबुजं स्वहृदये मातर्नरो योऽनिशं तस्याऽऽस्ये परिनर्त्तते प्रतिदिनं वाग्गद्यपद्यात्मिका ॥ लक्ष्मीस्तस्य गृहे स्थिता करतले मुक्तिः स्थिताः सिद्धयो द्वारे तस्य विभूषिताश्च निधयस्तिष्ठन्ति नित्यं मुदा ॥ २ ॥

अर्थ–प्रातःसमय श्रीबालाका ध्यान करना. कैसी है बाला कि प्रफुल्लित मुख,फूले कमलके समान नेत्रवाली, मोती और वैदूर्यमणि करके जटित सुन्दर सुवर्णके भूषणों करके भूषित देह, जिसकी कोटि बिजलीके समान प्रकाशवाली अतिशय सुगन्धयुक्त देह श्रेष्ठसिंहासनपर स्थित, ऐसी बालाका जो मनुष्य इस प्रकार ध्यान करता है उसकी सरस्वती दासी होती है. और देवतोंका नन्दनवन क्रीडाका स्थान होता है ॥ १ ॥ हे माता जो मनुष्य तेरे चरणकमलोंका अपने हृदयमें निरन्तर ध्यान करता है तिसके मुखमें गद्यपद्य रचनारूपी सरस्वती नित्य नाचती है। घरमें लक्ष्मी स्थिर है मोक्ष उसके हाथमें है, अष्टसिद्धि उसके द्वारपर खडी रहे और नवनिधि नित्य आनंदपूर्वक स्थित रहती है। इस श्लोकका छन्द शार्दूलविक्रीडित है ॥ २ ॥

जगन्मातर्नमस्तेऽस्तु वरदे मंगले शिवे॥ग्रन्थकर्त्तुं प्रवृत्तस्य साहाय्यं कुरु मेऽनिशम् ॥ ३ ॥ अहमपि जगदंबे दृश्यतां दिव्यदृष्ट्या न भवति तव हानिः कापि दृष्टेः कदाचित् ॥ स्वजनहितपरायाः

शंकरस्य प्रियाया अमृतरसहृदिन्याऽहं सनाथो भवामि ॥ ४ ॥ भिषक्चक्रचित्तोत्सवं जाड्यनाशं करिष्याम्यहं बालबोधाय शास्त्रम्॥नमस्कृत्य धन्वंतरिं वैद्यराजं जगद्रोगविध्वंसनं स्वेन नाम्ना ५

अर्थ–हे जगन्मातः ! हे वरदे ! हे मंगले ! हे शिवे ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ग्रन्थकरनेको प्रवृत्त मेरी निरन्तर सहाय करो ॥ ३ ॥ हे जगदम्बे ! मुझे दिव्य दृष्टिसे देख, तेरी दृष्टिकी कभी कहीं हानि नहीं हो. कैसी तुमहो कि अपने भक्तजनके हितमें तत्पर और श्रीशंकरकी प्यारी पत्नी हो. अमृतरसकी सरोवरी मैं तुम्हारी दृष्टिसे सनाथ होऊंगा इस श्लोकका मालिनी नाम छन्दहै ॥ ४ ॥ मैं वैद्योंके राजा धन्वन्तरिको नमस्कार कर बालकोंके बोधके अर्थ जगत्के रोगोंका नाशक वैद्य समुदायके चित्तका उत्सव कारक मूर्खतानाशक ऐसा अपने नाम करके अर्थात् हंसराज नाम करके ग्रन्थको करताहूं. इस श्लोकके छन्दकानाम भुजंगप्रयात है ॥ ५ ॥

ब्रह्मेशो गरुडध्वजो भृगुसुतो भारद्वजो गौतमो हारीतश्चरकोत्रिकः सुरगुरुर्धन्वतरिर्माधवः ॥ नासत्यो नकुलः पराशरमुनिर्दामोदरो वाग्भटो येऽन्ये वैद्यविशारदा मुनिवरास्तेभ्यो परेभ्यो नमः ॥६॥ आत्रेयधन्वंतरिसुश्रुतानां नासत्यहारीतकमाधवानाम् ॥ सुषेणदामोदरवाग्भटानां दस्रस्वयंभूश्चरकादिकानाम् ॥ ७ ॥ एषां समालोक्य मतं मुहुर्मुहुर्ग्रंथो मनोज्ञः क्रियते मयाऽधुना ॥ पद्यैरदोषै रचितोऽल्पमेधसां ज्ञानाय नूनं भिषजात्समानिनाम् ॥८॥

अर्थ–ब्रह्मा, शिव, विष्णु, शुक, भरद्वाज, गौतम, हारीत, चरक, अत्रि, बृहस्पति, धन्वतरि, माधव, अश्विनीकुमार, नकुल, पराशरमुनि, दामोदर, वाग्भट और जे वैद्योंमें चतुर मुनियोंमें श्रेष्ठ उन सबनके अर्थ नमस्कार है ॥ ६ ॥ आत्रेय, धन्वंतरि, सुश्रुत, अश्विनीकुमार, हारीत, माधव, सुषेण, दामोदर, वाग्भट, सनत्कुमार और चरकादिक ॥ ७ ॥ इनके मत वारवार देखकर वैद्य ऐसे अपने आपको माने अल्पबुद्धि वारेनको निश्चयज्ञानके अर्थ दोषकरके रहित जे पद तिन करके रचित मनको प्रसन्न करनेवाला अब मैं ग्रंथरचताहूं ॥ ८ ॥

दर्शनस्पर्शनप्रश्नै रोगिणो रोगनिश्चयम् ॥ आदौ ज्ञात्वा ततः कुर्याच्चिकित्सां भिषजांवरः ॥ ९ ॥ देशं बलं वयः कालं गुर्विणीगदमौषधम् ॥ वृद्धवैद्यमतं ज्ञात्वा चिकित्सामारभेत्ततः ॥ १० ॥

अर्थ–देखना स्पर्शकरना पूंछना इन तीन प्रकारसे पहिले रोगीके रोगको निश्चय करके वैद्योंमें श्रेष्ठ फिर रोगीकी चिकित्सा करे ॥ ९ ॥ देश बल अवस्था काल गर्भिणीका रोग औषध और वृद्धवैद्यके मतको जानके फिर चिकित्सा करे ॥ १० ॥

अथनाडीलक्षणानि।

करांगुष्ठमूलोद्भवा प्राणभूता नृणां रोगिणां साक्षिणी सौख्यभाजाम्॥जलौकोरगाणा गतिं नाडिका या विधत्ते निरुक्ता च वातात्मिकासा ॥११॥ विधत्ते गतिं काकमंडूकयोर्या मुनीन्द्रैर्निरुक्ता च पित्तात्मिकासा ॥ शिरा हंसपारावतानां गतिं या दधाति स्थिरा श्लेष्मकोपान्वितासा ॥ १२ ॥ नाडी चंचलतां कचिच्छिथिलतां शैत्यं कचिच्चोष्णतां धत्ते मंदगतिं द्विदोषकुपिता स्थानच्युतिं क्षीणताम्॥वक्राकारगतिं कचिद्वितनुते प्राप्नोति कंपं कचिद्वैकल्यं विदधाति याति कुपिता मासान्तरे सानिशम् ॥ १३ ॥

अर्थ–प्रथम नाडी परीक्षा लिखे है. हाथके अँगुठेके निकट रोगी मनुष्यके सुखदुःखकी साक्षी देनेवाली नाडी यदि जौंक वा सर्प कीसी चाल चले तो वातकी नाडी कहिये ॥ ११ ॥ और जो नाडी काकमेंडककीसी चाल चले तो मुनियोंने पित्तकी नाडी कहीहै, और जो हंस कबूतर कीसी चाल चले तो कफकोपकी नाडी कहिये ॥ १२ ॥ द्विदोष कोपकी नाडी चञ्चल कभी शिथिल कभी शीतल कभी गरम और मद विकलताको प्राप्तहुई गमन करैहै और स्थानको छोडदेय और बहुत धीरे २ चले, कभी टेढी चले, कभी कभी कांपे, विकलताको प्राप्त हुई ऐसी नाडी कुए महीनेके भीतर रोगीको मार डाले ॥ १३ ॥

त्रिदोषान्विता नाडिका चंचलोष्णस्फुरद्द्वित्रिरूपा त्वरायुर्विभिन्ना ॥ गतिं तैत्तरीयां विधत्तेतिकंपं क्षणं क्षीणतां याति मूर्च्छां कचित्सा ॥ १४ ॥ शिरा यस्य वातार्दिता पित्तदग्धा कफेनातिकोपेन नाडी कृता सा॥ गदी सोल्पकालेन मृत्योर्विदीर्णे मुखे यास्यते दंतदंष्ट्राभिकीर्णे ॥ १५ ॥

अर्थ–संनिपातकी नाडी चपल और गरम और दो तीन प्रकारकी चाल चले, वह नाडी जल्दी आयुकी काटनेवाली जाननी, और तीतरकीसी चाल चले और बहुत कांपे तथा मंदचले और कभी चलनेसे रहि जाय वह भी असाध्य ॥१४॥ जिस रोगीकी नाडी वातकरके दूषित, पित्त करके दग्ध, और कफके कोपकरके खेदित हो वह रोगी थोडे कालमें मौतके खुले हुये दंतदाढा करके युक्त मुखमें जायगा अर्थात् मरैगा ॥ १५ ॥

शिरा यस्य सूक्ष्मातिशीतान्विता वा स रोगी न जीवेत्प्रयत्नैः कदाचित्॥चलद्द्वित्रिरूपा त्रिदोषान्विता वा स रोगी यमस्यालये शीघ्रगंता ॥ १६ ॥ नाडी शीघ्रगतिं धत्ते ज्वरकोपेन सोष्णताम् ॥ रक्ताधिक्येन सा कोष्णा गुर्वी वेगवती भवेत् ॥ १७ ॥ सुखिनो मनुजस्य शिरापरितः स्थिरतां समुपैति दधाति बलम्॥क्षुधितस्य भवेच्चपला सततं तृपितस्य शिरा व्रजति स्थिरताम् ॥ १८ ॥

अर्थ–जिस रोगीकी नाडी अतिमंद चले, और शीत करके युक्त हो वह रोगी अनेक यत्नोंके करनेसेभी नही जीवे, और जिस रोगीकी नाडी त्रिदोषयुक्त दो तीन प्रकारकी चले, वह रोगी जल्दी यमराजके घर पहुंचेगा ॥१६॥ ज्वरके कोपसे नाडी गरम और जल्दी चलतीहे, और रुधिरके बिगडनेकी नाडी गरम और भारी तथा जल्दी चलतीहे ॥ १७ ॥ सुखी मनुष्यकी नाडी बलयुक्त और स्थिर चलती है, और क्षुधित मनुष्यकी नाडी चपल और भोजन करेकी नाडी स्थिर चलतीहे इस श्लोकके छन्दका नाम तोटकवृत्तहे ॥ १८ ॥

मोहेन कामेन भयेन चिंतया क्रोधेन लोभेन बहुश्रमेण वा ॥ मंदाग्निनोद्वेगतरेण पीडया स्यान्नाडिका मन्दतरा नृणांभृशम् १९

इति हंसराजकृते हंसराजनिदाने नाडीलक्षणवर्णनम्

अर्थ–मोहसे कामसे भयसे चिन्तासे क्रोधसे बहुत परिश्रमसे मंदाग्निसे उद्वेगसे पीडासे मनुष्योंकी नाडी निरंतर मंद चलती है ॥ १९ ॥ इति श्रीनाथुरामशर्माभपाठकनामिनहंसराजार्थबोधिन्यां भाषाटीकायां नाडीलक्षण समाप्तम् ॥

दोषैर्विनानरोगाः स्युर्नदोषा हेतुभिर्विना ॥ हेतवः कर्मसम्भूतास्तान्हेतून्कथयाम्यहम् ॥१॥ (अथवातकोपकारकवस्तु) प्राणापानगतेर्विघातकरणैः क्षुन्मूत्रतृट्रोधनैर्व्यायामव्रतशोकशीतसलिलस्नानैः स्त्रियाः सेवनैः॥ रूक्षाम्लामिषमिष्टपिष्टकटुकैरत्यंबुपानाशनैर्वर्षाशीतशरत्सुचैत्रसमयेवातस्यकोपोभवेत्२ (अथपित्तकोपकारकवस्तु) तीक्ष्णोष्णाम्लविदाहिशाककटुकैः क्षारान्नपित्ताशनैर्व्यायामाध्वपरिश्रमैर्दिनपतेरातापसंसेवनैः ॥ क्रोधोष्णोल्लवनैः कषायमदिरापानैर्निशाजागरैर्वर्षाग्रीष्मशरत्सुमध्यदिवसे पित्तस्य कोपोभवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ-विना दोषोंके रोग नहीं होते और विना हेतुओंके दोष नहीं होते और हेतु कर्मसे पैदा होतेहैं सो उन्हीं हेतुओंको मैं कहताहूं॥ १॥प्राण और अपान पवनकी गति बिगड़नेसे भूंख प्यास मूत्र इनके रोकनेसे दण्ड कसरतके करनेसे व्रतके करने शोचसे शीतल जलके नहानेसे बहुत स्त्रीके संगसे रूखा खट्टा मीठा पिसा कडुआ ऐसे पदार्थके भोजनसे बहुत जल और भोजनके करनेसे वर्षा ऋतु शरदऋतु शीतकाल और चैत्रके महीनेमें वात कुपित होताहै ॥२॥ तीक्ष्णामिरच आदि गरम खट्टा दाहका करनेवाले पदार्थ शाक कडुआ खार मिला अन्न और पित्तकारक ऐसे भोजनके करनेसे दण्डकसरतके करनेसे रास्ताके चलनेसे परिश्रमके करनेसे घाममें रहनेसे क्रोधसे गरमीसे खेलने कूदनेसे कसैली वस्तु मद्यकेपीनेसे रात्रिमें जागनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु मध्याह्नमें पित्तकोप करताहै ॥ ३ ॥

कफकोपकारकवस्तु ॥

क्षारक्षीरविकारशोकमधुरैः पानाशनातिक्रमैर्मूलस्निग्धगरिष्ठकंदुपिशितैःशीताम्लमाषाशनैः॥ नासानेत्रमुखेषुधूमरजसोपातैर्महाघोपणैः श्लेष्माकोपनरंदधातिशिशिरे हेमंतकेमाधवे ॥ ४ ॥

अर्थ–खार दूधकापदार्थ शाक मिष्ट भूख प्यासके समयको उल्लंघन करनेसे कंद चिकना गरिष्ठ मूल पदार्थ पिसा अन्न शीतल खट्टा उर्द इनके खानेसे नाक नेत्र मुख इनमे धुंयेंके और रजके गिरनेसे पुकारनेसे शिशिरऋतुमे हेमन्तऋतुमे वैशाखमे कफ कोप करताहै ॥ ४ ॥

ज्वराणांघोररूपाणां यानिचिह्नानितान्यहम् ॥ वक्ष्येज्ञानेननेनैवरोगः संज्ञायते बुधैः॥५॥ (तस्य प्रागुत्पत्तिमाह) दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिश्वाससम्भवः॥ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वंद्वसंघातागन्तुजः स्मृतः ॥१॥ (ज्वरस्य संप्राप्तिमाह) मिथ्याहारविहारस्य दोषाह्यामाशयाश्रयाः ॥ बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्युरसानुगाः॥२॥(ज्वरके पूर्वरूपको कहैहैं) तापः शरीरे गुरुताऽलसत्वं सर्वांगपीडा विरसत्वमास्ये ॥ शीतःश्रमो वीर्यवलस्य हानिः ज्वराग्रचिह्नानि वदंति संतः ॥६॥ (वातज्वरकेलक्षण) जृम्भोद्गारतृषाः कषायवदनं निद्राविनाशोऽरुचिः श्वासोरूक्षवपुर्भ्रमोविकलताशोषो मुखेऽक्षिस्रवः ॥ हिक्काध्मानविवर्णतांगचलनं रोमोद्गमोंगव्यथा हृद्यासोंत्रविगुंजनं भवति तद्वातज्वरे लक्षणम् ॥ ७ ॥

अर्थ-घोररूपज्वरोंके चिह्न मैं कहताहूं जिनचिन्ह अर्थात् लक्षणों करके पंडितोंकरके रोग सबजाने जायँ ॥ ५ ॥ दक्षके करेहुये तिरस्कारसे क्रोधित शिवकी श्वाससे उत्पन्न हुआ ज्वर आठ प्रकारका १ वातसे, २ पित्तसे, ३ कफसे, ४ वात पित्तसे, ५ वातकफसे, ६ पित्त कफसे, ७ वातपित्तकफसे, ८ आगंतुजसे ॥१॥ मनुष्योंके मिथ्या आहार और मिथ्या विहारसे आमाशयमें रहते जो वात पित्त कफ सो आमाशयको बिगाड़ करके फिर रसको बिगाडैं औरकोठेकी अग्निकी गरमीको बाहर निकाल देहको तप्त करदेवे उसीको ज्वर कहते हैं ॥२॥ इतिमाधवकारः ॥ शरीरमें तप, तथा शरीरका भारीपना, आलस्य और सब शरीरमें हड़फल, मुखमें स्वाद न रहै, शीतका लगना, अनायास श्रममालूम हो, वीर्य बलका नाश होना, ये चिन्ह ज्वरके पूर्व होते हैं ॥ ६ ॥ जँभाई, डकार, तथा प्यासका लगना, मुखका कडुआहोना, नींदका न आना अरुचि श्वास, शरीरका रूखापन, भ्रम तथा शरीरमें बेकली. मुख सूखे, आंखसे आंसूका पडना, हिचकी आना, पेट फूलना शरीरका औरही वर्ण हो जाना, अंगका फड़कना, रोमांचका होना, शरीरमें व्यथा सूलो उलटीका आना, आंतोंका बोलना, ये लक्षण वातज्वरमें होतेहै ॥ ७ ॥

(पित्तज्वरकेलक्षण) हृत्कंठोष्ठकरांघ्रिदाहमरतिं स्फोटं तृषा संभ्रममूष्माणं श्वसनं मुखे कटुकतां मूर्च्छामतीसारकम् ॥ हृत्कंपं नयनेरुणे विकलतां शीते रुचिं शोषणं स्वेदं देहगतः करोति कुपितः पित्तज्वरोन्तर्व्यथाम्॥८॥(श्लेष्मज्वरलक्षणं)स्तैमित्यं वमनं जडत्वमलसं निष्ठीवनं गौरवं माधुर्यं वदने तनौ मलिनतां स्वेदं च रोमोद्गमम्॥कंठेघुरघुरतां च पीतनयनं निद्रां त्वचि स्निग्धतां कासं शीर्परुजंकरोति विकलं श्लेष्मज्वरोह्व्यथाम्॥९॥(वातपित्तज्वरः) भ्रमो रोमहर्षोरुचिः श्वासकासौ तृषांगेषुदाहः शिरोर्तिर्वमित्वम् ॥ विनिद्रांगपीडातिशोषोल्पमूर्च्छा ज्वरे वातपित्तोद्भवे चिह्नमेतत् ॥१०॥

अर्थ-हृदय कंठ ओंठ हाथ पांव इनमें दाह होना, इच्छाका नाश, हड फूटका होना, प्यास, भ्रम, गरमी. श्वास, कड़ुआ मुख, मूर्च्छा. दस्त, हृदयमें कंप. नेत्र लाल, देहमें बेकली शीतलताका प्यारालगना. मुखसूखे खेदका होना, अन्तःकर्णमें दुःख, ये लक्षण कुपितपित्तज्वर देहमें करताहै ॥ ८ ॥ शरीर गीलेकपडेसे पोंछे सरीखा मालूमहो उलटीका होना. शरीरका जकडजाना, आलस्य कफका थूकना, देहका भारी होना, मुख मीठा हो, देह मैला, पसीनेका आना, रोओं खडा होना कंठमें घरघर शब्द होना कुछ पीलाई लिये नेत्रहो निद्राका आना, त्वचा, चिकनाई लिये होय, खांसी, शिरमें दर्द, ये लक्षण कफज्वरके है ॥ ९ ॥ भ्रम रोमका खडाहोना, अरुचि. श्वास

खांसी, प्यास, देहमें दाह, शिरमें दर्द वमन, निद्राका न आना, देहमें पीडा, अत्यंत मुखका सूखना, मूर्च्छाका आना, ये बात पित्तज्वरके लक्षणहैं ॥ १० ॥

(वातकफज्वर) स्तैमित्यंगुरुतारुचिर्विकलता तंद्रा पिपासालसं कासोङ्गस्फुटतांवमिः श्वसनता शोथोमुखे लिप्तता ॥ स्वेदःपर्वभिंदारतिश्च जडता रोमोद्गमः शीतता वातश्लेष्मसमुद्भवस्य कथितं चिह्नं ज्वरस्यर्षिभिः ॥ ११ ॥

अर्थ–शरीर गीले कपडेसे पोछे समान मालूम पडे तथा शरीरका भारीपन अरुचि, बेकली, तंद्रा, प्यास, आलकस, खांसी, अंगोंका फडकना, श्वास, सूजन, कफसे लिहसामुख, पसीना, गांठोंमें दर्द, चैन पडे जडपना, रोमांच शीत लगना, पुराने ऋषियोंने वात कफ, ज्वरके लक्षण कहे हैं ॥ ११ ॥

(पित्तकफज्वर) तिक्तास्यौ रुचिता कफस्य वदने लेपो मुहुः शीतता तंद्रासंधिषु वेदना च हृदये दाहः पिपासा भ्रमः ॥ कास श्वासतरस्तनौ मलिनता स्वेदो वमिर्मोहता चिह्नं पित्तकफज्वरे मुनिवरैः संकीर्तितंपूर्वजैः॥१२॥(तेरहसन्निपातोंकेनाम)संधिकश्चांतकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः॥शीताङ्गस्तंद्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्च कर्णकः ॥ विख्यातो भुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवी प्रलापकः ॥ जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ॥ इतिसंग्रहीतपाठः॥ तेषां मर्यादा । संधिके वासराः सप्त चांतके दशवासराः॥रुग्दाहे विंशतिर्ज्ञेया वह्न्यष्टौ चित्तविभ्रमे ॥ पक्षमेकं तु शीतांगस्तंद्रिके पंचविंशतिः । विज्ञेयावासराश्चैव कंठकुब्जे त्रयोदश । कर्णके च त्रयो मासा भग्ननेत्रे दिनाष्टकम् । रक्तष्ठीवी दशाहानि चतुर्दशप्रलापके ॥ जिह्वके षोडशाहानि कलाभिन्याससंज्ञके । परमायुरिदं प्रोक्तं म्रियते तत्क्षणादपि ॥

अर्थ–कडुआ मुख, अरुचि, मुख कफसे लिहसा रहना, बार२जाडा गरमीका लगना, तन्द्रा, संधिमे पीडा, हृदयमें दाह, प्यास, भ्रम, खांसी, श्वासका जोर, देहमें मलिनता, स्वेद, वमन, मोह, ये लक्षण पहिले मुनीश्वरोंने पित्त कफ ज्वरके कहेहै ॥ १२ ॥ १ संधिक, २ अन्तक, ३ रुग्दाह,

४ चित्तविभ्रम, ५ शीतांग, ६ तन्द्रिक, ७ कंठकुब्ज, ८ कर्णक, ९ भुग्ननेत्र, १० रक्तष्ठीवी ११प्रलापक, १२ जिह्वक, १३अभिन्यास, ये तेरहसन्निपातहैं तेरहोंसन्निपातोंकी अवधि–संधिककी ७ दिनकी, अन्तककी, १० दिन, रुग्दाहकी २० दिन, चित्त विभ्रमकी २४ दिन, शीतांगकी १५ दिन, तंद्रिककी २५ दिन, कंठकुब्जकी१३ दिन, कर्णककी ९० दिन, भुग्ननेत्रकी ८ दिन, रक्तष्ठीवीकी १० दिन, प्रलापकके १४ दिन, जिह्वकके १६ दिन, अभिन्यासके १६ दिन कहे हैं यह सन्निपातोंकी परमावधि कही है परन्तु तत्काल भी रोगी मरजाता है ये श्लोक संगृहीत है॥

(तेरहसन्निपातमें साध्यासाध्यविचार) संधिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकः कंठकुब्जकः। जिह्वकश्चित्तविभ्रंशः षट्साध्याः सप्तमारकाः॥ (संगृहीतपाठः)

अर्थ–संधिक, तंद्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिह्वक, चित्तविभ्रंश ये ६ साध्य हैं बाकी सात असाध्य हैं॥

संधिकसंनिपातकेलक्षण।

त्रिदोषोत्थिते संधिके सन्निपाते भवेत्संधिपीडाऽस्यशोषोथशूलम्॥ भ्रमोवीर्यनिद्राविनाशोतितंद्रा पिपासोष्ठपाको रुचिर्दाहकासौ॥१३॥

अंतकसन्निपातकेलक्षण।

करोत्यंगभंगं भ्रमं वेपथुं यः शिरः कंपनं कंडुरं रोदनं च॥ प्रलापं सतापं च हिक्कामसाध्यं बुध त्वं विजानीहि तं चांतकाख्यम्॥१४

चित्तविभ्रमसंनिपातकेलक्षण।

योमोहाद्रुदति कचिद्विकलतां प्राप्नोति शोकं कचित् फूत्कारं कुरुते दधातिमदतां गीतं कचिद्गायते॥संतापं सहते मुदं वितनुते वाचं भ्रमाद्भापते तंचित्तभ्रमसन्निपातमनिशं जानीहि दुस्साधनम्॥१५॥

अर्थ–तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ जो संधिक सन्निपात तिसके ये लक्षण हैं सन्धीनमें दर्द, मुखकासूखना, शूल, भ्रमवीर्य और निद्राका नाश, तंद्रा, प्यास, ओठोंका पकना, अरुचि, दाह और खांसी॥ १३॥ अंगोंका टूटना, भ्रम, कम्प और शिरका हिलना खाज तथा रोना, वाहियातबकना, संताप, हिचकीका आना जिसमें ये लक्षण हों उसको हे वैद्य! तू असाध्य अंतक सन्निपात जान॥ १४॥ जो मोहसे रोवे, कभी विकलताको प्राप्त हो कभी शोचकरे कभी फूत्कार करे, कभी मस्तपनेको प्राप्त हो, गीतगावे, कभी संताप हो, कभी प्रसन्न होवे, कभी भ्रमसे बकने लगे, ये लक्षण जिसमेंहो उसे नहीं उपाय जिसका ऐसा चितभ्रम सन्निपात जानो॥ १५॥

रुग्दाहसन्निपातकेलक्षण ।

यः शूलं वितनोति दारुणभयं हस्तांघ्रिशैत्यं तथा जिह्वां कंटकितां भ्रमं विकलतां मोहं च कंठव्यथाम् ॥ श्वासं कासतरं निरंतरतृषां हृत्कंठयोः शोषणं संतापं श्रमरोदनं प्रलपनं जानीहि रुग्दाहकम् ॥ १६ ॥

शीतांगसन्निपातकेलक्षणम् ।

शीतत्वं विदधाति योखिलतनौ रोमोद्गमं वेपथुं श्वासं कासतमं क्वचिच्छिथिलता मूर्च्छामतीसारकम् ॥ चेष्टां क्षीणतरां क्लमं वमथुतां हिक्कां शिरश्चालनं तं शीतांगमवेहि वैद्य हरिजं मृत्योः सखायं ध्रुवम् ॥ १७ ॥

तंद्रिकसन्निपातकेलक्षण ।

कंठे कंडुतृपाऽरुचिक्लमथुताः पीडा हि कर्णद्वयोर्जिह्वाश्यामतराच कंटकयुता तंद्रातिरासो रतिः॥संतापःकफवेदनावहुतराश्वासोधिकःकासता मृत्युःस्यात्खलुतंद्रिको निगदितश्चिह्नैरमीभिःपरैः १८

अर्थ–पेटमें शूल हाथ पैर ठंढे जीभमें कांटे भ्रम वेकली बेहोसी कंठमे पीडा, श्वास, खांसी, प्यास बहुत लगे, हृदय कंठका सूखना संताप, श्रम, रुदन करना, प्रलाप, ये लक्षण रुग्दाह सन्निपातके जानना ॥ १६ ॥ जिसमें ये लक्षण मिलते हो उसको वैष्णवज्वर सीतका मित्र शीतांग सन्निपात जानना चाहिये जो सब देहको शीतल करदे रोमखडे होजाय कंप, श्वास, खांसी. अंधेरा सुस्ती कभी मूर्च्छा और दस्तकाहोना जिसकी चेष्टा मंद पडिजाय विना श्रमकेर श्रमहो, रदहिचकी, शिरका कांपना ॥ १७ ॥ कंठमें खुजलीचले, प्यास, अरुचि, ग्लानि, दोनों कानोंमें पीडा काली और कांटेयुक्त जीभ तंद्रा अतिसार अरति संताप कफसे पीडा, बहुत श्वासचले, और खांसी इन लक्षणोंसे रोगीका मारनेवाला तंद्रिक सन्निपात जानना ॥ १८ ॥

कंठकुब्जसन्निपातकेलक्षण ।

कंठग्रहं यः कुरुते हनुग्रहं मूर्च्छाप्रलापं ज्वरकंपवेदनाः ॥ मोहं च दाहं हृदये शिरोरुजं तं कंठकुब्जं प्रवदंति साधवः ॥ १९ ॥

कर्णकसन्निपातकेलक्षण ।

ग्रंथिः कर्णांतदेशे भवति बहुतरां कंठदेशेतिपीडा ग्लानिः श्वासः प्रसेको वचनशिथिलताश्लेष्मणारुद्धकंठः ॥ मूर्च्छाकंपः प्रलापो वपुषिकृशतमा वेदनोष्मा च कासः ॥ स्वंस्वं रूपं च रोगाविदधति सततं कर्णके सन्निपाते ॥ २० ॥

अर्थ–जो कंठमें पीडा करै, ठोडी जकड जावे, मूर्च्छा तथा बकना, ज्वर कंप, देहमें पीडा बेहोसी, हृदयमें दाह, शिरमें दर्द, येलक्षण कंठकुब्ज सन्निपातके महात्मा कहते हैं ॥१९॥ कर्णक सन्निपातके ये लक्षण है कानके पास गांठ बहुतसी होय कंठमें दर्द ग्लानि श्वास लारका गिरना, मंद २ बोलना, कफसे कंठका रुकना मूर्च्छा, कंप और बकना शरीर कृश तथा पीडा और गरमी और खांसी तथा अनेक रोग प्रगट हों ॥ २० ॥ इति कर्णक सन्निपातके लक्षण समाप्त हुये ॥

भुग्ननेत्रसन्निपातकेलक्षण ।

स्मृतिभ्रंशनं भुग्नदृक्सन्निपातःकरोत्यंगपीडांभ्रमंभुग्ननेत्रम्॥ ज्वरं वेपनं शून्यतां श्वासकासौ प्रलापं प्रसेकं पिपासामसाध्यः ॥२१॥

रक्तष्ठीवीसन्निपातकेलक्षण ।

छर्दिरक्तष्ठीवनं कृष्णजिह्वां कासंश्वासं मंडलं दाहमुग्रम् ॥ संज्ञानाशं तापमाध्मानतृष्णां रक्तष्ठीवी प्राणनाशं च कुर्यात् ॥ २२ ॥

प्रलापीसन्निपातकेलक्षण ।

प्रलापीरवेः पुत्रगेहं प्रयाति ज्वरस्तापपीडांगकंपप्रयासाः ॥ तृषाशोकसंज्ञाविनाशप्रवादाः शिरःकंपमोहांगदाहो विनिद्रा ॥ २३ ॥

अर्थ–बेहोसी हो अंगोमे दर्द भौर का आना नेत्रोंका बुरा होना ज्वर तथा काँपना देहमें शून्यता श्वास खांसी बकना लारका बहना प्यास ये लक्षण असाध्य भुग्ननेत्र सन्निपातके है ॥ २१ ॥ रुधिरकी उलटी करना जीभ काली हो खांसी श्वास चकत्ता पडजावे घोर दाह हो संज्ञा जाती रहे ताप ज्वर तथा पेटका फूलना तृष्णा प्यास ये लक्षण हो तो प्राणका नाश कर्त्ता रक्तष्ठीवी सन्निपात जानना ॥ २२ ॥ प्रलापी सन्निपातवाला रोगी यमलोकको जाता है और उसके ये लक्षण होतेहैं ज्वर ताप पीडा काँपना विना कारण श्रमहो प्यास शोच संज्ञा नाश बकना शिरका हिलाना बेहोसी अंगोमे दाह नींदका न आना ॥ २३ ॥

जिह्वकसन्निपातकेलक्षण ।

जिह्वा कंटकवेष्टितां शिथिलतां श्वासाधिकं मूकतां रात्रौ जागरणं तृषां बधिरतां वीर्यक्षयं क्षीणताम् ॥ हृत्पार्श्वोदरनासिकाधरगले शोथंविसंज्ञंज्वरं काये यः कुरुते रुजं बहुतरां जानीहि तं जिह्वकम् ॥ २४ ॥

अभिन्याससन्निपातकेलक्षण ।

अभिन्यासको यस्य देहे स्थितः स्याद्भवेत्तस्य मृत्युर्विनिद्रातितृष्णा ॥ ज्वरः पाददाहोङ्गकंपोतिजाड्यं भ्रमः श्वासता कासता क्षीणचेष्टा ॥ २५ ॥ ❀

अजीर्णज्वरलक्षण ।

अजीर्णज्वरो लक्षणैरष्टभिर्वा भिषक्सत्तमैर्ज्ञायतेसप्तभिर्वा॥अतीसारउद्गारऊष्मातिनिद्रा शिरोर्तिः प्रलापोहि जृम्भोदरे रुक् ॥२६॥

अर्थ—जीभ कांटन करके युक्त, तथा शिथिल, श्वासका ज्यादा चलना, गूंगापना, रातमें जागना प्यास तथा बहरापना वीर्यका नाश होना दुर्बलता हृदय पसवाडे पेट नाक ओंठ गला इनमें सूजन हो बेहोसी, ज्वर, ये लक्षण जिसकी देहमे हो उसको जिह्वकसन्निपात जानो ॥२४॥ जिसकी देहमें अभिन्यास सन्निपात हो उसके ये लक्षण है नींद आवै नहीं, अति प्यास हो, ज्वर, पैरोंमें दाह, अंगोंका कांपना, बेहोसी, भौर, श्वास, खांसी, चेष्टामंद, ये लक्षणवालेकी मौत होय ॥ २५ ॥ इति त्रयोदश सन्निपाताः ॥ * अजीर्णज्वर आठलक्षणोंसे अथवा सात लक्षणोंसे जाने सो ये है अतीसार १, डकार २, गरमी ३, अतिनिद्रा ४, शिरमे दर्द ५, खोटा बोलना६ जँभाई ७, पेटका दूखना ८ ॥ २६ ॥

※ सप्तत्रिपंचसप्ताहान् दशाहान् द्वादशादपि ॥ एकविंशदिनैः शुद्धः सन्निपाती सुजीवति॥१॥ (त्रिदोषज्वरस्यमर्य्यादा) सप्तमोद्विगुणायश्चनवम्येकादशी तथा॥एषा त्रिदोषमर्य्यादा मोक्षाय च वधाय च॥२॥पित्तकफानिलवृद्धया दशादिवसद्वादशाहसप्ताहान् ॥ हन्ति विमुंचति पुरुषं त्रिदोषजो धातुमलपाकात् ॥ ३ ॥ इति ।

※ (प्रसंगात् हारिद्रकसांनिपातस्य लक्षणं ग्रन्थान्तरात्) हारिद्रदेहनयनेत्रकरांघ्रितोये निष्ठीवनादिकपनैः हृदलक्षितोयः ॥ हारिद्रकस्सकथितः किल सन्निपातःसाध्योनचैवाभिषजा ज्वरकालरूपः ॥ ४ ॥

आमज्वरलक्षण ।

हृल्लासलालाश्रुतिवांत्यरोचकैः क्षुन्नाशनिद्राबहुमूत्रतालसैः ॥
चस्कालपवैरस्यबलक्षुतक्षयेरामज्वरो वैद्यवरैर्विलक्ष्यते ॥ २७ ॥

रक्तज्वरकेलक्षण ।

प्रलापोङ्गदाहो सुखाद्रक्तपातस्तृषास्फोटना मोहतांगप्रपीडा ॥
भ्रमोरक्तनेत्रेऽथ निद्रा विमूर्च्छा भवंतीह रक्तज्वरे लक्षणानि॥२८॥

दृष्टिज्वरलक्षण ।

मुहुर्मुहुर्जृम्भणमंगदाहं विस्फोटनं संधिषु शूलमुग्रम् ॥
स्तब्धेक्षिणी छर्दिमनाहतां यो दृष्टिज्वरः संकुरुतेविवर्णम् ॥ २९ ॥

अर्थ–खाली ओकी आवै, लार बहै, रदहो, अरुचि, भूख न लगे, नींद, मूतका ज्यादा उतरना, आलस, मुख बेरसहो, बल और भूखका घटना, तथा क्षई हो इन लक्षणोंमें वैद्योंमें चतुर सो आमज्वर जानै ॥ २७ ॥ बकना और अंगोंमें दाह, मुखसे रुधिरका गिरना, प्यास, हटकना, बेहोसी, अंगोंमें पीड़ा, भौर, लाल नेत्र, नींदका आना, मूर्च्छा ये रक्तज्वरके लक्षण हैं ॥ २८ ॥ बारंबार जंभाईका आना, शरीरमें दाह, शरीरका टूटना, सन्धि २ में दर्द, भयानकनेत्र हों वमन, अनाह, शरीरका वर्ण और तरहका हो जाय, ये दृष्टिज्वरके लक्षण हैं ॥ २९ ॥

भूतज्वरकेलक्षण ।

भूतप्रेतपिशाचदैत्यदनुजैर्जातो ज्वरो राक्षसैर्यस्तापं हृदि वेपथुं वितनुते मूर्च्छां प्रलापं मदम् ॥ जृम्भामंगविमर्दनं विकलतां हास्यं क्वचिद्रोदनं गीतं रक्तविलोचनं मनुज तं जानीहि भूतज्वरम्॥३०॥

अर्थ–भूत, प्रेत, पिशाच, दैत्य, दानव, राक्षस इनसे जो ज्वर हो उनके ये लक्षणहै शरीरतता, हृदयमें कंप, मूर्च्छा, व्यर्थबकना, मस्तहोना, जंभाईका आना, शरीरको तोड़ना, बेकली हसना, कभीरोना, कभीगीतगाना, लाल २ नेत्र ये लक्षण भूतज्वरके हैं ॥ ३० ॥

मलज्वरलक्षण ।

प्रलापोंगतापो भ्रमो हृद्विदाहस्तृषोद्गारनिष्ठीवनं घूर्णदृष्टिः ॥
सछन्मेहनं कंठजिह्वोष्ठशोषः शिरोगौरवं विड्ज्वरे लक्षणानि॥३१॥

खेदज्वरलक्षण ।

विष्टंभनं स्फोटनमंगदेशेश्वासः पिपासालसताप्रसेकः ॥ स्वेदोऽतिनिद्रामदवीर्यनाशो भवंतिखेदज्वरलक्षणानि ॥ ३२ ॥

शापज्वरकेलक्षण ।

श्यावास्यतोद्वेगवमीपिपासा विनष्टचेष्टाभ्रमतापमूर्च्छाः ॥ दुर्गंधितांगे हृदिवेपथुत्वं भवंति शापज्वरलक्षणानि ॥ ३३ ॥

अर्थ—खोटा बोलना, शरीरतंता, हृदयमे दाह, प्यासलगे, डकार आवे,बार २ थूके, टेढा देखे थोडा थोडा दस्त उतरे, कंठ जीभ ओठ इनका सूखना, शिरभारी ये मलज्वरके लक्षणहै ॥ ३१ ॥ पेटका फूलना, शरीरमें हटकल, श्वास, प्यास, आलस, लारका गिरना, पसीना, अतिनिद्रा, मस्तपना, वीर्यकानाश, ये खेदं ज्वरके लक्षणहैं ॥ ३२ ॥ मुंह,काला, उद्वेग, रद, प्यास, शरीरकीचेष्टाका नाशहोजाना, भौर, शरीर तत्ता. मूर्च्छा, देहमें बासका आना, हृदयका कापना, ये सब शापज्वरके लक्षणहैं ॥ ३३ ॥.

औपधजनितज्वरके लक्षण ।

भवेदौपधीगंधजे चिह्नमेतज्ज्वरे चित्तविभ्रंशता रक्तनेत्रे ॥ शिरोरुग्वमिर्मूर्च्छतागात्रशोपः पिपासाक्लमत्वं च निद्राविनाशः॥३४॥

भयज्वरकालक्षण ।

भयात्कस्यचिदुद्भवेद्घोररूपे ज्वरे चिह्नमेतद्भवेदंगकंपः ॥ मुखे शुष्कताभ्यंतरेत्यंतपीडा प्रलापोथचित्तभ्रमः शोकमूर्च्छा ॥ ३५ ॥

अर्थ—विपले ओपधके सूंघनेसे जो ज्वर पैदा होताहै उसके ये लक्षण होते हैं चित्तका डामाडोलहोना, लाल २ नेत्र, मथवाय उलटीका होना, मूर्छा, शरीरका सूखना, प्यास, ग्लानि, नींदका न आना, ये लक्षण ओपधजनित ज्वरके हैं ॥ ३४ ॥ जिस किसीको भयसे ज्वर पैदा हुआ हो उसके ये लक्षणहैं अंगोंका कापना, मुखका सूखना, शरीरमें बहुत पीडा, व्यर्थ बकना, चित्त, चलायमान, शोच, और मूर्च्छा ॥ ३५ ॥

कोपज्वरकेलक्षण ।

भवंतीहकोपज्वरे लक्षणानि स्फुरद्गात्रभंगं चलद्रक्तनेत्रम्॥प्रलापोथ हृल्लासकंपार्तिमूर्च्छा विवर्णः प्रसेको मुखस्तालुशोपः ॥३६॥

शस्त्रघातज्वरलक्षण ।

शस्त्रास्त्रदंडाश्मकशादिघाततो जाते ज्वरे घोरतरे हि लक्षणम् ॥ तापःपिपासाकफकंठरुद्धताशोथःप्रलापोऽरुचिरार्तिता भवेत् ३७॥

अभिचारज्वरकेलक्षण ।

ज्वरेऽभिचारसंज्ञके भवंति लक्षणानिषट् ॥ प्रलापशूलमोहता-स्तृपागकंपतारुचिः ॥ ३८ ॥

अर्थ–ये कोपज्वरके लक्षण हैं अंगोंका फड़कना, शरीरका टूटना, चलायमान लाल २ नेत्र, वाहियात बकना, खाली रहका आना, कांपना, दुःखकाहोना, मूर्च्छा, शरीरका वर्ण औरही तरहका होजाना, लारका टपकना; मुख और तालुका शोष ॥ ३६ ॥ शस्त्र कहिये तलवार और छुरी आदि, और अस्त्र कहिये अस्त्रास्त्रादि, दंड कहिये लकड़ी आदि, अश्म कहिये पत्थर, कशादि कहिये कोरडा आदि, इनके लगने से जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हों ज्वरहो, प्यासहो, कफसे कंठकारुकना, सूजन, बडबडाना, अरुचि दुःख ये लक्षण हैं ॥३७॥ अभिचारसे तथा मंत्रको उलटा जपनेसे जो ज्वरहो तथा किसीने जादू कियाहो इस ज्वरमें मुख्य ६ लक्षण होतेहैं. बडबडाना, पेटमें शूल, बेहोशी, प्यास, कांपना, शरीरका अरुचि ये ॥ ३८ ॥

कामज्वरकेलक्षण ।

रोमोद्गमः साहसहर्षजृम्भा भीतिर्विषादो मदशोकरोषाः ॥ एतानि चिह्नानि भवंति यस्य कामज्वरं तं कथयंति वैद्याः ॥ ३९ ॥

अथस्त्रीप्रसंगाज्जनित० ।

स्त्रियोत्यंतसंगाद्भवेच्चिह्नमेतज्ज्वरोग्लानिनिष्ठीवनं श्वासकासम् ॥ भवेद्वपथुर्गात्रदेशेम्बुपूरस्तृपानिर्बलत्वं च पीडा च शोथः ॥ ४० ॥

अर्थ–रोमांच, साहस, जँभाई, डरकालगना, दुःखकाहोना, मोहहो, और शोक, क्रोध, ये लक्षण जिसमें हों उसको वैद्य काम ज्वर कहते हैं ॥ ३९ ॥ जो मनुष्य बहुत स्त्रीसे मैथुन करै उससे पैदा ज्वरके ये लक्षणहैं ज्वरका होना, ग्लानि, बेरबेरमें थूकना, श्वास, खांसी, कंप, शरीरमें, पसीनाआना, प्यास, नाताकती, पीडा सूजन, ये ॥ ४० ॥

क्षीणधातुमंदाग्निजज्वरलक्षण०

धातोः क्षीणतयाथवाग्निशमनाज्जातो ज्वरोंऽश्वितया शैथिल्यं कुरुते रुचिं वितनुते धत्ते तनौ पांडुताम् ॥ सर्वांगं तुदते ददाति कृशता हर्षं परं नाशते वीर्यत्वं जयते रुतं न सहते श्वासं भ्रमं बिभ्रते४१

संततज्वरकेलक्षण ।

वसति रुधिरधातौ यो ज्वरो द्वादशाहं कचिदपि च दशाहं संततं संततोयम् ॥ प्रभवति खलुनाम्ना श्वासकासं विधत्ते ज्वरयति नरदेहं याति नाशं स पश्चात् ॥ ४२ ॥

विषमज्वरकेलक्षण ।

निरंतरं तिष्ठति सर्वदेहे सूक्ष्मो ज्वरो यो विदधातिशैत्यम् ॥ अत्युष्णतां यातिकदाचिदेवतंकष्टसाध्यं विषमं वदन्ति ॥ ४३ ॥

अर्थ-धातुके क्षीण होनेसे तथा मंदाग्निके होनेसे तथा चिंतासे जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण है. शिथिलता, अरुचि, शरीरपीडाहो, सर्वांगमें पीडाहो, तथा शरीरका कृश होना हर्षजातारहे, वीर्यकानाश, श्वास औरकाहोना ॥ ४१ ॥ जो ज्वर रुधिर धातुमें पहुंचजाय वह ज्वर १२ तथा १० दिन बराबर बनारहे उसको संततज्वर कहते हैं उसमें श्वास, खांसी, तथा सब देहका जरना बाद थोडेदिन यह ज्वर मारडालेहै ॥ ४२ ॥ जो ज्वरमंद होके सब देहमें बराबर रहे और कभी शीतलगे कभी जाडा शरीर गरमहो जाय उसको कष्टसाध्य विषमज्वर कहे हैं ॥ ४३ ॥

महेन्द्रज्वरकेलक्षण ।

अहोरात्रयोर्वाद्विकाले त्रिकाले चतुष्कालके वा प्रवृत्तिं निवृत्तिम् ॥ करोति ज्वरो यः स्वतंत्रोतिरौद्रो महेंद्रो हि नाम्ना निरुक्तो मुनीन्द्रैः॥

वेलाज्वरकेलक्षण ।

अहोरात्रयोरेकदेशे ज्वरो यः समागत्य देहे स्वरूपं विधाय ॥ नरं पीडयेन्नित्यशो निर्दयं तं विजानीहि वेलाज्वरं वैद्यराज ॥४५॥

अर्थ-जो दिनरातमें दो दफे या तीन या चारदफे आवे और उतर जावे उस स्वतंत्र घोर ज्वर का महेन्द्रनाम मुनियोंने कहाहै ॥४४॥ जो ज्वर दिन रातमें एकदफे एकअंगमें आयके फेर सब शरीरमें फैलकर शरीरको नित्य बहुतदुःखदे उसको वैद्य वेलाज्वर जानें ॥ ४५ ॥

एकांतरज्वरकालक्षण ।

दिनेकांतरे यो विधायोग्ररूपं नराणां शरीरे प्रपीडेन्नितातम् ॥ दिनेकं विमुच्याथ धातूश्च शेते तमेकांतरं त्वं विजानीहि वैद्य ॥ ४६ ॥

एकान्तरज्वरलक्षण ।

एकांतरो ज्वरो घोरो द्विविधः परिकीर्तितः ॥ शीतेनैकः समायाति तापे नायाति यो परः ॥ ४७ ॥

त्र्याहिकज्वरकेलक्षण ।

दिनद्वयं तु विश्राम्य मेदोमज्जास्थिधातुषु ॥ यः कुप्यति तृतीयेऽह्नि त्र्याहिकं तं विदुर्बुधाः ॥ ४८ ॥

अर्थ–उसको हे वैद्य तू एकान्तरज्वर जान जो एकदिनमें घोररूप होके मनुष्योंके शरीरको दुःखदे और एक दिन छोडकर आवै और धातूनको सुखायडाले ॥ ४६ ॥ इकतरा घोरज्वर दो प्रकारकाहै एक शीत लगकर आवै और एक गरमीसे आवै ॥ ४७ ॥ जो ज्वर मेदा मज्जा हड्डीमें पहुंच जाताहै और दोदिन बीचमें देकर तीसरे दिन आवै उसको त्र्याहिक अर्थात् तिजारी पण्डितलोग कहते हैं ॥ ४८ ॥

चातुर्थिकादिज्वरकेलक्षण ।

एवं चातुर्थिको ज्ञेयः पाक्षिको मासिकस्तथा ॥ वार्षिको मुनिभिः प्रोक्तो वर्षमायाति नाऽन्यथा ॥ ४९ ॥

देवकोपजनितज्वरलक्षण ।

वापीकूपतडागगोपुरमठप्राकारवेदिप्रपादेवांगोपवनानिदेवसदनं छिन्दन्ति ये मंडपम् ॥ साधुब्राह्मणयोगिनां पितृगवां पीडां प्रकुर्वन्तिये तेषा देववरप्रकोपजनितो घोरज्वरो जायते ॥ ५० ॥

एकांगज्वरलक्षण ।

प्राणिनामेकमंगं यो ज्वरो रुजयति ध्रुवम् ॥ तस्यांगस्य च यन्नाम तन्नाम्ना ज्वर उच्यते ॥ ५१ ॥

अर्थ–ऐसे ही चातुर्थिकज्वर जाने तथा पाक्षिक अर्थात् जो पंद्रहवें दिन आवे,तथा मासिक जो महीनामें आवे, तथा वार्षिक जो वर्षदिनमें आवे, बीच नहीं आवे ये मुनिने कहाहै ॥ ४९ ॥ जो मनुष्य बावडी, कुआ, तालाव, गोपुर, मढी, प्राकार, यज्ञकीवेदी, प्याऊ, देवप्रतिमा; बाग, मंदिर मंडप, इनको तोडडाले तथा साधु,ब्राह्मण,योगी, माता, पिता,गऊ,इनको दुःखदेतेहैं तिनको ईश्वरके कोपसे घोर ज्वर पैदा होताहै ॥ ५० ॥ मनुष्योंके कोईसे एकअंगमें ज्वरचढे और उस अंगका जो नामहो वह,ज्वर उसी नामकरके कहाजाता है ॥ ५१ ॥

ज्वरस्तु यस्य संस्पर्शाद्गंधाद्वा दर्शनादपि ॥ ज्वरो भवति तन्नाम्ना इति रोगविदो विदुः ॥ ५२ ॥

अंतकज्वरलक्षण ।

श्वासोर्मी वहते गलं कफचयैः संरुध्यते यो मुखात्फेनं संवमते शिरां विधमते कासं विधत्ते रतिम्॥आध्मानं कुरुते च मोहमरुचिं हिक्कामतीसारकं तं विद्याज्ज्वरमंतकं प्रियसखं मृत्योरसाध्यं भृशम् ॥ ५३ ॥

शोकज्वरकेलक्षण ।

अर्थाऽपत्यकलत्रभ्रातृसुहृदां शोकोद्भवो यो ज्वरः शैथिल्यं कुरुते नरं विमनसं श्वासं मुहुर्वेदनाम् ॥ स्तैमित्यं विकलं भ्रमं बधिःरता मूर्च्छां बलौजःक्षयं प्रस्वेदं बहुमोहतामरुचिता निद्रां तनौ पांडुताम् ॥ ५४ ॥

त्वचामेंप्राप्तहुएवातज्वरलक्षण ।

कुर्यात्त्वचिस्थः पवनज्वरोनिशं रोमोद्गमं रौक्ष्यत्वगाक्षिमीलनम् ॥ जृम्भांगमर्द्दश्रवणाक्षिवेदनां विण्मूत्रबंधं मुखमिष्टतारती॥ ५५ ॥

अर्थ–और जो ज्वर किसीवस्तुके छूनेसे अथवा सूंघनेसे वा देखनेसे होय वह उसी नामसे विख्यात होताहै ऐसे रोगके जाननेवाले कहते हैं ॥ ५२ ॥ श्वासका ज्यादा चलना, गला कफके समूहसे रुकाहो, और जो मुखसे झाग गेरे, नाडीका जोरसे चलना, खांसी, इच्छाका नाश, पेटका फूलना, बेहोसी, और अरुचि, हिचकी, दस्तका होना ये लक्षण, मृत्युका प्यारा (मित्र) कालज्वरका जानना ये असाध्यहे ॥५३॥ द्रव्य पुत्रादि स्त्री भैया सुहृद इनके नष्टहोनेके शोकसे जो ज्वर होताहै उसके ये लक्षण हैं शरीरमें शिथिलता, मनका बिगडजाना, श्वास, वेर २ मे दुःखका होना, शरीर गीलेकपडेसे पोंछासाहो, बेकली, बहिरापना, मूर्च्छा, तथा बल तेज इनका नाश होना, पसीना बहुतहो, बेहोसी, अरुचि, नीद, शरीरपीला ॥ ५४ ॥ वातज्वर त्वचामें होतो ये लक्षण हों, रोमाच तथा त्वचाका रूखापन, आंखोंका मीचना, जंभाई अंगोंका टूटना, कान आंखमें दर्द दस्त पेसाबका बंदहोना, मुख, मीठा, तथा अरति ॥ ५५ ॥

चर्मगतपित्तज्वरलक्षण ।

रक्तत्वचंदाहमतीवतृष्णामास्येकटुत्वं परिदेहशोषम् ॥ ऊष्माणमार्तिंबहुशीतलेच्छां पित्तज्वरश्चर्मगतः करोति ॥ ५६ ॥

चर्मगतकफज्वरलक्षण ।

लालामुखे गौरवमालसत्वं निष्ठीवनं शीतवपुः शिरोर्तिम् ॥ निद्रा च मूत्राधिकतां प्रलापं श्लेष्मज्वरश्चर्मगतः करोति ॥ ५७ ॥

रसगतज्वरलक्षण ।

पिपासाशिरोर्तिर्वमिः शूलमुग्रं प्रलापांगकंपो रुचिर्वैमनस्यम् ॥ वपुः स्वेदरोमांचितं कंठदाहो रसस्थो ज्वरो लक्षणैर्ज्ञायतेज्ञैः॥५८॥

रुधिरगतज्वरलक्षण ।

ज्वरःशोणितस्थो भ्रमं देहदाहं सरक्तं च निष्ठीवनं ताम्रनेत्रम् ॥ शिरःपीडनं शोषमूष्माणमार्तिं पिपासामरो चं करोतीति मूर्च्छाम्५९

अर्थ—लालत्वचा, दाह, अत्यन्त प्यास, मुखकडुवा, शरीरका सूखना, गरमी मालूम हो घवराहट, शीतलवस्तुकीइच्छा ये लक्षण पित्तज्वर त्वचामें होय तो होते हैं ॥ ५६ ॥ मुखसे लारका बहना शरीर भारी; आलस, कफका थूंकना, देह शीतल, मथवाय, निद्रा, पेशाबकाज्यादा गिरना, बड़बड़ाना, ये लक्षण कफज्वर चर्ममें पहुंचता है तब होते हैं ॥ ५७ ॥ प्यास, मथवाय, वमन, दर्द, बड़बड़ाना, अंगोंमें कंपकंपी, अरुचि, मनका बिगडना, शरीरमें रोमांच, तथा पसीना, कंठमें दाह, ये लक्षणोंसे जानों कि इसके रसमें ज्वर पहुंच गया है ॥५८॥ जो ज्वर रुधिरमें पहुंच जाय उसके ये लक्षण हैं भ्रम, देहमें दाह, रुधिरमिलाथूकना, तांबेसरीखेनेत्रलाल, शिरमें दर्द, शोष, गरमी घबराहट, प्यास, अरुचि, और मूर्च्छा ॥ ५९ ॥

मांसगतज्वरलक्षण ।

भवंति ज्वरे मांसगे लक्षणानि तमोष्मांगमर्दो भ्रमो मूत्रकृच्छ्रः ॥ वपुः स्वेदमभ्यंतरे तीव्रदाहस्तृषावेदना छर्दिरार्तिः प्रलापः ॥ ६० ॥

मेदगतज्वरलक्षण ।

भवंति ज्वरे मेदगे लक्षणानि शरीरातिदुर्गंधिता दंतपीडा ॥ मुहुर्मूत्रता वह्निनाशः कृशत्वं विषादोल्पसारो रुचिः श्वासकासौ ॥६१॥

अस्थिगतज्वरलक्षण ।

ज्वरेऽस्थिप्रदेशे गते लक्षणानि भवंत्यस्थिविस्फोटनं पर्वभेदः ॥ शरीरस्य विक्षेपणं देहदाहस्तुपोष्माविलापोभ्रमः स्वेदतापौ ॥६२॥

अर्थ—मांसमें जब ज्वरपहुंच जाता है उसके ये लक्षण होते हैं अंधेरा आना, गरमीका लगना, शरीरका टुटना, और, पेशावका रुक २ के गिरना शरीरमें पसीना, हृदयमें ज्यादादाह, प्यास, बेकली, रद्द, दुःख, बडबडाना ॥ ६० ॥ मेदामें ज्वर पहुंच जाता है उसके ये लक्षण हैं शरीरमें बासआना, दांतोंमें दर्द, वेर २ मूतना, जठराग्निका नाश, देहकृश, दुःख, बलका घटना, अरुचि, श्वास, और खांसी ॥ ६१ ॥ जिसका ज्वर हड्डीमें पहुंच जाता है उसके ये लक्षण हैं हडफूटनहो, संधि २ में पीडा, देहको इधर उधर पटकना, तथा देहमें दाह, प्यास, गरमी, विलाप, भ्रम, पसीना, तथा ज्वर ॥ ६२ ॥

मज्जागतज्वरलक्षण ।

वहिः शीतताभ्यंतरेऽत्यंतदाहः तमः कंपनं मर्मभेदः प्रलापः॥ तृषा श्वासहिकार्त्तयो मूत्ररोधो भवंति ज्वरे मज्जगे लक्षणानि ॥६३॥

शुक्रगतज्वरलक्षण ।

ज्वरः शुक्रदेशे स्थितो मृत्युदूतस्तदाज्ञायते सप्तचिह्नैर्भिषग्भिः॥ भ्रमो वीर्यनाशस्त्वचाहीनशोफो वलोजः क्षयः श्वासकासौ क्लमत्वम् ॥ ६४ ॥

धातुपाकीज्वरलक्षण ।

निद्रावलोजोरुचिवीर्यनाशो हृद्वेदनागौरवतात्पचेष्टा ॥ विष्टंभता यस्य किलारतिः स्यात्सधातुपाकी मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ६५ ॥

अर्थ—बाहरसे जाडा लगे, भीतर अत्यंत दाहहो, अंधेरा आना, कांपना, मर्म स्थानोंमें दर्द, बडबडाना, प्यास, श्वास, हिचकी, बेकली, मूतकारुकना, ये लक्षण मेदामें ज्वर पहुंच जाताहै तब होतेहैं ॥ ६३ ॥ जब मौतकादूत ज्वर शुक्रयाने वीर्य्यमें पहुचजाय उसको वैद्य सात लक्षणोंसे जाने भौर, वीर्य्यका नाश, त्वचाका हीनहोना, वल, तेज, इनका नाश, श्वास, खासी, ग्लानि ॥ ६४ ॥ नींद बल, तेज, इच्छा, वीर्य, इनका नाश, हृदयमें दुःख, शरीरका भारीपना

अल्पचेष्टा, दस्तकारुकना, मनका न लगना ये लक्षण जिसमें हों उसको धातुपाक मुनियोंने कहाहै ॥ ६५ ॥

तथा च ।

काये धातुविपाकिनां परकरस्पर्शोऽपि वज्रायते रात्रिः कल्पशतायतेल्पतरभो दीपोऽपि दावायते ॥ शब्दो वाणसमायते मृदुगतिवातस्त्रिशूलायते यूकासूचिकुलायते तनुतमं वासोऽपि भारायते ॥ ६६ ॥

ज्वरस्यदशोपद्रवाः ।

ज्वरस्य प्रसिद्धादशोपद्रवाः स्युस्तृषा विड्ग्रहश्छर्द्यतीसारहिक्काः ॥ शरीरस्य भेदोऽरुचिः श्वासकासौ समूर्च्छा हि भागद्वयं ते प्रदद्युः ॥ ६७ ॥

अर्थ–धातुपाकी मनुष्यके देहमें अन्य मनुष्यके हाथका स्पर्श वज्रके समान मालूमपडे, अल्परोशनीवालाभी जो दीपक सोभी ज्वालाके समान मालूमहो, बोलना बाणके समानलगे, मन्दगति चलनेवाला पवन त्रिशूलके समान लगे, जुआं खटमल आदिका काटना सूईके समान लगे, छोटाभी वस्त्र शरीरपर भारी लगे ॥ ६६ ॥ ज्वरके उपद्रव दश प्रसिद्धहैं प्यास, दस्तका बंद होना, रद्द, अतीसार, हिचकी, शरीरका टूटना, अरुचि, श्वास, खाँसी और मूर्छा ॥ ६७ ॥

शरीरस्य बाह्ये यदा श्लेष्मवातौ भवेतां तदा शीतलं बाह्यदेशम् ॥ यदाभ्यंतरेऽभ्यंतरे शीतलत्वं भवेद्यत्र पित्तं विदाहोऽपि तत्र ॥६८॥ यस्मिन्नंगे वायुर्याति तस्मिन्नंगे पीडां कुर्यात् ॥ पित्तं दाहं श्लेष्माशीतं सर्वान् दोषान् सर्वे कुर्युः ॥ ६९ ॥ अंतर्दाहः प्रलापः श्वसनमातितृषानिग्रहो दोषवर्चः स्वेदः संध्यस्थिशूलं भ्रमविकलतनुः संधिदेशेषु पीडाम् ॥ अंतर्वेगस्य चिह्नं निगदितमपरैर्वैद्यराजैर्ज्वरस्य दाहादीनां लघुत्वं यदि भवति बहिर्वेगरोगस्य चिह्नम् ॥ ७० ॥

अर्थ–यदि वात कफ शरीरके बाहर होवे तो बाहरका सब भाग शीतरहे, और जो वातकफ शरीरके भीतरहो तो भीतरही शीतलता रहे, और पित्त जिस जगह होय तो दाहभी उसी जगह जाने ॥ ६८ ॥ जिस अंगमें वायु याने वादी हो उसी अंगमें दर्दहो और जिसे अंगमें पित्त होय उसी अंगमें दाह होय और जिस अंगमें कफ होय उसी अंगमें शीतलता होय और जिस जगहपर जितने दोषहों उतनेही रोगोंको पैदा करे है दो होय तो दो, और तीन होय तो तीन, और एक होयतो एक ॥ ६९ ॥ शरीरके भीतर दाह हो, वाहियात बकना, श्वास, अत्यन्तप्यासका रुकना, दोषोंका बढाना, पसीना, संधियोंमें तथा हड्डियोंमें शूलका चलना, और ॥ ७० ॥

असाध्यलक्षण ।

भवेद्यस्य दुर्गंधताश्वासवाहे तथांगप्रदेशेतिकंपोविवर्णः ॥ बहिः शीतताभ्यंतरेत्यंतदाहः सरोगी रवेः पुत्रगेहं प्रयाति ॥ ७१ ॥ कृशः पिच्छलांगो महाश्वासवाहो भ्रमो हृष्टरोमारुणाक्षोंगकंपः॥ तमो रात्रिदाहो दिवाशीततार्तिः स रोगी न जीवेत्कदाचित्सुधाभिः ॥ ७२ ॥ जिह्वा श्यामतराथ कंटकयुता रात्रौ दिने जागरं श्वासो निर्गतलोचने शिथिलता नासामुखे शुष्कता ॥ यस्यांगे परिमंडलानि बहुशो मूर्छा प्रलापस्तमः कासो रुद्धगलो गदी स गदितोऽसाध्यो भिषग्भिः परैः ॥ ७३ ॥

अर्थ–ऐसा रोगी रविका पुत्र जो यमराज ताके घर जाताहै कैसा कि, जिसके श्वास निकसनेमें वास आवे, तथा शरीरमें अत्यन्त कँपकँपी, शरीरका विवर्ण, बाहरसे शीतलता, और भीतर अत्यन्त दाह ॥ ७१ ॥ कृश, पिच्छलदेह, बडी २ श्वासकाचलना, भ्रम, हृष्टरोम, लालनेत्र, अंगसे कंप, अँधेरेका आना, रातमें दाह होना, दिनमें जाडा लगना, तथा दुःख, ऐसा रोगी अमृत करके भी नहीं जीवे ॥ ७२ ॥ जीभ जिसकी काली और काँटेसे व्याप्त, दिनरात जागना, श्वासका चलना, नेत्रोंमें सुस्ती, नाक मुख सूखना, जाके देहमें रुधिरके चकता पडगये होयँ, मूर्च्छा, बडबडाना, अंधेरा आना, खांसीसे गलेका रुकना, ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ॥ ७३ ॥

भवेद्यस्य नेत्राश्रुपातोङ्गहीनो मुखान्नासिकायाः पतेद्रक्तधारा ॥ मुखं कुंकुमाभं गले कर्णमूलं सरोगी न जीवेत्कदाचित्प्रयत्नैः ॥७४॥

कृशस्थूलता स्थूलतायाः कृशत्वं स्फुटन्नेत्रगोलं स्वभावोऽन्यथा स्यात् ॥ शरीरार्द्धशूलं त्वचाहीनशोफो गमिष्यन्सरोगी यमस्यालयं वै॥७५॥गदी जिह्वया यो रसं वेत्ति नैव श्रुतिभ्यां न शब्दं न नेत्रेण रूपम् ॥ त्वचास्पर्शमुग्रं नसा नैव गंधं स रोगी न जीवेत्स हस्त्रै रुपायैः ॥ ७६ ॥

अर्थ–नेत्रोंसे आंशू गिरे, शून्य देह, मुख नाकसे लोहूका गिरना, मुंह जिसका लाल, गलेमें कर्णमूल रोग हो, वह रोगी कदाचित् यतनोंसे न जीवे॥७४॥कृश तो मोटा और मोटा कृश और नेत्रोंके गोल फटेसे माळूम हो स्वभाव पलट जावे, आधे शरीरमें शूल चले, त्वचाहीन लिङ्गेन्द्री हो, वह रोगी यमराजके घर जायगा ॥७५॥ जिस रोगीको जीभसे स्वाद न माळूम हो, और कानोंसे शब्द न सुने, और नेत्रोंसे जिसे दीखे नहीं, त्वचामें स्पर्श न माळूम हो, नाकसे गंध न माळूम हो, ऐसा रोगी हजार उपाय करने परभी नहीं बचैगा ॥ ७६ ॥

भवेद्यस्य बाह्यांतरे शीतगात्रं न जीवेद्गदी चंडरश्मेः सुताभ्याम् ॥ प्रलापं शिरश्चालनं यः करोति सुषेणादिवैद्यैरसाध्योनिरुक्तः॥७७॥ गतायुर्मनुष्यो न पश्येत्स्वजिह्वां ध्रुवं नासिकाग्रं वशिष्ठस्य भार्याम् ॥ स्वकीयां च छायां विशीर्षां सरंध्रां भृशं याति नाशं नरोयोनुपश्येत् ॥ ७८ ॥ स्वरो यस्य हीनो गुदा यस्य भ्रष्टा शरीरे कृशत्वं बलौजोविहीनः ॥ निमग्नेक्षिणी संभ्रमः श्वासकासौ स रोगीयमस्यालये याति शीघ्रम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–जिसका बाहर भीतर शीतल शरीर हो, वह रोगी चंडरश्मिजो सूर्य्य तिसके पुत्र जे अश्विनी कुमार तिन करके न जीवे तथा बडबडाना शिरका इधर उधर पटकना, जो रोगी करे वह सुषेणजादि वैद्यों करके असाध्य कहा है ॥ ७७ ॥ मरनेवाला मनुष्य अपनी जीभ ध्रुवका तारा नासिकाका अग्रभाग अरुंधती इनको नहीं देखे, तथा अपनी छायाके मस्तक नहीं देखे, तथा अपनी छायामें छेद दीखे, वह रोगी निश्चय मरे ॥ ७८ ॥ स्वर जिस रोगीका मंदहो गुदा जिसकी भ्रष्ट, शरीर कृश, तथा निर्बल और तेजरहित नेत्र, जिसके भीतर घुसजाय, संभ्रम, श्वास, खाँसी ऐसा रोगी यमपुरको जल्दी जावे ॥ ७९ ॥

रुदतिहसतिगीतंगीयतेकापिकालेश्वसितिमुदतिचित्तेभाषतेदुर्वचांसि ॥प्रलपतिपरिदेवंवादते नृत्यतेयोवहतिवहुलतापंयास्यतेमृत्युवक्रे ॥ ८० ॥

अथ रोगमुक्तस्यलक्षणम् ।

विमुक्तरोगस्य नरस्य लक्षणं विड्बंधमोक्षौ मनसि प्रसन्नता ॥ देहे लघुत्वं रसनातिकोमला स्वल्पा तृपेच्छा रसभोजने भवेत् ॥८१॥ उरसि शिरसि कंडू रात्रिनिद्रांत्रगुंजा भवति विशदचेतः स्वल्पतृष्णांगरौक्ष्यम् ॥ मुखकरणविपाकः स्वेदयुक्तं शरीरं कृमिमलपरिपूर्णं रोगमुक्तस्य चिह्नम् ॥ ८२ ॥

अर्थ–रोवै, हँसे, कभी गीतगावै, स्वास ले, कभी चित्तमें प्रसन्न हो, कभी खोटा बोलै, बडबडावै, कभी वेदनाहो कभी ताली बजावे, कभी उठकर नाचने लगे, और ज्वर बडे जोरसे हो वह रोगी निश्चय मौतका प्राप्त होवै ॥ ८० ॥ नीरोगी रोगहीन मनुष्यके ये लक्षण हैं दस्त खुलकर हो मन प्रसन्न, हलका शरीर, जीभकोमल, प्यास कम, रसभोजनमें, इच्छाहो ॥ ८१ ॥ हृदयमें और माथेमें खुजालचले, रातमें अच्छी तरह नींद आवे, आंतोंका बोलना चित्त प्रसन्न अल्पप्यास शरीररूखा, मुख और कानका पकना, पसीनेका आना, मलकीडोंसे परिपूर्ण, ये रोग दूर हुयेके लक्षण हैं ॥ ८२ ॥

शीतंगुदंयस्यशुभाचदृष्टिश्चैतन्यकायःकफहीनकंठम् ॥ स्वल्पांगतापो रसनातिशुद्धा शीर्षे लघुत्वं स रुजा विमुक्तः ॥८३॥ तारुण्यं विदधातिपट्सु दिवसेष्वाद्येपु घोरज्वरस्तस्मिन्नौपधमुत्कटं गदहरोदद्यान्नकाले क्वचित् ॥ दोपोपद्रवसंयुतेतितरुणे देयं झटित्यौपधं वार्धक्यं दिनपंचकेपु पुरुतो जीर्णज्वरोऽतः परम् ॥ ८४ ॥

ज्वराणांस्वरूपाणि ।

वीभत्सस्त्रिशिराज्वरोथ कपिलो भस्मप्रहारस्त्रिपात् पिंगाक्षोथ महोदरोऽथ परतो रौद्रो ज्वलद्विग्रहः॥ शंभोःश्वाससमद्भवाभयक-

रा दक्षक्रतोध्वंसकाः घोराघर्घरनादिनो मुनिवरैः प्रोक्ता ज्वरास्तेऽष्टधा ॥ ८५ ॥

अर्थ-शीतल तो गुदाहो, शुभजिसकीदृष्टि, शरीरमें चैतन्यता, कफरहितकंठ, देहमें मदगरमी, जीभ शुद्ध; शिरहलकाय ये लक्षण गतरोगके हैं॥८३॥आदिके छः दिनमें तो घोर ज्वर तरुण होताहै, तिसमें करडी रोगहर्त्ता, दवाई कभी न दे, और कदाचित् तरुण ज्वरमें दोषोंका उपद्रवहो तो जल्दी दवाई देवे तो छः दिनसे परे पांचदिनतक ज्वरको बूढा कहतेहैं इस उपरांत अर्थात् ग्यारहदिन उपरांत जीर्णज्वर कहाताहै॥८४॥रुद्रके श्वाससे पैदा हुऐ भयके देनेहारे दक्षप्रजापतिके यज्ञको बिगाडनेवाले घोर घर्र घर्र नादके कर्त्ता ज्वर मुनीश्वरोंने आठतरहके कहेहैं सो लिखतेहैं १ वीभत्स, २ त्रिशिरा, ३ कपिल, ४ भस्मप्रहारी, ५ त्रिपात, ६ पिंगाक्ष, ७ महोदर, ८ ज्वलविग्रह ये ॥ ८५॥

वीभत्सज्वरस्वरूपमाह ।

वीभत्सोरुधिरारुणांबरवृतो मुण्डास्थिमालाधरो रक्ताक्षः कृमिसंकुलस्त्रिनयनो दुर्गंधिपूर्णोनिशम् ॥ नग्नो रुद्रसमुद्भवोतिवलवान्कोपो जगद्घातकः कृष्णांगो मलिनो मदान्धदमनः पूष्णोद्विजध्वंसकः ॥ ८६ ॥

अथत्रिशिराज्वरस्यलक्षणम् ।

अभूद्दक्षविध्वंसरुद्रप्रकोपात् त्रिशीर्षस्त्रिपान्नंदनेत्रोतिकायः ॥ चलज्जिह्वया सृक्किणीलेलिहानो वृहत्तालुजंघोरुणाक्षोतिक्रोधी॥८७॥
अभूद्रुद्रकोपाज्ज्वरः कापिलाख्यो मुखांगारपुंजोद्गिरन्दीर्घकायः ॥ मदाघूर्णिताक्षः स्फुरत्ताम्रकेशो महामेघगर्जो मनोहर्षहर्त्ता ॥८८॥

अर्थ-रुधिरसे रँगे हुये वस्त्रोंको पहिरे, मुण्ड और हड्डियोंकी मालाका धारणकरने वाला, लाल२ नेत्र, कृमिसे जिसकी देह व्याप्त, तीन नेत्र वासाजिसकी देहमें सदाआतीहै, नंगा, रुद्रसे पैदा हुआ अतिबली कोपवान् जगत्का घातक, कालेरंगका, मलिन, मस्तोंको सीधा करनेवाला, पूषादेवताके दांतोंका तोडनेवाले ऐसा वीभत्स ज्वर है॥८६॥श्रीमहादेवके कोपसे तीनमाथेका त्रिशिरा नाम ज्वर दक्षका मारनेवाला, हुआ, तीन जिसके पांव, नवनेत्र, अत्यन्तलंबी : चलायमान छुरासी जीभसे ओठोंको चाटता, वडे ताल वृक्षके समान जंघा, लाललालनेत्र, अत्यन्तक्रोधी ॥ ८७ ॥ रुद्रभग-

वान्‌के कोपमें एक कपिलनामक विख्यात ज्वर पैदा हुआ, मुखमेंसे अंगारोंकी उलटी करता, अतिलंबा, मदमें चलायमान नेत्रहैं जिसके, प्रकाशमानतांबेके समान वाल हैं, जिसके, घोर मेघकीसीगर्जना करनेवाला मनके हर्षका दूर करने हारा ॥ ८८ ॥

भस्मविक्षेपकज्वरलक्षणम् ।

अभूद्भस्मविक्षेपको रुद्रकोपात् महाट्टाट्टहासो मुहूर्जृम्भमाणः ॥ चलत्सप्तजिह्वःकरालोग्रदंष्ट्रःस्फुरत्तप्तताम्रारुणः श्मश्रुकेशः ॥८९॥ त्रिपाद्रुद्रकोपाद्बभूवारुणाक्षो भृगोः श्मश्रुविध्वंसकः स्तब्धकर्णः॥ ज्वरो दीर्घकायो मुहुः श्वासकर्त्ता रणे नृत्यमानोंगदाही तृषार्त्तः ॥ ९० ॥

त्रिपादज्वरस्यस्वरूपम् ।

अभूद्वीरभद्रेश्वरादुल्कटास्यो ज्वरः पिंगनेत्रोल्पजंघोग्निवर्णः॥तृषार्तोद्विजिह्वो नृसिंहोद्वितीयश्चलत्तीव्रकेशः कृशः शुष्कमांसः॥ ९१ ॥

अर्थ–श्रीरुद्रके कोपसे एक भस्मविक्षेपक ज्वर पैदाहुआ महान् अट्टहासकाकरने वाला,वेर२में जंभाई लेता, चलायमान, सातछुरी सी जीभहै,भयानक कीलासी दाढ, प्रकाशमान तपाये तांबेके समानहै डाढी और बाल जिसके ॥ ८९ ॥ श्रीरुद्रके कोपसे एक त्रिपादनामक ज्वर पैदा हुआ तीनपैर लालनेत्रवाला, और भृगुकी डाढीका उखाडनेवाला, खडे कान जिसके बडी देह जिसकी वारवार श्वासका कर्त्ता, संग्राममें नाचनेवाला, शरीरमें दाहका तथा प्यासका कर्त्ता ॥९०॥ वीरभद्र गणसे एक पिंगाक्षनामक ज्वर पैदाभया बडेमुख, छोटी जांघ, अग्निसरीखा वर्ण, प्याससे दुःखी, दोजीभका मानो दूसरा नृसिंहहीहै चलायमान तीखेबाल कृश सुखाहुआ शरीरका मांस जिसका ॥ ९१ ॥

महोदरज्वरस्यस्वरूपम् ।

बभूवातिदीर्घोदरोलंबकर्णो ज्वलदग्निरूपश्चलद्रक्तनेत्रः ॥ तृषाश्वासजृम्भान्वितांगप्रमर्दो भटेशोज्वरोरक्तवर्णः प्रमत्तः ॥ ९२ ॥

पिंगाक्षकास्वरूप ।

ज्वलद्विग्रहोमुक्तकेशश्चलद्भ्रूस्त्रिशूलासिहस्तोभुजंगेशपाशः॥ ज्वरेशोतिवीर्योहरश्वासजातः कृशः शुष्कमांसोवलीभैरवेशः ॥९३॥

कफातिसारकेलक्षण ।

सकष्टंगुदातःपुरीषप्रवाहश्चलत्फेनिलोमेदुरोदुष्टगंधिः ॥ हरिच्छ्वेतकृष्णाकृतिःकष्टसाध्योभवेच्चिह्नमेतत्कफस्यातिसारे ॥ ३ ॥

अर्थ–तृषा, ग्लानि, अत्यन्त हृदयमें, पेटमें, गुदामें, घोरदर्द, तथा दाह, थोडा २ मलनिकसे सब न निकसे, भीतरदाहहो, श्वास, अरुचि, देहमें बेकली, मुख, नाक इनका अत्यन्त सूखना, ये लक्षण वातातिसारके पहले ऋषि तथा वैद्योंने कहेहैं ॥ १ ॥ दस्ताजिस रोगीका चित्र विचित्ररंगका निकसे तथा सहतके रंगका वा वसाके रंगका निकसे और दुर्गंधयुक्तहो वारवारमें तत्ता जावे कंप तथा संतापके साथ और शूल दाह ये गुदाके द्वार पर हों तथा हृदय नाक मुख इनमें शोषहो प्यास और अनायासश्रमहो ये लक्षण ऋषिनमें श्रेष्ठ अत्रि और भरद्वाजादिकोंने पित्तातिसारके कहेहैं ॥२॥ जिसके दस्तकाप्रवाह गुदासे बडेदुःखसे जावे जिसमे झागहो चिकनाहो दुष्टगंधहो हरा श्वेत काला वर्णहो यह कष्ट साध्य कफातिसारके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

सन्निपातातिसारलक्षण ।

अतीसारेसारे कफपवनपित्तप्रजनिते गुदे पार्श्वे कुक्षौ जठरहृदये शूलमरुचिः ॥ मुखे कंठे शोषो भवति सततं छर्दिररतिस्तृषा-कासः श्वासो वपुषि परिशोफोऽङ्गदहनम् ॥ ४ ॥

रक्तातिसारकेलक्षण ।

वारंवारं पुरीषं भवति सरुधिरं कंठताल्वोष्ठशोषो बस्तौ पादे प्रपीडा हृदि जठरगुदे पार्श्वदेशेषुशूलम् ॥ ग्लानिः काये कृशत्वं परिगलिततनुर्निर्बलत्वं शरीरे रक्तातीसारचिह्नं प्रवरमुनिजनैः प्रोक्तमेतन्नितांतम् ॥ ५ ॥

आमातिसारकेलक्षण ।

आमं स्वल्पं पुरीषं सितरुधिरनिभं पीतवर्णं सकष्टं वारंवार प्रतप्तं प्रचलति गुदतः पूयदुर्गंधियुक्तम् ॥ स्निग्धं शूलं गुदाग्रे प्रभवति परितः फेनिलं पिच्छिलं वा आमातीसारचिह्नं मुनिवरवचनात्कीर्तितं हंसराजैः ॥ ६ ॥

अर्थ–वात पित्त कफसे पैदा हुआ घोर अतिसार उसमें ये लक्षण होते हैं-कि गुदा, पीठ, कूख, पेट, हृदय इनमें शूलका चलना, अरुचि मुख कंठका सूखना, रद्द, तथा मनका न लगना, प्यास खांसी, श्वास, शरीरमें सूजन, शरीरका दहन ॥ ४ ॥ वारंवार दस्त रुधिर मिलाहुआहो कंठ तालु ओठ इनका सूखना मूत्रस्थान तथा पैरोंमें पीडा हृदयमें पेटमें गुदामें पीठमें शूल तथा ग्लानि शरीरका कृश तथा गलना तथा निर्बलहोना ये लक्षण रक्तातिसारके मुनीश्वरोंने निश्चय करके कहे हैं ॥ ५ ॥ आममिला थोडा २ दस्तहो श्वेत तथा रुधिरके समान तथा पीला वर्ण साथ कष्टके दस्तहो वारंवार तत्ता गुदासे रांध दुर्गंध युक्त चिकना, गुदाग्रमें पीडा, तथा झाग युक्त और गाढ, ये लक्षण आमातिसारके मुनीश्वरोंके वचनसे हंसराजने कहे हैं ॥ ६ ॥

अतिसारकाअसाध्यलक्षण ।

अतीसारिणं तं त्यजेच्छीतगात्रं तृषाशोथशूलान्वितं श्वासयुक्तम् ॥
ज्वराध्मानहिक्कान्वितं दाहमूर्च्छागुदापृष्ठशोषार्तिकासादिजुष्टम् ७॥

अतिसारकीउत्पत्ति ।

विरुद्धाशनैः स्निग्धदुग्धान्नदोषैर्द्रवस्नेहदुष्टाम्बुमद्यादिपानैः ॥
गरिष्ठाम्लपिष्टैः कृमीणां विकारैरतीसाररोगो भवेन्मानवानाम् ॥८॥

अतिसारेपथ्यम् ।

अतीसारे त्यजेत्स्नानं संतापं वह्निसूर्ययोः ॥ तैलाभ्यंगं च व्यायामं गुरुस्निग्धादिभोजनम् ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते
वैद्यशास्त्रेअतीसारलक्षणं द्वितीयम् ॥

अर्थ–ऐसे अतिसारि मनुष्यको वैद्य इलाज न करै कैसेको कि जिसका शीतल शरीरहो प्यास शूल युक्तहो श्वास ज्वर आफरा हिचकी सूजन इन करके युक्तहो दाह मूर्च्छा तथा कांचका निकलपडना शोक दुःख खांसी युक्तहो ॥ ७ ॥ विरुद्ध भोजन करनेसे चिकनी तथा दूध तथा अन्न इनके दोषसे पतली तथा तेलकी तथा दुष्टजलके पीनेसे मदिरादिके पीनेसे भारी खट्टा तथा पीसा अन्नके खानेसे और कृमीनके विकारसे मनुष्यको अतिसार रोग पैदा होय है ॥ ८ ॥ अतिसारवालामनुष्य ये काम न करे नहाना अग्नि और सूर्य इनके तेजका सहना तेलका लगाना तथा कसरत फुर्त्तीका करना भारी चिकना आदि भोजनका करना ॥ ९ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिनीभाषाटीकामें अतिसारनिदानपूर्णहुआ ॥

अथसंग्रहणीनिदानम् ॥

वातसंग्रहणीलक्षणम्।

वातोत्थोग्रहणीगदःप्रकुरुते विड्बंधनं मूर्छनं कासं श्वासतरं मुखं च विरसं कंपं शरीरे भृशम् ॥ कुक्षौ तालुनि मस्तके हृदि गले शोषो गुदे वेदना कष्टं प्रच्यवते पुरीषमशकृत्सामंसशब्दं घनम् ॥ १ ॥

पित्तसंग्रहणीकेलक्षण।

चिह्नं पित्तग्रहण्यां भवति हृदये कंठदेशेतिदाहः शूलं मेढ्रे गुदाग्रे रुधिररतिरतः शुष्कफेनं पुरीषम् ॥ तुच्छं तुच्छं सकष्टं क्वचिदपि बहुशो दुष्टगंधिप्रयुक्तं पीतं वा कृष्णरूपं वससदृशानिभं रोमहर्षोतितृष्णा ॥ २ ॥

कफसंग्रहणीकेलक्षण।

कफसंग्रहणीकुरुते हृदये जडतामुदरे गुरुतामरुचिम् ॥ मनसि भ्रमतांगरुजं शिथिलं सितफेनयुतं च पुरीषमरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—वादीसे प्रगट संग्रहणी दस्तको बंद करै है मूर्च्छा, खांसी, श्वास, मुखवेरस, शरीरमें कंप, कोख तालुआ माथा छाती गला इनका सूखना, कष्टसे थोडा २ विष्टाका त्यागहोना आम मिला हुआ शब्दके साथ और गाढा ॥ १ ॥ पित्तकी संग्रहणीके ये लक्षण हैं हृदयमें और कण्ठमें दाह, लिंगमेंशूल, गुदाके अग्रभागसे रुधिरका गिरना, सूखा तथा झागमिला तथा कष्टसे थोडा २ कभी ज्यादा बासको लिये पीला वा काला वा वसाके समान दस्त हो, रोमांच तथा प्यास हो ॥ २ ॥ कफकी संग्रहणीमें हृदयका जकडना, पेटका भारीहोना, मनमें अरुचि, भौंर, देहमें दुःख तथा शिथिलता, सफेदझागोंका मिला दस्त, ये लक्षण कफसंग्रहणीके होते हैं ॥ ३ ॥

त्रिदोषसंग्रहणीकेलक्षण।

ग्रहण्यां त्रिदोषोद्भवायां सकष्टं पुरीषद्रवं शब्दयुक्तं वसाभम् ॥ भवेदल्पमल्पं क्वचिद्रक्तवर्णं गरिष्ठोदरं दुष्टदुर्गंधिमिश्रम् ॥ ४ ॥

सन्निपातकीसंग्रहणी ।

विष्टंभं ग्रहणीगदः प्रकुरते दोषैस्त्रिभिः संभवो नैरस्यं शिरसि व्यथां गुरुतमां शूलं गुदापीडनम् ॥ आलस्यं हृदये गुरुत्वमरुचिं कासं तृषासंभ्रमं श्वासाध्मानविवर्णतोदरकृमीन् दाहं करांघ्योर्वमिम् ॥ ५ ॥ अतीसारे गते मंदं वह्नीच्छायातिभोजनैः ॥ वर्त्तते यो भवेत्तस्य ग्रहणी दारुणाभृशम् ॥ ६ ॥

अर्थ–सन्निपातसे पैदाहुई जो संग्रहणी उसमें ये लक्षण होते हैं साथ कटके और शब्दके दस्तका होना, तथा वसाके समान और थोडा२ कभी लालरंगका, पेटभारी रहै, और वासमिला दस्त हो ॥४॥ पेटमें आफरा करती है तथा मुखमें विरसता, शिरमें दर्द, और शूल तथा गुदा पीडा, आलकस, हृदयका, भारीहोना अरुचि, खांसी, प्यास, भौंर श्वास, पेटका फूलना, शरीर बुरेरंगका होजाय पेटमें कृमी, हाथ पावोंमें दाह, और वमन ॥५॥ जब अतिसार चलाजाय और जठराग्निकी इच्छा अति भोजनसे बंदकरदे उसके घोरसग्रहणी होती है ॥ ६ ॥

संग्रहण्यांपथ्यम् ।

व्यायामं मैथुनं रूक्षं भोजनं वह्नितापनम् ॥ तैलाभ्यंगंदिवास्वापं ग्रहणीरोगवांस्त्यजेत् ॥ ७ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेग्रहणीलक्षणं तृतीयम् ॥

अर्थ–स्त्रीसंग, रूखाभोजन, आंचसेतापना, तेल लगाना, दिनमें सोना, ये संग्रहणी रोगवाला त्यागदे ॥ ७ ॥ इति माथुर दत्तरामकृत हंसराजार्थबोधिनी टीकामें संग्रहणीरोगलक्षण समाप्त हुआ ॥

अथअर्शोनिदान ।

गुदाग्रेषु जातानि मांसांकुराणि चतुस्त्रीणि संख्यानि संगानि यानि ॥ भवन्तीति दुर्नामसंज्ञानि नूनं मरुच्छ्लेष्मपित्तोद्भवानीहतानि ॥ १ ॥

वातकीबवासीरकेलक्षण ।

शुष्कावातसमुद्भवाश्चिमिचिमास्तब्धागुदस्यांकुरा म्लानाः श्यामतराः खराश्च विकटा नीलाः सिताभाः क्वचित् ॥ खर्जू-

राक्तयोंघ्रिहस्तसंहिताः शीर्षाननाःसंयुता भिन्ना विस्फुटिताननाः ज्वरकराः पायूत्थिता दुःखदाः ॥ २ ॥ वाताशांसि कृशत्वमेव वहुलं कुर्वन्ति विड्बंधनं क्षुन्नाशं वलवीर्यकांतिहरणं शूलं गुदापीडनम् ॥शोपं कंडुरुजं विकारमधिकं शब्दं गुदात्तोनिशमाध्मानं जठरव्यथां गुरुतमांप्लीहं तनौ पांडुताम् ॥ ३ ॥

अर्थ–गुदाके अग्रभागमें हुये तीन वा चार मांसके अंकुर अंग करके सहित खोटा नाम(संज्ञा) जिनकी ऐसे वातपित्त कफसे पैदा होते हैं ॥ १ ॥ वादीसे पैदाहुए ये जो गुदाके मस्से उखडेहों सूखेहों चिमचिमीलिये हों टेढेहों कुम्हिलाये हुयेहो कालेहों खरदरे वाँके लंबे सुपेदहों खजूर फलके सदृशाहों हाथ पैर शिर मुँहके चिह्न संयुक्तहों अलग २ फटे मुखके ज्वर करनेवाले गुदामें प्रकट दुःखके देनेवाले हैं ॥ २ ॥ वादीकी बवासीर मनुष्यको कृश करै है, तथा दस्तको बंदकरै, मूत्रको बंदकरै, बलवीर्य तेजको दूरकरैहै, शूल,पेटमे गुदामें दर्द, शरीरको सुखावे, खुजली चलै, दुःखकरै, अधिक विकार तथा गुदासे शब्दके साथ अधोवायु चलै, आफरा, पेटमें भारि, व्यथा, प्लीह, शरीरपीलाकरै है ॥ ३ ॥

पित्तकीबवासीरकालक्षण।

गुदांकुरास्तु पित्तजा भवंति पक्वविंबभाः स्रवंति रक्तमुल्वणं च मासिमासि मेदुराः ॥ अजाविशूकरीशुनीगवांस्तनोपमा हि ते खरा जलौकिकाननाः महत्सुदोपसंभवाः ॥ ४ ॥ स्वल्पात्स्वल्पतरं पुरीषमरतिं विड्बंधनं कूजनं कष्टं वातसमान्वितं सरुधिरं शूलं गुदागर्जनम् ॥प्लीहं वीर्यबलक्षयं शिथिलतां गुल्मांत्रवृद्धिं भ्रमं पित्ताशांस्यरुचिं तृषा वहुतरां कुर्वंत्यनाहं श्रमम् ॥ ५ ॥

कफबवासीरकेलक्षण।

कंड्वाढ्यागुदसंभवाःखरतरामांसांकुराःपिच्छिलाः स्तब्धाः श्वेतनिभा मृगीस्तनसमाःस्निग्धाश्च स्पर्शप्रियाः ॥ स्थूला मूलदृढा भवंति मिलिताः कार्पासबीजोपमा वंध्यावद्गमुखा व्यथादिजनकाः पापोद्भवा दारुणाः ॥ ६ ॥

अर्थ–पित्त बवासीरके मस्से पके कंदूरी फलके समान हों, जिनमें [illegible], महीना [illegible] छिपाहुआ, बकरी, शूकरी, कुतिया, गौ, इनके थनोंके [illegible] हैं, [illegible], जोंकके [illegible]

आकारहों ये बहुत दोपसे होते हैं ॥ ४ ॥ पित्तकी ववासीर दस्तको बहुत कम निकारै, मन कहीं न लगे, दस्तका बंद होना, गूंजना, कष्ट पूर्वक अधोवायु रुधिरके साथ निकसना, शूलके साथ गुदाका गर्जना, प्लीह वीर्य बलका नाश, शिथिलता, गोला, अंत्रवृद्धि, भ्रम, अरुचि, प्यास ज्यादा, अनाह, श्रम, ये लक्षण पित्तकी ववासीरके हैं ॥ ५ ॥ गुदाके मस्सोंमें खुजली चलै खरदरेहों और गाढे टेढेहों, सपेदहों, भृगांके स्तनोंके समानहों, चिकनें और सिराना प्रियलगे, स्थूल, दृढ जडवाले, कपास बीजके: समानहों, रुधिर न निकले, बद्धमुखवाले, दुःखके देनेवाले, पापसे उठे दारुण ॥ ६ ॥

कफकीववासीरकेलक्षण ।

संकोचं गुदबंधनं च जठरे कुर्वंत्यनाहं दृढं तुच्छं कष्टतरं पुरीषमसकृन्निद्रां तनौ पांडुताम्॥आध्मानं गुरुतां भृशं शिथिलतांहर्षक्षयंक्षीणतां श्लेष्मार्शांसि शिरोरुजं बहुतरं जाड्यम्बलौजःक्षयम् ७॥

सन्निपातववासीरकालक्षण ।

अर्शांस्यसाध्यानि गुदोद्भवानि त्रिदोषजातानि समस्तरोगान् ॥
तन्वंति कार्श्यं रुधिरं स्रवंति दहंति वीर्यं ददतीह दुःखम् ॥ ८ ॥

वातकीववासीरकापथ्य ।

त्यजेदर्शसा संयुतो वातजेन नरः सर्वदा मैथुनं रूक्षभोज्यम् ॥
कषायं श्रमं मद्यपानं विदाहि जलस्यावगाहं बहिः स्वापमेतत्॥९॥

अर्थ—गुदाका बंधन, तथा संकोच, उदरमें आनाह, थोडा कष्टके साथ मलका त्याग, नींद-तथा पीलिया, आफरा, भारीपना, शिथिलता, हर्षक्षय, क्षीणपना, मथवाय, बलतेजका क्षय, ये कफकी ववासीरके लक्षणहैं ॥ ७ ॥ त्रिदोपसे पैदा हुई ववासीर सब असाध्यहै, और सबरोगोंको पैदा करैहै, कृशताको पैदाकरै. रुधिरको ज्यादा निकारै, वीर्यको दहन करै, दुःखको देय ॥ ८ ॥ वातकी ववासीरवाला मैथुन, रूखा भोजन. कसैली वस्तु, श्रम, मद्यपान, दाहकर्तावस्तु, जलमें घुसिके स्नान, बाहरका सोना ये त्यागदेवे ॥ ९ ॥

पित्तकीयवासीरकापथ्य ।

पित्तजेनार्शसा युक्तस्त्यजेत्क्षारोष्णभोजनम् ॥व्यायामं सूर्यसंतापं कट्वम्ललवणानि च ॥ १० ॥

कफकीबवासीरकापथ्य ।

कफार्शसायुक्तनरः प्रवातं जलावगाहं मधुराम्लशीतम् ॥ त्यजेद-तिस्निग्धगरिष्ठभोज्यं स्वापं दिने जागरणं रजन्याम् ॥ ११ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे अर्शसालक्षणं चतुर्थम् ॥

अर्थ–पित्तकी बवासीरवाला मनुष्य इतनी वस्तु त्यागदेय, क्षार मिला अन्न तथा गरमभोजन दंडकसरत, सूर्यके घाममें डोलना, कडवी खट्टी चरपरी नोनेंकीवस्तु ॥ १० ॥ कफकी बवासीरवाला नर, हवा, जलमें घुसकर नहाना, मीठीवस्तु, शीत, तथा खट्टी, अति चिकनी, भारीवस्तुका भोजन, दिनमें सोना, रातमें जागना, त्यागदे ॥ ११ ॥

इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें बवासीर रोग लक्षण समाप्त हुआ ॥

भगंदरलक्षणम् ।

गुदतः परितो द्वितयेंगुलके पिडिकार्तिकरो रतिकृज्ज्वरदः ॥भग-दारणको रुधिरेण युतो मुनिभिर्गदितस्तु भगंदररुक् ॥ १ ॥

वातकेभगंदरकालक्षण ।

भगंदरो मरुद्भवो रुजां करोति दारुणो ह्यपानवातसंभवो गुदंप्रपी-डयेन्निशम् ॥ करोति पिडिकाशतं विपाकदाहसंयुतं व्रणैश्च रोधि-री नदी पुरीषमूत्रबंधनम् ॥ २ ॥

पित्तजनितभगंदरकेलक्षण ।

भगंदरोतिदारुणः करोति पित्तजोऽहितं गुदे च पिडिकारुणा विपा-कदुःखभूमिका ॥ अनेकधामुखाखरास्तुपूयशोणितावहाः कटौ व्यथामनेकधामपानकोपतो भवाम् ॥ ३ ॥

अर्थ–गुदाके चारो तरफ दूसरे अंगुलमें मरोरी दुःखकी देनेवाली आर्तिको करनेवाली ज्वरकी करनेवाली भग और गुदाके बीचमें भगकीसी तरह भगदारणक रुधिर युक्त होताहै इसीसे मुनियोंने इसका नाम भगंदर कहा है ॥ १ ॥ वादीसे और अपान वायुसे उत्पन्न जो घोर भगंदर वो दारुण पीडा करै है, और गुदामें अत्यन्त दुःखदे, और सैकडों मरोरी गुदाके

ऊपर फरै, और ये पकजावे तथा दाहहो और घावहोजाय, रुधिर बहै, दस्तपेशाबका बन्द होना, ये लक्षण होते हैं ॥ २ ॥ पित्तसे पैदा जो अतिदारुण भगंदर उसके ये लक्षणहैं दुःखहो, गुदाके ऊपर लाल २ मरोरीहों, और ये पकिजावे, खेदको पैदाकरै अनेकमुखहों, करडी हो, राधरुधिर जिनसे स्रवे कमरमें दर्द हो, यह भी अपान वायुके कोपसे पैदाहोताहै ॥ ३ ॥

गुदांते पिडिकां कुर्याद्भगंदरगदोनिशम् ॥ कंडूशोपं व्यथां पाके रक्तपूयहवाः क्रमीन् ॥ ४ ॥

सन्निपातजनितभगंदरलक्षणम् ।

आहुस्तं च भगंदरं कफमरुत्पित्तोद्भवं पण्डिता विस्फोटैर्दहते गुदं क्रिमिकुलैरत्यामिपं योनिशम्॥ पक्वैश्छिद्रसमन्वितैः सरुधिरं पूयं स्रवत्यामिपं शोथं कंडुरुजादिकं वितनुतेऽपानेन विड्बंधनम् ॥५॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यकशास्त्रे भगंदरलक्षणम् ॥

अर्थ–भगंदरका रोग–गुदामें मरोडी पैदाकरै, और उनमें खुजलीचलै, तथा शोपहो, पकनेमें दर्दहो, रुधिर तथा राधवहै, और कृमि पडजाय ॥ ४ ॥ जिसभगंदरमें ये लक्षणहों उसको पंडित सन्निपातका कहतेहैं जिसमें बडे २ फोडे करके गुदामें दुःखहो और कृमीनके समूहसे निरंतर व्याकुलहो, और पकजाय तथा गुदाके वारपार छेद होजाय उनछेदोंमें राधरुधिर मल मांस निकसे सूजन खुजलीहो अपान पवनसे गुदाद्वारा मलका नहीं उतरना ॥ ५ ॥ इति श्रीहंसराजार्थबोधिनी टीकामें भगंदररोग लक्षण समाप्तहुआ ॥

अजीर्णरोगकेलक्षण ।

भुक्तान्नपाचितं नैव वह्निनोदरजेन तत् ॥ तस्योपरि पुनर्भुक्तमजीर्णं तद्विदुर्बुधाः ॥ १ ॥ भुक्तान्नं न विपाकमेति जठरे विण्मूत्रयोस्तंभनाद्रात्रौ जागरणाद् दिवातिशयनादत्यंबुपानान्नृणाम्॥ दुर्भक्ष्याद्विपमाशनादतिभयात्क्रोधाद्विरुद्धाशनात् मंदाग्नौ बहुभोजनाद्गुरुतराप्रक्षेपतश्चिंतया ॥ २ ॥ वाताधिके विपमतां समुपैति वह्निः पित्ताधिके भवति चाह्निरतीवतीक्ष्णम्॥ श्लेष्माधिके जठरजो हुतभुक् समंदो वाताधिकेपु समकेपु समोग्निरंत्ये ॥३॥

अर्थ–खाया हुआ तो अन्न जठराग्नि करके पचा नहीं और तिसके ऊपर फिर, खावे उसको पंडित अजीर्ण कहते हैं ॥ १ ॥ मलमूत्रके रोकनेसे, रातमें जागना दिनमें सोना बहुत पानी पीना.

-गरिष्ट भोजन करना, विषम भोजनसे, अतिभयसे, क्रोधके करनेसे, विरुद्ध भोजनसे, मंदअग्निसे ज्यादा भोजनसे, द्वेषसे चिन्ताके करनेसे, खायाहुआ अन्न पेटमें पचता नहीं है ॥ २ ॥ वाताधिकसे विषमाग्नि पित्ताधिकसे तीक्ष्णाग्नि कफाधिकसे मन्दाग्नि और वात पित्तकफके समान होनेसे समाग्नि होती है ये चार प्रकारकी अग्नि मनुष्योंके होतीहै ॥ ३ ॥

विष्टब्धं विषमोऽनलः प्रकुरुते रोगांश्च वातोद्भवांस्तीक्ष्णाग्नि-र्विदधाति पित्तजनितान् रोगान् विदग्धाशनम् ॥ आमश्लेष्मसमुद्भवान् वितनुते रोगांश्च मन्दानलो नैरोग्यं हुतभुक् समोहि सततं धत्ते रुचिं मानसीम् ॥ ४ ॥

वाताजीर्णकेलक्षण ।

वाताजीर्णे चिह्नमेतत्प्रसिद्धं जृम्भाशूलं क्षुत्पिपासांगमर्दः॥ साम्लोद्गारो धूमयुक्तोतिकष्टः श्वासः शोषो मूत्रघातोथ हिक्का ॥५॥

पित्ताजीर्णकेलक्षण ।

मूर्च्छादाहः संभ्रमः शूलमुग्रं तृष्णोद्गारो धूमयुक्तोतिसाम्लः ॥ मोहः स्वेदश्छर्दनं गन्धिसांद्रं पित्ताजीर्णे लक्षणं सद्भिरुक्तम् ॥६॥

अर्थ–विषमाग्नि आफरा और वातके रोगोंको पैदाकरैहै तीक्ष्णाग्नि पित्तके रोगोंको और अन्नको दग्ध करदे मन्दाग्नि कफके रोगोंको और आमको पैदा करैहै, समाग्नि नैरोग्य और रुचिको पैदा करैहै इसोंमे यह समाग्नि अग्नि श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ वातके अजीर्णमें ये लक्षण होते हैं, जभाई, शूल, प्यास, धूमयुक्तखट्टीडकार, भूख अगोंका टूटना, अतिकष्ट, श्वास, शोष, मूत्रघात, हिचकी ॥ ५ ॥ एवं मूर्च्छा, दाह, भ्रम घोर शूल, प्यास, धूमयुक्त खट्टी डकार, बेहोसी, पसीना, वासके साथ और गाढ़ी ये पित्ताजीर्णके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

कफाजीर्णकेलक्षण ।

कफस्याजीर्णेऽङ्गे भवति गुरुता छर्दिरधिका अतीसारः शोथो रुचिरपि तृषाक्षुद्विकलता ॥ वमिर्लालावक्त्रादरतिरुदरे भारमधिकं शिरः कंठे नाभौ गुदपवनसंचारमधिकम् ॥ ७ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे अजीर्णनिदानं समाप्तम् ॥

अर्थ—अपवित्रता, भ्रम, दस्तपात, कान, कंठ, मुख, ओठ इनका सूखना, बेहोसी, मनका डामाडोल, शरीरमें दाह, बड़ २ बोलना, त्वचाका सुकड़ना, भूखका नाश, चेष्टा रहित येभी विषूचिकाके लक्षण होते हैं ॥ ४ ॥ इति श्रीहनुमज्जार्थबोधिनी टीकामें विषूचिका रोग तथा विलंबिकारोग लक्षण समाप्त हुआ ॥

अथ क्रिमिनिदानम् ।

जायन्तेक्रिमयोनरस्यजठरे बाह्ये च यूकादयो बाह्याभ्यन्तरभेदतो बहुविधाः सूक्ष्मातिसूक्ष्मास्तथा ॥ दीर्घादीर्घतरा भवन्ति मिलिताभिन्नाःपराजन्तवो नानावर्णसमन्विता बहुपदःपादैर्विहीनाः पराः ॥ १ ॥ मूर्छार्त्तिकंडुंपिटिकाश्च कोटरान् कुर्वन्त्यतीसारमनाहसंभ्रमम्॥दाहं विवर्णं वमथुं विगन्धितां कार्श्यं शरीरे क्रमयो मुहुर्मुहुः ॥ २ ॥ उदरगतक्रमीणां चिह्नमेतन्नराणां भवति हृदयदाहः संभ्रमोऽङ्गे विकारः ॥ अरतिरुधिरकासं छर्द्यतीसारशूलं सकलविकलकायः ष्ठीवनं निर्बलत्वम् ॥ ३ ॥

अर्थ—कृमिरोग दो तरहकाहै एक बाहरी, दूसरा भीतरी, पेटमे, गिंडोहे आदि हो सो भीतरी और बाहर जूंवे लीख आदि होतेहैं ऐसे बाहर और भीतरके भेदसे तथा छोटेसे छोटे और बडेसे बडेके भेद करके बहुतभेदहैं नाना वर्णके बहुत पाद तथा पादरहित होते है ॥१॥ मूर्छा, आर्ति, खुजली, पिटिका इनका खुजाना अतीसार, अनाह, भौंर, दाह, शरीरका वर्ण औरही तरहका, वमन, दुर्गंध, शरीर कृश, कृमि ये लक्षण कृमिरोगमे होते हैं ॥ २ ॥ उदरमे कृमि पडगये हों उसके ये चिह्नहैं हृदयमें दाह, भौंर, शरीरमें विकार, मन न लगे, दस्तमें रुधिरका गिरना, खांसी, वमन, दस्त, शूल सब शरीरमें बेकली, बारबार थूकना, निर्बलता ॥ ३ ॥

कृमिरोगकीउत्पत्ति ।

भुक्तस्योपरिभोजनेन मधुराम्लाभ्यां मृदाभक्षणाद्ध्ना माषपयोभिरामिषयुतैः श्लेष्मोद्भवाजन्तवः ॥ सन्तापक्षतशोफशाकमधुभिर्मद्येन रक्तोद्भवा अन्यैर्वा क्रमयो भवन्ति जठरे नृणां सदा दुःखदाः ॥ ४ ॥

क्रमिरोगपथ्यम् ।

क्रमिवान् संत्यजेन्मिष्टं पिष्टं शाकं पयो गुडम् ॥अव्यायामं मृदुश्चाम्लं माषं मांसद्रवं दधि ॥ ५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रेक्रमिलक्षणं संपूर्णम् ।

अर्थ-भोजनके ऊपर भोजन करनेसे, मीठा खट्टा मट्ठा, दही, दूध, उर्द, मांस इनसे कफकी कृमि पैदा होतीहै सन्ताप, घाव, सूजन, शागके खानेसे, महत, मद्य इनसे रुधिरकी कृमि पैदा होतीहै और भी प्रकारसे कृमी मनुष्यके पेटमें दुःखको देनेवाली होतीहै ॥ ४ ॥ कृमि रोगवाला मीठा, पीसाअन्न, शाक, दही, दूध, गुड, दंडकसरतका न करना, माटीखाना, खट्टीवस्तु, उर्द, मांस, पतलीवस्तु, इनको त्यागदे ॥ ५ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें क्रमिरोगलक्षणसमाप्तहुआ॥.

पाण्डुरोगनिदानम् ।

दोषाः संकुपितास्त्रयोपि दधते पाण्डुं शरीरेरुजं नृणांतीक्ष्णतमं द्रवञ्च लवणं रूक्षामिषं सेविनम्॥मृत्पूगीफलभोजिनां हि सततं रात्रौ दिवाशायिनां स्त्रीष्वत्यंतविलासिनां प्रतिदिनं शाकाम्लसंभक्षिणाम् ॥ १ ॥

वातकेपीलियाकेलक्षण ।

पाण्डुर्वातसमुद्भवो नयनयो रूक्षं त्वचः स्फोटनं तोदानाहकृमीन् करोति कृशतां गुह्यस्थले शोफताम् ॥ हृत्कंपं श्वसनं तनौ मलिनतां पीतद्युतिं क्षीणतां मन्दाग्निं बलवीर्यकान्तिहरणं छर्दिं तृषा दारुणाम् ॥ २ ॥

पित्तकेपीलियाकेलक्षण ।

अक्ष्णोर्मूत्रपुरीषयोस्त्वाचि नखेष्वन्तेषु पीतप्रभां श्वासं कासमन्वितं कृशतनुं मूर्छामतीसारकम्॥ हृल्लासं हृदि संभ्रमं विकलतां दाहं तृषासंयुतं पाण्डुः पित्तसमुद्भवः प्रकुरुते शोषं मुखे शोफताम्॥ ३ ॥

अर्थ--जोमनुष्य तीखी पतली ज्यादा नोन रूखामांस मट्टी सुपारी इनको खावे तथारातादिन सोवे बहुत मैथुनके करनेसे नित्य शाग और खट्टाखानेसे तीनों दोष कुपितहो पीलियाके रोगको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ बातसे पैदाहुये पीलियाके ये लक्षणहैं नेत्रोंमें रूखापन, त्वचाका फटना, सुईकी-तरहचुभनेका दर्द, आनाह, तथा शरीर कृश भ्रम, गुह्य इन्द्रीपर सूजन, हृदयमें कंप, श्वास, शरीरमलिन, तथा शरीर पीला, मन्दाग्नि, बलवीर्य कांतिकानाश, वमन, प्यास, मुखका सूखना ॥ २ ॥ नेत्र, पेसाब, दस्त, शरीरकी त्वचा, नख, इनका पीला होना श्वास, खांसी, शरीर कृश, मूर्च्छा, दस्तोंका होना, सूखी उलटी, हृदयमें भ्रम, बेकली, दाह, प्यास, मुखका सूखना तथा सूजन ये पित्तसे पैदाहुये पांडुरोगके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

कफकेपीलियाकालक्षण ।

शुक्लाननं शुक्लपुरीषमूत्रं तंद्रालसं स्त्रीष्वरुचिं कृशत्वम् ॥ लाला-वमित्वं श्वयथुं गुरुत्वं पांड्वामयश्श्लेष्मभवः करोति ॥ ४ ॥

सन्निपातकेपाण्डुरोगलक्षण ।

त्रिदोषोद्भवे पाण्डुरोगे कृशत्वं भवेच्छ्वासकासं तृषा वेप-थुत्वम् ॥ शिरोर्तिः प्रसेको रुचिः संभ्रमत्वं बलौजो विनाशः क्लमो छर्दिशूलम् ॥ ५ ॥ त्रिदोषान्वितः पाण्डुरोगी भिषग्भिरसा-ध्यो निरुक्तो हृताक्षो विचेष्टः ॥ ज्वरः श्वासहृल्लासकासातिसार-स्तृषासंभ्रमोंगेषु कंपः प्रलापी ॥ ६ ॥

अर्थ--सपेदमुख, सपेद पेसाब, और मल, तन्द्रा, आलकस, स्त्रीसगकीइच्छाका नाश, कृशता लारका पड़ना, वमन, शरीरका भारीहोना, ये लक्षण कफसे पैदा हुआ पांडुरोग करता है ॥ ४ ॥ सन्निपातसे उत्पन्न हुआ पांडुरोग इसमें ये लक्षण होते हैं शरीर कृश, श्वास, खांसी, प्यास, कंप, मथवाय, पसीनेका आना, अरुचि, भ्रम, बल, कांतिका नाश, ग्लानि, वमन, शूल॥५॥त्रिदोष, युक्त पांडुरोगी ऐसा वैद्योंने असाध्य कहा है नेत्रसे रहित, चेष्टाकरके हीन, ज्वर, श्वास, सूखी उलटी खांसी, अतीसार, प्यास, भौर, अंगोंमें कंप, वाहियात बकना ॥ ६ ॥

यः स्रोतांसि रुणद्धि सो मुनिवरैस्त्याज्यो भृशं दूरतस्तेजो-वीर्यबलौजसां प्रतिदिनं हानिं करोति ध्रुवम् ॥ पाण्डुत्वं त्वचि नेत्रयोः कररुहे ह्यंत्रेषु विण्मूत्रयोर्धत्ते वह्निविनाशकोऽतिबलवान् पाण्डुर्मनुष्यादनः ॥ ७ ॥

पाण्डुरोगेपथ्यम्।

पाण्डुरोगीत्यजेदम्लं दिवास्वापञ्च मैथुनम्॥ शाकं मांसाशनं रूक्षं मृन्नक्षमतितीक्ष्णकम्॥ ८॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे पाण्डुरोगलक्षणम्॥

अर्थ–ऐसा पांडुरोगी वैद्योंकरके त्याज्य है जो कानोंसे बहरा करदे, तेज वीर्यबल कांति इनकी प्रतिदिन हानिकरै, त्वचा नेत्र नख आंत मलमूत्र ये पीलेहों, जठराग्निसे रहित ऐसा पांडुरोग बली मनुष्यका मारनेवाला जानना॥ ७॥ पांडिया रोगवाला मनुष्य खटाईका खाना, दिनमें सोना, तथा स्त्रीसंग करना शाक, मांस, रूखी वस्तु, मट्टी खाना, अतितीखी मिरच आदि वस्तु का खाना त्यागकरै॥ ८॥ इति हंसराजार्थबोधिनी टीकामें पांडुरोगका निदान समाप्त हुआ।

हलीमक कामला कुंभकामला पानकीरोग निदान।

हृत्पद्मेमलमूत्रयोर्नयनयोर्धत्तेतिपीतद्युतिं दौर्बल्यं बलवीर्ययोरनुदिनं नाशं श्रमं कामलाम्॥ अस्थिस्फोटवती करोति विकलं मांसाशनाद्रक्तपा संतापं करयोर्मुखे वृषणयोः शोफं च पादद्वयोः१

हलीमकरोगनिदानम्।

करोति कुम्भकामलानखेषु नेत्रयोर्मुखे पुरीषमूत्रयोर्भृशं सकृष्णतां तृषार्त्तिकृत्॥बलाग्निवीर्यतेजसां विनाशिनी प्रकंपिनी ज्वरांगदाहवर्द्धिनी विमोहशूलदायिनी॥२॥ पदचक्रेषु नखेषु मूत्रयुगुले विण्मूत्रयोर्नीलतां संधत्ते च हलीमकं कृशतनुः स्त्रीषु प्रहर्षक्षयम्॥ संतापं कुरुते रुजं वितनुते पित्तानिलोत्थं गदं तन्द्रा अंगविमर्दनं शिथिलतां श्वासं श्रमं वेपथुम्॥३॥नखेष्वंगदेशेषु मूत्रे पुरीषे द्वयोर्नेत्रयोः पाण्डुता तृट्प्रसेकः॥ बहिः शीतताभ्यन्तरेत्यंतदाहो वदेत्पानकीं लक्षणैर्लक्षणज्ञः॥ ४॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यकशास्त्रे कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीलक्षणम्।

अर्थ–जो मनुष्य मांस खावै तथा रुधिर पीयाकरै उसके कामलारोग प्रगट होय और ये लक्षणको करै है, छाती मल मूत्र नेत्र ये पीलेहों, दुर्बलता, बलवीर्यका नाश, भ्रम, हृत्स्फुरन, बेकली, संताप, हाथ मुख अंडकोश इनमें सूजन, तथा पैरोंमें सूजनहो ॥ १ ॥ कुम्भकामला देहमें ये लक्षण करै है; नख, नेत्र, मुख पीला तथा दस्त पेसाब काला, प्यास, पीडा और बल अग्नि वीर्य तेजनाशक, कम्प, ज्वर, देहमें दाह, मोह, शूल करै है ॥ २ ॥ छःचर्क्रोमें नखोंमें नेत्रोंमें मलमूत्रमें जो नीलापना करदे और शरीर पतला स्त्रीसंगकी इच्छाको दूर करदे, बेकली, तंद्रा, अंगोंका टूटना, शिथिलता, श्वास, भ्रम, पीडा, इन लक्षणोंको वातपित्तसे पैदा हुआ हलीमकरोग करता है ॥ ३ ॥ नखोंमें शरीरमें मल मूत्रमें नेत्रोंमें पीलाई हो प्यास, पसीना, बाहरीजाडा, भीतरी दाह, इन लक्षणोंसे लक्षणका जाननेवाला पानकी रोगजाने ॥ ४॥ इति हसराजार्थबोधिन्यां कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीरोगनिदानम् ॥

अथ रक्तपित्तनिदानम्।

रक्तपित्तकीउत्पत्तिलक्षणं।

व्यायामैरविवाहितापसहनैस्तीक्ष्णोष्णकट्वाम्लैरत्यंतं सुरतैर्दिवातिशयनैः स्निग्धान्नसंभोजनैः॥एतैःसंकुपितं तु पित्तमधिकंनिर्गत्यबाह्यांतराच्छर्दिलोहितिमां च नेत्रयुगुले रक्ते तनौ मण्डलम् ॥ ॥ १ ॥ निःश्वासे लोहगंधिः प्रभवति शिरसो रक्तधारा च कोष्णा सन्तापः कोष्ठपीडा नयनविकलताऽरोचकः ष्ठीवनत्वम् ॥ तृष्णा मूर्च्छाप्रसेको मनसि शिथिलता संभ्रमो देहदाहः कासः श्वासोल्पचेष्टा कृशतरहुतभुक् रक्तपित्तस्य कोपात् ॥२॥ अधोर्ध्वं भवेद्रक्तपित्तप्रवृत्तिः श्रुतिघ्राणवक्त्राक्षिभिश्चोर्ध्वदेशे ॥ गुदायोनिमेढ्रैरधोयाति रक्तं समस्तैश्च रोमैः शरीरस्य बाह्ये॥ ३ ॥

अर्थ–दंड कसरतकेकरनेसे, घाममें डोलनेसे, अग्निके तापनेसे, तीखी गरमी कडुई मांस इनके खानेसे, अति स्त्रीसंगसे, दिनमें सोनेसे, स्निग्ध अन्नके भोजनसे,कुपित हुआ जो पित्त सो रुधिरको बिगाडकर रुधिरकी उलटी करावे तथा नेत्रोंसे रुधिर गिरे और शरीरमें खून बिगडनेसे चकत्ता होजाय ॥ १ ॥ रक्त पित्तके कोपसे ये लक्षण हो श्वास लेनेमें लोहकीसी गंधिहो, शिरसे रुधिरकी गरमधारा पडे, प्यास व्याकुलताहो उदरमें पीडा नेत्रोंमें बेकली, अरुचि, रुधिरका थूकना, मूर्च्छा, तथा पसीनेका आना, मनमें शिथिलता, भ्रम, देहमें दाह, खांसी, श्वास, अल्पचेष्टा, अग्निमंद ॥२॥

रक्त पित्तकी प्रवृत्ति ऊपर तथा नीचेके रास्तासे निकसै सो लिखते है, जो कानोंसे नाकसें मुखसे नेत्रसे रुधिर गिरै उसे ऊर्ध्वप्रवृत्ति जाने और गुदाके द्वारा तथा योनिद्वारा लिंगसे रुधिर गिरै उसे अधोप्रवृत्ति जाने और सब रोमोंसे शरीरके बाहर निकसता है ॥ ३ ॥

वात पित्त कफ और सन्निपातजन्यरक्तपित्तके लक्षण ।

रूक्षारुणं श्यामतरं च रक्तं वातात्मकं तं प्रवदन्ति वैद्याः॥ पित्तोत्थितं रक्ततमं कषायं स्निग्धश्च सांद्रङ्कफजं सफेनम् ॥४॥ ऊर्ध्वगं कफजं रक्तमधोगंमारुतोद्भवम्॥रोमकूपैर्बहिर्यातं तं विद्यात् पित्तसंभवम् ॥ ५ ॥ अधोर्ध्वगंवातकफप्रकोपात् द्विदोषजं तं जपदानसाध्यम् ॥ अधोर्ध्वरोमैर्जनितं त्रिदोषकोपादसाध्यं मुनिभिः प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

अर्थ–रूखा लाल काला जो रुधिर निकले उसे वातका रक्तपित्त वैद्य कहते हैं और लाल कसेला पित्तका तथा चिकना, गाढा, झागयुक्त, कफका कहते है ॥ ४ ॥ जो ऊपरी मार्गसे रुधिर गिरै उसे कफका जानो, और नीचे मार्गोसे गिरै उसे वातका जानो और जो रोमोंसे गिरै उसे पित्तका जानो ॥ ५ ॥ वातकफके कोपसे ऊपर तथा नीचे मार्गोंसें रुधिर गिरता है, उसे द्विदोषका जानो, वह जप दानके करनेसे अच्छा हो और नीचे तथा ऊपरका तथा रोममार्गोंसे जो रुधिर गिरै उसे सन्निपातका जाने वह मुनियोंने असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥

साध्यरक्तपित्त ।

रक्तपित्तं सुखं साध्यं निरुपद्रवमेव तत् ॥ सोपद्रवं तु दुःसाध्यं जपहोमौषधादिभिः ॥ ७ ॥ उद्गारे लोहितं यस्य क्षुते निष्ठीवने तथा ॥ भवेन्मूत्रे पुरीषे वा रक्तपित्ती म्रियेन्नरः ॥ ८ ॥

रक्तपित्तरोगे पथ्यम् ।

व्यायामं घर्मसंतापं तीक्ष्णोष्णकटुकानि च ॥ दिवास्वापमतिस्निग्धं रक्तपित्ती नरस्त्यजेत् ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे रक्तपित्तलक्षणम् ॥

अर्थ-जो उपद्रवरहित रक्तपित्तहो वह सुखसाध्य है और जो उपद्रवके साथ हो वह असाध्यहै सो जपके करानेसे होम और औषधि करनेसे भी नहीं अच्छाहो ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके डकार लेनेमें लोहेकी बास मारे तथा छींकनेमें थूकनेमें मूत्रमें मलमें रुधिर गिरे, वो रक्तपित्ती मनुष्य मरे॥८॥ दंड कसरत करना, धूपमें डोलना, खेद, तीखी गरम कटु वस्तुका भोजन, दिनमें सोना, अत्यंत चिकनी वस्तु रक्तपित्तवाला त्याग करदेवे ॥ ९ ॥ इति हंसराजार्थबोधिनी टीकामें रक्तपित्तरोगनिदान समाप्त हुआ ॥

यक्ष्मण उत्पत्तिः ।

यो भारं वहते नरो गुरुतरं संपीड्यते यक्ष्मणा शस्त्रास्त्रैः परिघातितो दृढधनुःप्राकर्षतः पीडितः ॥ उच्चैर्वापतितो महाश्मतरुभिः संदीपितो मर्दितो दंडैर्मुष्टिकसादिभिःपरिहतःसंधर्पितःशापितः॥१॥

अथ निदानम् ।

देहस्थो राजयक्ष्मा हृदि कफनिचयं वर्द्धते शोषतेंगं नाडीमार्गं रुणद्धि ज्वरयति मनुजं क्षीयते धातुसंधान् ॥ वीर्यौजःकांतितेजोऽनलवलपिशितं हंति पांडुं विधत्ते ऊर्ध्वं श्वासं तनोति प्रसरति हृदये क्षीणशब्दं करोति ॥ २ ॥ यक्ष्मारुक् कुरुतेरुचिं कृशतनुं सूक्ष्मं ज्वरं गौरवं देहं जर्ज्जरितं क्षतं च गलके कासाधिकं शोषणम् ॥ संतापं हृदि वेपथुं सरुधिरं निष्ठीवनं पूयभं मोहं छर्यरतिभ्रमं शिथिलतां शूलं कचिद्दारुणम् ॥ ३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य भारी बोझको उठावे, तथा शस्त्र अस्त्रसे घायलहो, दृढधनुषके खींचनेसे, कोई कारण कर पीडित होनेसे, उच्चपर्वत वा वृक्षके गिरनेसे, जलनेसे, और मींडनेसे तथा दंड कोरडा घूंसे आदिके पिटनेसे डरपनेसे महात्माओंके शापसे क्षयीरोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ देहमें क्षयीरोग स्थित ये लक्षणोंको करे है हृदयमें कफको वढावे, शरीरको सुखादेवे, नाडीके मार्गोंको रोकदे ज्वरवान् करदे, धातुके समूहको सुखायदे, वीर्य बल तेज ताकत कांति जठराग्निके बलको तथा मांसको क्षीणकरदे, पीलियाको करे, ऊर्ध्व श्वासको करे, तथा क्षीण शब्दको करे है ॥ २ ॥ अरुचि तथा कृशदेह, मंदज्वर, शरीरभारी,जर्जर शरीर गलेमें घाव, खांसी, शोष, खेद, हृदयमें कंप, रुधिर राधमिलाय थूकना, बेहोशी, रद्दकरना, मनका डामाडोल होना, भ्रम, शिथिलता, कभी महाशूल होजाय अथवा शूल जोरसे चलना ये लक्षण क्षयीरोग करै है॥ ३ ॥

विवर्णं शरीरं शकृद्रक्तमूत्रं करोत्यंगपीडां महाराजयक्ष्मा ॥ तनो शून्यतां बुद्धिनाशं प्रलापं गले घर्घरत्वं युवत्या प्रहर्षम् ॥ ४ ॥

वातकीक्षईकालक्षण ।

मन्दाग्निर्बलवीर्ययोरनुदिनं हानिः कृशत्वं वपुः कासः शुष्कतरो रुतं कृशतरं श्वासो रुचिः शोषता ॥ रूक्षो मंदतमो ज्वरः क्लम क्षुता निष्ठीवनं पूयनं छर्दिर्वा यदि वेपथुर्भवति तत् वातक्षये लक्षणम् ॥ ५ ॥

पित्तकीक्षयीकेलक्षण ।

पीडाकुक्षिशिरोगलेषु हृदये रक्तं च निष्ठीवनं शीतेम्लेऽधिकता रुचिर्ज्वलनता कंठे विगन्धिर्मुखे ॥ कासश्वाससमन्विताः कृशतनुर्भिन्नस्वरोल्पज्वरस्तत्पित्तक्षयलक्षणंनिगदितं वैद्यैःसुषेणादिभिः६

अर्थ--शरीरका वर्ण औरही प्रकारका होजाय, वारवार लाल पेशाब उतरे, शरीरमें पीडाहो, सुन्न शरीर पडजाय, तथा बुद्धिका नाश, बर्राना गलेमें घरघर शब्दहो स्त्रीके साथ रमणकी इच्छाहो, ये लक्षण महाराजयक्ष्मा करता है ॥ ४ ॥ वातकी क्षयीके ये लक्षण हैं, मंदाग्नि, बल वीर्य्यकी हानि, शरीर कृश, श्वास, मंदशब्द और खांसी, अरुचि, शोष, शरीर रूखा मंदज्वर, ग्लानि, राधका थूकना तथा उलटी करना, हृदयमें कंप ॥ ५ ॥ कांख मस्तक गला हृदय इनमें दर्दहो, रुधिर मिला थूकना, शीतकी तथा खटाईकी इच्छाहो अरुचि तथा कंठमें जलन मुखमें वास आवे, खांसी श्वासहो, कृशदेहहो, बुरी आवाज हो मंदज्वर, ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने पित्तकी क्षयीके कहे है ॥ ६ ॥

कफकीक्षयीकेलक्षण ।

शोफःकासरुजाग्निमंदजडता श्वासो रुचिर्वेपथुः शैथिल्यं स्वरभंगतांगकृशता वक्रंविगन्धान्वितम् ॥ तंद्रा कुक्षिरुजः कफं बहुतरं निष्ठीवनं पूयनं स्यात् श्लेष्मक्षयलक्षणं च हृदये कंठे दृढं श्लेष्मणः ॥ ७ ॥

असाध्यक्षयीके लक्षण ।

सहस्रदिनपर्यंतं न जीवेदिति मानवः ॥ ग्रहेण यक्ष्मणाग्रस्तोऽ साध्येनातिबलीयसा ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे वैद्यशास्त्रे हंसराजकृते यक्ष्मणोलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ–सूजन, खासी, अग्निमंद, जडता, श्वास, अरुचि, कफ, शिथिलता, गलेका बैठ जाना, शरीर पतला, मुखमें बासका आना, तन्द्रा, कांखमें दर्द, कफका तथा पीबका, थूकना, कंठका कफसे रुकना, ये कफकी क्षयीके लक्षण हैं ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यको क्षयीरूप बलवान असाध्यग्रहने ग्रसलिया हो वह मनुष्य हजार दिनतक बडी कठिनतासे जीसके ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां राजयक्ष्मरोगनिदानम् समाप्तम् ॥

अथकासरोगलक्षणम् ।

वक्त्राक्षिनासासुरजोभिपाताद्धूमोपरुद्धात् गुरुभारवाहात् ॥ रूक्षादनाद्दंडकशादिघातात् कासोतिघोषादुपजायते वै ॥ १ ॥

खांसीके लक्षण ।

प्राणः कंठगतोत्युदानपवनो हृत्स्थोतिपीडाकरः शब्दः कांस्यविभिन्नघोषसदृशो निष्ठीवनं पूयभम् ॥ कंठे घुरघुरशब्दता कृशतनुस्त्वक्पीतवर्णारुचिर्विद्वद्भिः परिकीर्तितं हि सकलं कासस्य चिह्नं महत् ॥ २ ॥

वातकीखांसीके लक्षण ।

उरसि शिरसि कुक्षौ वेदना कंठदेशे भवति बलविनाशः ष्ठीवनं तुच्छतुच्छम् ॥ गलमुखपरिशोषः शुष्ककासोंगमर्दः क्षवथुररतिरुग्रा वातकासस्य चिह्नम् ॥ ३ ॥

अर्थ–मुखमें नेत्रमें नाकमें धूलिके पडनेसे, तथा धुआंके जानेसे, भारी बोझके उठानेसे, रूखा खानेसे, दंडकोरडा आदिके पिटनेसे, अत्यन्त पुकारनेसे, खांसी पैदा होती है ॥ १ ॥ हृदयकी रहनेवाली जो प्राणवायु सो कंठमें प्राप्तहो और कण्ठकी रहनेवाली जो उदानवायु सो हृदयमें

आती है तब इस रोगीको बहुत दुःख देती है और इस मनुष्यका शब्द जैसा कांसेका फूटा बरतन बोलता है इस तरहकी आवाज हो, और कफमिश्र थूके, कंठमें घरघर शब्दहो, शरीर दबजावे त्वचा पीली होजाय, अरुचि, ये लक्षण पंडितोंने खांसीके कहे हैं ॥ २ ॥ हृदयमें मस्तकमें कांखमें कंठमें दर्द, हो बलका नाश, थोडा थोडा थूकना, गलेका तथा मुखका सूखना, सूखीखांसीका उठना शरीरका टूटना, छींकका आना, मनका न लगना, ये वादीकी खांसीके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

पित्तकीखांसीकेलक्षण ।

भवेद्वीर्यहानिर्ज्वरो वक्त्रशोषः सरक्तं च निष्ठीवनं शूलमुग्रम् ॥ तृ-षासंभ्रमस्तिक्तमास्यं विदाहो निरुक्तं परैः पित्तकासस्य चिह्नम्॥४॥

कफकीखांसीके लक्षण ।

निष्ठीवनं सांद्रकफेन युक्तं कासेन छर्दिर्बलवीर्यनाशः ॥ शीर्षे प्रपीडा जडतांगगौरवं प्रोक्तं भिषग्भिः कफकासचिह्नम् ॥ ५ ॥

त्रिदोषकीखांसीकेलक्षण ।

भवेद्यस्य निष्ठीवनं पूयवर्णं मुखान्नासिकाया विगंधिर्विवर्णम् ॥ महाश्वासवाहोंगतेजोल्पवीर्यः स कासी न जीवेत्कदाचित्सुधाभिः ६

अर्थ--वीर्य्यका नाश, ज्वर, मुखका सूखना, रुधिरमिला थूकना, उग्रशूल, प्यास,भौर, कडुवा मुख, दाह, ये लक्षण पित्तकी खांसीके पूर्वाचार्य्योंने कहे हैं ॥ ४ ॥ गाढा कफका थूकना, रदहो बल वीर्य्यका नाश, शिरमें दर्द, जडता, देहका भारी होना ,ये लक्षण वैद्योंने कफकी खांसीके कहे हैं ॥ ५ ॥ राधके वर्णके समान थूकना, मुख नाकमें वासआवे, तथा विवर्ण, महाश्वासका चलना, देह, तेज-वीर्य्य-इनका घटना, ऐसा खांसीवाला अमृतसेभी नहीं जीवे ॥ ६ ॥

असाध्यखांसीके लक्षण ।

मुखे यस्य शोथो रुचिर्वेपथुत्वं सरक्तं च निष्ठीवनं फेनिलं वा ॥ तृषा शूलमुग्रं भवेद्दुष्टगंधिः स कासी न जीवेत्सहस्रैर्भिषग्भिः वृद्धक्षीणतमः कासी साध्यो दानजपादिभिः ॥ तरुणो बलवान्साध्यः पथ्यैरौषधिभिर्बुधैः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकासलक्षणम्॥

अर्थ–मुखपर जिसके सूजनहो, अरुचि, कंप, रुधिर मिला तथा झाग मिले थूकना, प्यास, शूल दुर्गंधिका मुखमें आना, ऐसे लक्षणवाला रोगी हजार वैद्योसेभी नहीं जीवै ॥ ७ ॥ बूढा तथा जो क्षीण पडगयाहो, वह रोगी दान जपादिकोसे साध्यहै और जो रोगी तरुणहो तथा बलवान्हो वो पथ्य और औषधियोंसे पंडितोंने खांसीवाला साध्य कहाहै ॥ ८ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांकासरोगलक्षणं समाप्तम् शुभम् ॥

अथ हिक्कालक्षणम् ।

हिक्कारोगकी उत्पत्ति ।

रजोधूम्रप्रपातात् मुखे नासिकायां गरिष्ठान्नपानाज्जलस्यावगाहात् ॥ श्रमादध्ववेगात्तृषार्तेररुच्या भवेयुर्नृणां पंचधा रौद्रहिक्काः ॥ १ ॥ प्राणोदानसमानकोपजनिता हिक्कांत्रवृद्धिप्रदा कष्टं हंति करोति जन्मसमयेबालस्य वृद्धिंसुखम् ॥ तेजोजोबलवीर्यवृद्धिमधिकां हर्षं रुचिं वर्द्धयेद्रक्तास्यं तनुकंपनं नयनयोर्विस्फारमार्द्रं गलम् ॥ २ ॥ तारुण्ये वयसि स्थिते कफमरुज्जाता न हिक्का हिता वैरस्यं वदने गले सरसतां कुक्षौ प्रपीडारुजम् ॥ आटोपं हृदये रुणद्धि पवने मर्माणि संतोदते छर्दिं सा कुरुते रतिं वितनुते हृल्लासमुल्लासते ॥ ३ ॥

अर्थ–धूलि धुआ इनका मुख और नाकमे जानेसे, गरिष्ठ अन्नके भोजनसे, जलमें बहुत देरके रहनेसे, श्रमसे, रस्तेके चलनेसे, चौदह वेगोंके रोकनेसे, प्याससे, अरुचिसे, मनुष्योंके पांच प्रकार का घोर हिचकीका रोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ प्राण उदान समान पवनोंके कोप करनेसे हिचकी आंतोंको बढावे, कष्ट करै, तथा रोगीको मारती है और बालकके जन्मसमय बालकको बढावे तथा सुखदे, और तेज बलवीर्य्यकी बढवारको करै तथा हर्ष रुचिको बढावै मुखको लाल करदे शरीरको कँपावै नेत्रोंको फटेसे करदे कंठको गीलाकरदे ॥ २ ॥ तरुण अवस्थामें जो वातकफसे पैदा हुई हिचकी सो अहितहै मुखको विरस करदे, गलेमें सरसता करदे, कोंखमें पीडाकरे, छातीको घेरले श्वासको रोकदे मर्ममर्ममें पीडाकरे वमन तथा मनका न लगना, खांसी, मूर्च्छा रद, ये लक्षण करै॥३॥

वार्द्धक्ये वयसि स्थिते सति महाहिक्का यदा जायते पित्तश्लेष्ममरुद्भवा प्रकुरुते पीडां गले मस्तके ॥ शूलाध्मानतृषारुचिं वितनुते हृल्लासहृत्पीडनं पंचत्वं वितनोति रोगमखिलं प्राणा-

न्निहंति तुलम् ॥ ४ ॥ उदानवायुकोपेन पंचहिक्का भवंतिताः ॥ कुर्वन्ति विविधान् रोगान् तासां नामानिसंब्रुवे ॥ ५ ॥ गम्भीरा महती तथा च यमला क्षुद्रान्नजा पंचधा गम्भीरोदरगर्जनी ज्वरकरी मर्माणि संतोदृत्ते॥ सर्वोपद्रवकारिणी वलहरी नाभेः प्रवृत्ता हि सा अन्याया महती करोति च तनौ कंपं शिरःपीडनम् ॥ ६ ॥

अर्थ—वृद्ध अवस्थामें जो हिचकी हो वो वात पित्त कफ तीनों दोषोंसे पैदा होतीहै वो घोर हिचकी कंठमें तथा शिरमें दर्दको करै है, शूल, अफरा, प्यास, अरुचि, खाली रद, हृदयमें दर्द, और सबरोग ये लक्षण हों तो मनुष्य जल्दी मरजावे ॥ ४ ॥ उदान पवनके कोपसे पांच तरहकी हिचकी पैदा होतीहै और अनेक तरहके रोगोंको पैदा करतीहै उन पाचोंके नाम कहते है ॥ ५ ॥ १ गंभीरा, २ महती, ३ यमला, ४ क्षुद्रा, ५ अन्नजा; प्रथम गंभीराके लक्षण कहते हैं गंभीरा पेटमें गुड़गुड़ाहट करै, ज्वरको करे, मर्ममर्ममें पीडाकरै और सब उपद्रवोंको करै, बलका नाशकरै, यह हिचकी नाभिसे उठती है. अब दूसरी महतीका लक्षण कहतेहै शरीर कांपै, शिरमें दर्दहो ॥ ६ ॥

वातश्लेष्मभवाकरोति यमला हिक्कांत्रपीडारुजौ ग्रीवातालुविभेदिनी बलहरी ग्रीवाशिरःकंपनम् ॥ क्षुद्रानाभितलोद्भवारसचयं चोर्ध्वंनयेत्कष्टदा वैरस्यं वदनेन्नजा वितनुते गात्रे गुरुत्वं तथा॥७॥

इति भिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे हिक्कालक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—तीसरी वात कफसे पैदाहुई जो यमला नाम हिचकी सो आंतोंको पीडा दे, कंठतालुमे दर्दकरै, बलका नाशकरै, नाडीशिर इनको कँपावै, चौथी जो क्षुद्रानामकर प्रसिद्ध हिचकी है सो नाभीके नीचे उठती है, वो रसको ऊपर लेजातीहै अर्थात् उलटी करावै और कष्टको पैदाकरै, मुखको विरस करती है, पांचवी जो अन्नसे पैदाहुई हिचकी सो शरीरको भारी करती है ॥ ७ ॥ इति हंसराजभाषाटीकामें हिक्कालक्षणसमाप्तहुआ ॥

श्वासरोगनिदानम् ।

प्राणोदानसमानकोपजनितः श्वासो रुपावर्द्धते कुद्धोर्ध्वं व्रजते मुहुर्मुहुरथो दोधूयमानं नरम्॥निद्रां हंति महातृषां वितनुते शीत-

ज्वरं कंपनं प्रस्वेदं कुरुते तनौ विकलता दाहं भ्रमं विभ्रते ॥१॥ शुष्कास्यं कुरुते रुणद्धि परतः स्रोतांसि रक्ताननं हृत्कंठोष्ठमुखेषु शोषमरतिं श्वासो रुचिं नाशते ॥ आध्मानं तनुते शिरां विधमते नॄणां तनुं कंपते शूलं वेदनया युतं विकलतां शब्दं परं रुंधते ॥२॥ श्वासः स्वाभाविको मंदो ह्यतिश्वासोरुजाकरः॥ मृतिप्रदो महाश्वासस्त्रिविधं श्वासलक्षणम् ॥ ३ ॥

अर्थ--प्राण, उदान, समान इन तीनों पवनोंके कोप करनेसे क्रोधकर बढती और ऊपरनीचे विचरती है कभी ऊपर चढे कभी नीचे उतरे नींदकानाश, तथा घोर प्यासको पैदाकरे, शीतज्वर, कंप, पसीना, इनको पैदाकर शरीरमें बेकली, दाह, भौंर, ये लक्षण श्वासरोग करताहै ॥ १ ॥ श्वास मुखको सुखावे, नाडियोंके मार्गको रोकदे, चहेरेको लाल करताहै, हृदय, कंठ, ओट, मुख इनमें शोषहो, मनका न लगना, अरुचि, अफरा, नाडीनको धमावे, शरीर कँपावे, वेदनायुक्त शूल, तथा वेकली और आवाजको निहायत कम करती है ॥ २ ॥ श्वास जो है सो स्वभावसेहीं मंदहोताहि परंतु अतिश्वास रोग करता है और महाश्वास मौतका देनेवाला है ये तीनप्रकारके लक्षणहै॥ ३ ॥

स्वाभाविकश्वासकेलक्षण।

श्वासःसंकुरुते बलं मृदुतनुं स्वाभाविकः सौख्यदो धैर्यं शौर्य्यमदोत्सवं सुभगतां शक्तिं पवित्रं नरम्॥ऊर्ध्वाधोगतिरुत्तमा पवनयोर्दुर्गंधिनिर्णाशकः सौगंधिं सुकुमारतां वितनुते हर्षं परं वर्द्धते॥४॥

अतिश्वासकेलक्षण।

अतिश्वासः कासं वितरति भृशं शूलमरतिं बलं वीर्यं तेजो हरति कुरुते छर्दिमरुचिम् ॥ मुखं घ्राणं कण्ठं तुदति वहते श्लेष्ममधिकं तृषाध्मानं हिक्कां तनुषु गुरुतां स्वेदमधिकम् ॥ ५ ॥

महाश्वासकेलक्षण।

संज्ञां नाशयते रुणद्धि सततं स्रोतांसि विष्टम्भनं वाग्बंधं कुरुते गलेकफचयं मर्माणि संतोदते॥ औद्धत्यं नयनं तृषां च हृदये दाहं मुखे शोषणं नाडीस्त्रोटयते भ्रमं वितनुते श्वासो महान् प्राणहा॥६॥

इति श्रीभिषकचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे श्वासलक्षणं समाप्तम्॥

अर्थ–स्वाभाविक श्वास बलको करै तथा देहको कोमल रक्खे, सुखको दे, धैर्य तथा पराक्रम, मद, मंगल, सुंदरता, शक्ति पवित्रताको दे और पवनका ऊपर नीचेका आना जाना श्रेष्टहै और दुर्गन्धको नाश करती है, और सुगंधको दे, तथा सुकुमारपना और हर्ष इनको बढावे ॥ ४ ॥ अतिश्वाससे खांसी, शूल, मनका, न लगना हो, बलवीर्य तेजको घटावे, वमन, अरुचि मुख नाक कंठमें पीडाहो, कफ अधिक गिरे, प्यास अफरा, हिचकी, शरीरभारी, पसीना इनको अधिक करै ॥ ५ ॥ प्राणोंकी नाशक, महाश्वास ये लक्षण करती है संज्ञाका नाश, और नसोंके मार्गको रोकदे मलका न उतरना, जवानका बन्दहोना, कंठमें कफका जोर, मर्ममर्ममें पीडा, फटे फटेसे नेत्र, प्यास, हृदयमें दाह हो, मुखका सूखना, नसोंका टूटना, मौरका आना ॥६॥ इति हंसराजबोधिन्यां श्वास लक्षणं समाप्तम् ॥

स्वरभेदलक्षणम् ।

अत्युच्चभाषाध्ययनाभिघातैस्तैलादिभक्षैरतिदुष्टपानैः ॥ संकोपितः पित्तकफानिलास्ते कुर्वन्ति भिन्नस्वरमेवनॄणाम् ॥ १ ॥ संभिन्नकांस्यस्वरतुल्यशब्दाः केचित्तथा गर्दभतुल्यघोषाः॥ अजाविछुच्छुंदरिकाकशब्दं मुखे नेत्रयोः श्यामता मूत्रवर्चाः ॥ २ ॥ क्वचिद्दीर्घशब्दं खरोष्ट्राश्वतुल्यं वचः प्रस्थलं वातलं कंठपीडाम्॥३॥

अर्थ–उच्चस्वरके पढनेसे, चोटके लगनेसे, तेल खटाई आदिके खानेसे, दुष्ट जलके पीनेसे, कोपको प्राप्तभये जो वात पित्त कफ सो मनुष्योंके स्वरभंग रोग पैदा करतेहैं ॥ १ ॥ जैसे फूटे हुये कांसेकीसी आवाजहो, तथा गधेकीसी आवाजहो, अथवा बकरीके शब्दकीसी आवाजहो, छछूंदरकीसी आवाजहो, तथा कौवेकीसी आवाजहो, मुख नेत्र कालेहों, पेशाब ज्यादाउतरे ॥ २ ॥ कभी बडा शब्द करे, गधेकी ऊटकी, घोडेकी, आवाजके समान कंठमें दर्द ये वातके स्वरभंगरोगके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेस्वरभंगलक्षण ।

स्वरः पित्तभिद्भिन्नकांस्यप्रघोषः करोत्यंगदाहं मुखेत्यंतशोषम् ॥ तनौ नेत्रयोः पीततां मूत्रकृच्छ्रन्तृषां कंठपीडां रुजं क्षीणगात्रम्॥४॥

कफकेस्वरभंगकालक्षण ।

प्रभिन्नः स्वरः श्लेष्मणा क्षीणघोषो गलं श्लेष्मरुद्धं गुरुत्वं शरीरे ॥ गलेघर्घरत्वं रुतं शुभ्रनेत्रं मुहुः ष्ठीवनं कासमुग्रं करोति ॥५॥

असाध्यस्वरभंगकालक्षण।

अंतर्गतः स्वरो यस्य वहिर्नायाति कर्हिचित् ॥ वातपित्तकफै-
र्भिन्नः स रोगी नैव जीवति ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैकल्यशास्त्रे स्वरभेदलक्षणम्।

अर्थ–पित्तका स्वरभंग फूटे कांसेकीसो आवाज करै, देहमें दाह, मुखका सूखना शरीर तथा नेत्रपीले, मूत्रकृच्छ्र, प्यास, कंठमें दर्द, शरीरका टूटना, ये लक्षण करताहै ॥ [illegible] ॥ कफका स्वरभंग आवाजको मंद करै, कंठको कफसे रोकदे, शरीर भारी, गलेमें घरघर शब्दहो, पीडाहो, सफेद नेत्र हों, बार बार थूकना, घोरखांसीको करे ॥५॥ जिस स्वरभंगवाले, रोगीका स्वर भीतरीही रहे और बाहर न निकले और त्रिदोषसे हुआ हो वह रोगी नहीं जीवे ॥ ६ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां स्वरभेदलक्षणं संपूर्णम् ॥

अरोचकरोगकीउत्पत्तिलक्षण।

अरोचकः पित्तमरुत्कफैर्भवेद्भयेन शोकेन रुषांगपीडया ॥ रु-
जातिबीभत्सविलोकनेन वा अहृद्यदुष्टाशनपानपूर्तिभिः ॥ १ ॥

वातअरोचकरोगकालक्षण।

अरोचके वातसमुद्भवे हिते भवंति चिह्नानि मुखे कषायता ॥
वपुस्तु रूक्षं कृशतांगगौरवं ज्वरोम्लताशूलमथांगपीडनम् ॥ २ ॥

पित्तकेअरोचककालक्षण।

अरोचकः पित्तभवः करोति दाहं प्रसेकं कटुकत्वमास्ये ॥ श-
रीरबाह्यांतरयोश्च शोथं पानेषु भक्ष्येष्वरुचिं कृशत्वम् ॥ ३ ॥

कफकेअरुचिरोगकालक्षण।

अरोचकः श्लेष्मभवो विधत्ते गुरुत्वमंगेषु जडत्वमार्तिम् ॥ क्षार-
त्वमास्ये रुचिमोहशैत्यं गले कफं पांडुरुजं शरीरे ॥ ४ ॥

वातकीअरुचिमेंपथ्य ।

अरोचकी मरुद्भवस्त्यजेत् प्रवातसेवनम् ॥ श्रमंजलावगाहनं कषायमम्लमामिषम् ॥ ५ ॥

पित्तकीअरुचिमेंपथ्य ।

पित्तात्मके त्यजेत्तीक्ष्णं विदाहि लवणाधिकम् ॥ व्यायामं वह्निसंतापं विरसं कटुकं रसम् ॥ ६ ॥

अर्थ—भयसे, शोकसे, क्रोधसे, शरीरकी पीडासे बुरीवस्तुके देखनेसे मनको बुरालगे ऐसे भोजनसे तथा दुष्टवस्तुके पीनेसे अरोचक रोग वात, पित्त, कफके कोपसे पैदा होता है ॥१॥ वादीसे पैदा हुआ अरोचक रोग उसके ये लक्षण हैं, मुख कडुवा, शरीररूखा, तथा कृश, तथा भारी, और ज्वर, तथा खट्टा मुख, शूल, शरीरमें पीडा ॥ २ ॥ पित्तसे पैदा हुआ अरुचि रोग उसके ये लक्षण हैं, दाह हो, लारका बहना, कडुवा मुख, शरीरका बाहर भीतरसे सूजना, खानेमें तथा पीनेमें अरुचि, शरीर कृश ॥३॥ कफसे पैदा हुये अरुचि रोगके ये लक्षण हैं, शरीर भारी, तथा जड और दुःखहो, मुख खाराहो, तथा श्वास, अरुचि, बेहोसी, शीतका लगना, कंठमें कफ तथा शरीरमें पीलिया ॥ ४ ॥ वादीकी अरुचिवाला हवाका खाना, श्रमका करना, जलसे स्नान आदि और कसैली तथा खट्टी वस्तु और मांसका खाना त्यागदे ॥ ५ ॥ पित्तकी अरुचिवाला मनुष्य चरपरी, दाहकरनेवाली, ज्यादा नोनका खाना, दंडकसरतका करना, अग्निका तापना, विरस, तथा कडुई वस्तुका खाना, त्यागदे ॥ ६ ॥

कफकीअरुचिमेंपथ्य ।

त्यजेदरोचकीपिष्टंतैल्यंशैत्यंकफात्मकः ॥ गुरुत्वंदधिमिष्टान्नंवृन्ताकंस्निग्धभोजनम् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे अरोचकलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ—कफकी अरुचिवाला पिसा अन्न, तेलका पदार्थ, तथा शीतल वस्तु, कफके करनेवाली वस्तु, भारीवस्तु, दही, मीठाअन्न, बैंगन, चिकनाभोजन, ये त्यागदे ॥ ७ ॥ इति हंसराजार्थबोन्यामरोचकरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

छर्दिरोगलक्षणम्।

दोषैर्व्यस्तैः समस्तैर्वा वातपित्तकफात्मकैः ॥ भवंति छर्दयः पंचबीभत्सानां विलोकनात् ॥ १ ॥ स्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरतिद्रवैर्लतादिभक्ष्यैरतिभोजनै रुषा॥अत्यंबुपानैर्भयनिंद्यदर्शनैश्छर्दिर्भवेदध्वपरिश्रमैः परैः ॥ २ ॥

वातकीछर्दिकेलक्षण।

छर्दिर्वातभवाकरोति विविधान् रोगानलं भोजनी कृष्णाभा हरितारुचिः शिथिलतां हृत्पार्श्वपीडां भ्रमम् ॥ उद्गारं स्वरभेदनं च महतीं जृम्भां गले पीडनं शूलं रूक्षवपुस्तृषां च शमनं वह्नेस्तनौ शोषणम् ॥ ३ ॥

अर्थ–वात, पित्त, कफसे तथा सन्निपातसे तथा, घुरींवस्तुके देखनेसे छर्दि उलटीका रोग पांचप्रकारका होताहै ॥ १ ॥ चिकनी सूगली नोनकी पतली तथा लता आदिके खानेसे, बहुत भोजनसे, क्रोधसे, बहुत जलके पीनेसे, डरके लगनेसे, सूगली वस्तुके देखनेसे, बहुत रास्ताके चलनेसे, अपर कहिये कृमिके पडनेसे, स्त्रीके गर्भ रहनेसे, छर्दिनाम रद्दकारोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ जा मनुष्य बहुत भोजनकरे उसके वातकी छर्दी अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करतीहै, तथा काले रंगकी तथा हरे रंगकी हो, और शिथिलताको करे, हृदयमें पसवाडोंमें पीडाकरे, भ्रमकोकरे, डकारबुरीके आना, स्वरभंग, घोर जंभाई, कंठमें पीडा, शूल, शरीरमे रूखापन, प्यासका अवरोध, शरीरमें आगसी जले, और शोषको करै ॥ ३ ॥

पित्तकीछर्दिकेलक्षण।

छर्दिः पित्तसमुद्भवारुणनिभा पीतप्रभा सा क्वचित् कोष्णादाहयुताङ्गपीडनपरा तृट्शूलमूर्च्छान्विता ॥ हृत्कंठोष्ठमुखेषु तालुरसनाशीर्षेषु पीडाप्रदा संतापभ्रमकारिणी रुचिहरी श्लेष्मांशका सा भवेत् ॥ ४ ॥

कफकीछर्दिकेलक्षण।

छर्दिः श्लेष्मसमुद्भवा शितनिभा फेनान्विता मेदुरा क्षारास्यं कुरुते रुचिं वितनुते तंद्रां प्रसेकं वमिम् ॥ आलस्यं जडतां वपुर्गु-

रुतरं लालां च निष्ठीवनं रोमांचं हृदि वेपथुं मुखमलं कासं तनौ शीतताम् ॥ ५ ॥

सन्निपातकीछर्दिकेलक्षण ।

छर्दिः पित्तमरुत्कफैः प्रजनिता नानानिभाकष्टदा श्वासं कासयुतं तनोति कृशतां दाहं तृषाकंपनम् ॥ हृल्लासं तमकं वपुर्विकलता मूर्च्छामतीसारकं शूलं मूत्रविरोधनं ज्वरतमं हिक्कां विवर्णं वमिम् ॥ ६ ॥

अर्थ–पित्तकी छर्दिरोगके ये लक्षणहै, लालरंग तथा पीले रंगकी तथा गरमहो, दाहयुत, शरीरमें पीडा, प्यास, शूल, मूर्च्छा, हृदय, कंठ, ओठ, मुखतालु, जबान, शिर इनमें पीडाहो, खेद, भ्रम, रुचिको नाशकरे कफको नाशक हो ॥ ४ ॥ पित्तकी छर्दिरोगके ये लक्षण हैं, सपेदरंगहो, झागसे आच्छादितहो, चिकनी, खारामुख, अरुचि, तन्द्रा पसीनेका आना, रद, सुस्ती, जडपना, देहभारी, लारका गिरना, बारबार थूकना, रोमांच, हृदयमें कंप, मुखमलीन, खांसी, शरीरको शीतलगें ॥ ५ ॥ त्रिदोषसे पैदाहुई जो छर्दि उसका चित्रविचित्र रंगहो, कष्टको पैदाकरे, श्वास, खांसी, तथा शरीरमें कृशता, दाह, प्यास, कंप, खाली उलटी, तमक, देहमें बेकली, मूर्च्छा, अतीसार, शूल, मूत्रका रुकना, ज्वर, अंधेरेका आना, हिचकी, वर्ण औरही तरहका और वमन ये लक्षण हों ॥ ६ ॥

छर्दिरोगकेउपद्रव ।

कासो हिक्कातृषाश्वासोहृद्रोगस्तमकोज्वरः ॥ मूर्च्छावैचित्त्यमित्येतेज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः ॥ ७ ॥

छर्दिरोगकासाध्यासाध्यलक्षण ।

छर्दिः सोपद्रवाऽसाध्या रक्तपूयवहा तथा ॥ नोपद्रवाभवेत्साध्या ज्ञात्वा भैषज्यमाचरेत् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे छर्दिलक्षणं संपूर्णम् ॥

अर्थ—खांसी, हिचकी, प्यास, श्वास, हृदयमें पीडा, तमक, ज्वर, मूर्च्छा, वेहोसी ये छर्दि रोगके उपद्रव हैं ॥७ ॥ उपद्रव सहित छर्दिरोग असाध्यहै और जिसमें रुधिर और रांध गिरती हो वोभी असाध्यहै, और जिसमें उपद्रव न हो वो साध्य है ऐसे साध्य असाध्य परीक्षा कर पीछे दवादे ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां छर्दिरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथतृष्णालक्षण ।

कफोद्भवापित्तभवा मरुद्भवा त्रिदोषजा भुक्तभवा क्षतोद्भवा ॥ भयश्रमाभ्यां जनिता क्षयोद्भवा भवंति तृष्णाष्टविधाश्च दुःसहाः ॥ १ ॥

तृष्णारोगकीउत्पत्ति ।

वाताशनाध्वश्रमतापरक्तैः स्रोतस्त्वपांवाहिषु शुष्कनेषु ॥ हृत्कंठतालूनि दहंति दोषास्तृषा तदा संजनिता नराणाम् ॥ २ ॥

वातकीतृष्णारोगकालक्षण ।

तृष्णा वातसमुत्थिता च कुरुते स्रोतो निरोधं श्रमं शोषं शंख शिरोगलेषु विरसं वक्त्रं निरुत्साहसम् ॥ संकोचं परितस्तनौ प्रलपनं चित्तभ्रमं रूक्षतां शीतोदैः परिवर्द्धिता वितनुते हिक्कामजीर्णं ज्वरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—तृष्णा अर्थात् प्यासका रोग आठतरहकाहै, ऐसे वैद्य कहते हैं १ कफसे २ पित्तसे, ३ वादीसे, ४ सन्निपातसे, ५ भोजनके करनेसे, ६ घावसे, ७ भय और श्रमसे, ८ क्षईरोगके होनेसे ॥ १ ॥ वातसे, भोजनके करनेसे, मार्गके चलनेसे, श्रमके करनेसे, गरमीसे रुधिरके विगडनेसे, कुपितहुए जो वात, पित्त, कफ सो जलके बहनेवाली नाडीको सुखाकर हृदय, कंठ, तालूमें दाहको पैदाकरै, तब मनुष्योंके तृषारोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ वातकी तृषा ये लक्षण पैदा करती है, बहिरापना परिश्रम कनपटी, मस्तक, गला इनमें शोष, मुखमें विरसता, तथा साहसहीन, देहमें संकोच बकना, चित्तमें भ्रम, तथा देहरूखा शीतलजलके पीनेसे जो तृषा पैदाहो वो हिचकी और अजीर्णज्वरको वढावे ॥ ३ ॥

पित्तकीतृषारोगकालक्षण ।

आधिव्याधिसमन्विता भयकरी पित्तात्मिकाशोषणी तृष्णादा-

हर्षविवर्धिनी सुखहरी कार्यस्य विध्वंसनी ॥ उष्णत्वे विदधाति दोषमखिलं शीते सुखं विश्रुते रक्तास्यं कुरुते मुखे विरसतां मूर्च्छां प्रलापं भ्रमम् ॥ ४ ॥

कफकीतृष्णाकेलक्षण ।

मूत्रावरोधं जठराग्निनाशं निद्रां विधत्ते गुरुतां शरीरे ॥ हृत्कंठपीडां वितनोति कासं श्लेष्मात्मिका छर्दिकरी च तृष्णा ॥ ५ ॥

त्रिदोषजनिततृषाकेलक्षण ।

त्रिदोषजनिता तृष्णा तेजोवीर्यबलौजसाम् ॥ नाशिनी रुक्करी घोरा मनोक्षप्राणहारिणी ॥ ६ ॥

अर्थ–आधि कहिये मानसिकरोग, व्याधि कहिये ज्वरादिरोग तथा भय पैदा करे, शोष, दाहको बढावे, सुखको दूरकरे, देहको विध्वंस करे, गरमीसे सकल रोगपैदाकरे और शरदीके होनेसे सुख मालूमहो, लाल और रसरहित मुखहो, मूर्च्छा, प्रलाप भ्रम, ये लक्षण पित्तकी तृष्णाके हैं ॥ ४ ॥ मूत्रका रुकना तथा मंदाग्नि, नीदकाआना, शरीरभारी, हृदयमें, कंठमें पीडा, खांसी, रद्द, ये लक्षण कफकी प्यास रोगकेहैं ॥ ५ ॥ सन्निपातकी तृषा तेज वीर्य बल ताकतका नाश करनेवाली है घोर रोग पैदाकरे मन और इंद्रियोंकी हरनेवाली है ॥ ६ ॥

तृषारोगमेंसाध्यासाध्यविचार ।

अल्पदोषकरीतृष्णा श्रमघाताध्वभोजनैः ॥ जाताशीतोदपानेन नाशमेति गरीयसी ॥ ७ ॥

अथतृष्णारोगेपथ्यम् ।

गुर्वन्नभोजनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं लवणामिषम् ॥ व्यायामं सूर्यसंतापं तृष्णावान् परितस्त्यजेत् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे तृष्णालक्षणम् ॥

अर्थ-जो श्रमसे चोटसे रास्ताके चलनेसे भोजनसे तृषा अर्थात् प्यासलगै वो साध्यहै, और जो ठंढेपानीके पीनेसे प्यासलगै, सो प्राणकी नाश करनेवाली जाननी चाहिये ॥ ७ ॥ भारी अन्नका भोजन, चिकनी वस्तु, तीखी, गरम, नोनकी, मांस, दंड कसरतका करना, सूर्यका तेज, ये तृषारोगवाला त्यागदे ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां तृष्णारोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

मूर्च्छारोगकी उत्पत्ति ।

क्षीणस्य गतसत्त्वस्य विरुद्धाहारसेविनः ॥ धाविनः सक्षतस्यापि बीभत्सस्य विलोकिनः ॥ १ ॥ तस्य नाडीषु सर्वासु दोषाः सर्वे प्रकोपिताः ॥ रुधा विशंति कुर्वंति मूर्च्छां वैचित्त्यकारिणीम् ॥ २ ॥ वातपित्तकफैर्मद्यैः शोणितेन विषेण च ॥ मूर्च्छा भवति सा कुर्यान्नरं काष्ठमिवानिशम् ॥ ३ ॥

अर्थ-जो मनुष्य क्षीणहो, ताकतरहितहो, विरुद्ध आहारका खाने वालाहो, दौडने वाला हो, और जिसके शरीरमें घावहो, घिनायदी वस्तुदेखीहो ॥ १ ॥ ऐसे पुरुषके कोपको प्राप्तहुये जो तीनों दोष सो सर्व नाडियोंमें कुपितहो धसकर बेहोसी करनेवाला मूर्च्छारोग पैदा करते है ॥ २ ॥ सो मूर्च्छारोग वात, पित्त, कफ और सन्निपातसे और मद्यके पीनेसे रुधिरसे विषभक्षण करनेसे सात प्रकारका होताहै, वो मूर्च्छा मनुष्यको काष्टकी तरह पृथ्वीपर गेर देती है ॥ ३ ॥

वातकीमूर्च्छाका लक्षण ।

दृष्ट्वाकाशं श्यामनीलाबभासं पश्चादुर्व्यां वातजामेति मूर्च्छाम् ॥ यो मर्त्यस्तं पीडयंतीति रोगा जृम्भाकंपश्वासतृष्णाप्रसेकाः ॥ ४ ॥

पित्तकीमूर्च्छाका लक्षण ।

पीतारुणं नभः पश्यंस्तमः पश्यंस्ततः परम् ॥ नरो यः पतते भूम्यां तां मूर्च्छां पित्तजां वदेत् ॥ ५ ॥ जंतौ प्रबुद्धे तमसि प्रनष्टे मूर्च्छा तु पित्तप्रभवा करोति ॥ प्रस्वेदतृष्णापरिवेपथुत्वं दाहं च तापं मुखशोपमार्तिम् ॥ ६ ॥

अर्थ-जो मनुष्य आकाशको काला नीला देखे, फिर धरतीमें गिरपडे और जिसको जँभाई, कंप, प्यास, पसीनेहों, उसको वातकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ४ ॥ प्रथम पीला, लाल आकाशको

देखे, फिर अंधकार मालूमहो और तिस पीछे धरतीमें गिर पडे उसको पित्तकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ५ ॥ और जब मनुष्यको होस होजाय आंखोंके आगेसे अंधकार हट जावे, तबपसीना आवे प्यास लगे, कंपहो, दाहहो, ज्वरहो, मुख शोषहो, पीडाहो, उस मूर्च्छाको पित्तकी कहतेहैं ॥ ६ ॥

कफकीमूर्च्छाका लक्षण।

शुभ्रं नभो नरः पश्यन्मूर्छयोर्व्यां पतेद्यथा ॥ निश्चेष्टो दंडवन्नूनं तां विद्याच्च कफात्मिकाम् ॥ ७ ॥ प्रबुद्धे मनुजे कुर्यान्मूर्च्छा निद्रां कफात्मिका ॥ शैथिल्यं गौरवं तंद्रां हृल्लासं कासतृड्ज्वरम् ॥ ८ ॥

सन्निपातकीमूर्च्छाके लक्षण।

त्रिदोषजनिता मूर्च्छा सर्वरोगवहा नरम् ॥ पातयत्याशु मोहाब्धौ विना बीभत्सदर्शनम् ॥ ९ ॥

अर्थ--जो मनुष्य आकाशको धौलादेखे फिर गिरपडे चेष्टारहित लकडीकीसीतरह उस मूर्च्छा-को कफकी कहते हैं ॥ ७ ॥ जब मनुष्य सावधान होजाय तब नींद आवे, तथा शिथिलता होय, देह भारीहो, तंद्राहो, सूखी रद आवे, खांसीहो, तथा प्यासहो, ये कफकी मूर्च्छाके लक्षणहैं ॥८॥ त्रिदोष अर्थात् संनिपातसे पैदा हुई मूर्च्छा सर्वरोग प्रकट करै, और मनुष्यको मोहरूपी समुद्रमें गेरदेवे, विना सूगली वस्तुके देखे जो पैदाहो उसको सन्निपातकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ९ ॥

रुधिरकीमूर्च्छाका लक्षण।

घ्राणेन रक्तस्य च दर्शनेन मूर्च्छंति ये स्त्रीजनभीरुबालाः ॥ बुद्धेषु चिह्नानि भवंति तेषां मोहोंगकंपोतिभयं जडत्वम् ॥ १० ॥

मद्यकीमूर्च्छाका लक्षण।

मद्येन मूर्च्छा जडतां करोति नेत्रेरुणत्वं शिथिलं शरीरम् ॥ हर्षं प्रलापं परिबुद्धिनाशं निद्रां वमित्वं भ्रमतां प्रसेकम् ॥ ११ ॥

विषकीमूर्च्छाका लक्षण।

नासाकर्णमुखेषु शोषमधिकं मूर्च्छा विषात्संभवा दाहं तीव्रतरं दधाति हृदये कंठेतिपीडारतिः ॥ दृष्टिं नाशयते करोति विकलं देहस्य विक्षेपणं तेजो वीर्यबलौजसां प्रतिपलं विध्वंसिनी शोषणी ॥ १२ ॥

अर्थ--नाकसे रुधिरके गिरनेसे स्त्रीजन तथा डरपोक तथा बालक ये देखकर मूर्च्छाको प्राप्तहोते हैं; होस होनेपर ये लक्षण होते हैं, मोह, शरीरका कांपना, डरका, लगना, तथा जडत्व ॥ १० ॥ बहुत व दुष्टमद्यके पीनेसे जो मूर्च्छा हुई उसके ये लक्षण है जडत्व, और नेत्रलाल, शरीर शिथिल, हर्ष, बकना, बुद्धिका नाश, निद्रा, वमन, भ्रम, मुखसे लारका गिरना, ये ॥ ११ ॥ विषके खानेसे व सूंघनेसे जो मूर्च्छाहो उसके ये लक्षणहैं नाक, कान, मुख इनका सूखना, तीव्रदाह, हृदयमें, कंठमें दर्द, मनका न लगना, नेत्रोंसे कम देखना, बेकली, देहका पटकना, तेज, वीर्य, बलताकत इनका नित्यघटना और शोषहो ॥ १२ ॥

क्रमकेलक्षण ।

व्यायामेन विना काये श्रमः स्याच्छ्वासवर्जितः ॥ इंद्रियाणांहि वृत्तिघ्नः क्रमः सैवोच्यते बुधैः ॥ १३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे मूर्च्छा लक्षणंसमाप्तम् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके दंडकसरतके विनाही श्वासरहित श्रमहो और इंद्रियोंका जो स्वभाव तिसको पलटदे उसको पंडित क्रमरोग कहते हैं ॥ १३ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां मूर्च्छारोगनिदानं संपूर्णम् ॥

दाहरोगनिदानम् ।

देहे शोणितमुच्छ्रितं प्रकुरुते दाहं महादारुणं ह्यंगं यं भजते तमेव दहते बाह्यो त्वचं चांतरैः ॥ मांसं शोणितनाडिकास्थिनिचयाञ्श्लेष्मं वसां मज्जिकां सर्वांगेषु गतं दहत्यवयवं सर्वं रुषाहर्निशम् ॥ १ ॥

धातुक्षीणदाहकालक्षण ।

क्षीणे धातावुत्थितो घोरदाहो मूर्च्छां कुर्यान्मर्मसंघातं ज्वरार्तिम्॥तृष्णांशोषं क्षीणशब्दं कृशत्वं वैद्यैरुक्तोऽसौ नरः कष्टसाध्यः ॥२॥ मर्यादादधिकं रक्तं देहसंस्थितमामयम्॥ लोहगंधं दहत्यंगं पित्तवातस्य भेषजम् ॥ ३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे दाहलक्षणं संपूर्णम् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके देहमें रुधिर बढताहै, उसके महादाहका रोग पैदा करताहै, जिस अंगमें रुधिर प्राप्तहो उस अंगको दहनकरे, और भीतर दाहके होनेसे बाहरकी त्वचामें दाहहो, और मांस रुधिर नाडी हड्डी इनके समूहको तथा कफ और वसाको: मज्जाको दहनकरे, सर्वांगमें प्राप्तदाह सब अंगके अवयवोंको कोध करके निरंतर दहनकरे ॥ १ ॥ जिस मनुष्यकी धातु क्षीणहो उसके घोर दाह रोग पैदाहो उसके ये लक्षणहैं, मूर्च्छाहो, मर्ममर्ममें पीडाहो, ज्वरहो, प्यास, शोष मंदशब्दहो और कृशदेहहो, वो रोगी वैद्योंने कष्टसाध्यकहाहै ॥ २ ॥ मर्य्यादासे अधिक रक्त देहमें बढताहै तब दाहरोग होताहै और जब रुधिर निकले तब लोहेकीसी बासआवे, सबदेहमें दाहहो, उसमें वातपित्तकीदवाई करना चाहिये ॥ ३ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां दाहरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

मदात्ययरोगकालक्षण ।

दोषा विषस्य ये सर्वे सुधायाश्चापि ये गुणाः ॥ ते मद्ये परितिष्ठंति युक्त्या युक्त्या पिबेन्नरः ॥१॥ अयुक्त्या यो पिबेन्मद्यं तस्य रोगो भवेद्भृशम् ॥ तस्माद्युक्त्या पिबेन्मद्यं सौख्यायामृतवन्मुहुः ॥२॥

अयुक्तिमद्यपानेदूषणम् ।

सूर्याग्नितप्तेन बुभुक्षितेन रोगान्वितेनापि पिपासितेन ॥ श्रमान्वितेनाध्वपरिश्रमेण वेगावरोधेन भयान्वितेन ॥३॥ क्षीणेन शोकाभिभयेन चैव कोपाभिभूतेन च निर्बलेन ॥ अत्यम्लभक्ष्येण च सेवितं बहु करोति मद्यं विविधान् विकारान् ॥ ४ ॥

अर्थ–विषके सर्व दोष और अमृतके सर्व गुण मद्यमें रहते हैं, युक्तिसे और अयुक्तिसे पीवे तो गुण और अवगुण करता है ॥ १ ॥ उसीको दिखाते हैं जो मनुष्य बेतरकीबसे दारू पीता है उसके बराबर रोग पैदाहोता है इसीसे मद्यपान विधिपूर्वक करना चाहिये क्योंकि विधिपूर्वक पिया हुआ मद्य अमृतके गुणोंको करता है ॥ २ ॥ सूर्यके तेजमें घामसे, या अग्निसे तपाहुआ भूखसे व्याकुल रोगी, प्यास, श्रमसे थका, रास्तेके चलनेसे, चौदह वेगोंके रोकनेसे, व्याकुल भययुक्त॥ ३ ॥ क्षीण मनुष्य, शोकयुक्त, कोपयुक्त, निर्बलता, अत्यंतखटाई खाईहो, और बहुत मद्य पियाहो, ऐसे मनुष्योंके मद्य अनेक विकार करताहै ॥ ४ ॥

लज्जाबुद्धिविनाशनं विकलतां छर्दिं गुरुत्वं तनौ पांडुत्वं कृशता मुखे विरसतां निद्रां विमूर्च्छां तृषाम् ॥ हृल्लासं तमकं वमिं शिथि-

लतां गुह्यप्रकाशं तमःकार्य्याकार्यविमूढतां प्रकुरुते मद्यश्च दोषाकरम् ॥ ५ ॥ मद्ये संत्यमृतोपमा गुणगणा युक्ताः प्रपीतेनिशं क्षुद्बोधः स्मृतिपुष्टितुष्टिरुचयो नीरोगता कांतयः ॥ आनंदांकुरकोटयो मधुरता स्त्रीषु प्रहर्षोत्सवौ वीर्यौजोबलधैर्यशौर्यमतयः सौजन्यसौख्यादयः ॥ ६ ॥

अर्थ—लज्जा बुद्धिको दूर करताहै, वेकली, रद्द, देहभारी, पीलिया, शरीरकृश, मुखमें स्वाद न हो निद्रा, मूर्च्छा, प्यास, सूखी उलटी, तमक, वमन, शिथिलता, छिपीबातको कहना, अंधेरा आना कार्य अकार्यको न जानना, दोषोंकी खानि, ऐसा अयुक्तिसे पियाहुआ मद्य करता है, ॥ ५ ॥ अथ मद्यपानगुणः ॥ युक्तिसे मद्यपानकरना अमृतके समान गुण करताहै, क्षुधाको बढावे, स्मृति, पुष्टता, तुष्टता, रुचि, नीरोगता, कांति, आनंदके अनेक अंकुर पैदाकरे, मधुरता, स्त्रियोंमें रुचि, उत्सव, वीर्य, ओज, बल, धीरता, शूरता मति, सुजनता सुखादिकोंको पैदा करताहै ॥ ६ ॥

मद्येन बुद्धिः प्रथमेन मोदः स्त्रीषु प्रहर्षो बहुभोजनेच्छा ॥ वादित्रगीतेषु रुचिः सुखं च निद्रारतिः स्यान्मनसोत्सवश्च ॥ ७ ॥ मद्ये द्वितीये पुरुषः प्रमत्तः स्यान्नष्टबुद्धिर्विगतात्मचेष्टः ॥ घूर्णाननो हर्षयुतोतिनिद्रो दुर्वाक्यशीलो बहुलीलया युक् ॥८॥ तृतीये मदे नष्टदृष्टिर्मनुष्यो वदेत्सर्वगुह्यानि गच्छेदगम्याम् ॥ गुरुं नैव पश्येदभक्षेत्समंताद्विलज्जो स्वतंत्रो भवेद्युद्धशीलः ॥ ९ ॥

अर्थ—प्रथम पियाहुआ मद्य बुद्धिको और मोदको बढावे, स्त्रीगमनमें रुचि पैदाकरे, बहुत भोजनकी इच्छा, बाजे और गीत सुननेमें इच्छा, सुखनींद, मनका एकाग्रलगाना, मनमें उत्साह, ये गुण करता है ॥ ७ ॥ दूसरी दफे मद्य पियाहुआ आदमीको मस्त करदेताहै बुद्धि नष्टकरदे चेष्टारहित करदे तिरछी दृष्टि हर्षयुक्त, अतिनिद्रा, खोटा बोले, अनेक लीलाकरे ॥ ८ ॥ तिसरीदफे पिया मद्य मदसे नष्टदृष्टि करदे, और सब छिपीबात को कहे, और मा, बहिन, बेटी, गुरुकी स्त्रीसे भी खोटा काम करनेकी इच्छा हो, गुरुकोभी न देखे, अभक्ष्य भोजनकरे, लज्जात्यागदे अपनी इच्छाका काम करे, मारधाड करे ॥ ९ ॥

चतुर्थे मदे मृत्युतुल्यो मनुष्यो भवेद्ज्ञानहीनः स्वकार्ये त्रि-

कार्ये ॥ क्रियाचारशौचादिहीनो विमूढः परं स्वं न जानाति मत्तो विलज्जः ॥ १० ॥

पित्तके मदात्ययके लक्षण ।

पार्श्वशूलशिरःकंपश्वासहिक्काप्रजागरैः ॥ मुखशोषेण पित्तस्य तमवेहि मदात्ययम् ॥ ११ ॥

कफके मदात्ययके लक्षण ।

तंद्राहृल्लासस्तैमित्यच्छर्द्यरोचकगौरवैः ॥ शीतलांगस्य तं विद्यात्कफप्रायं मदात्ययम् ॥ १२ ॥

अर्थ–चौथीवार पियाहुआ मद्य मुरदेके समान करदे, ज्ञानरहित करदे, अपने पराये कामको न समझे, क्रिया आचार शौच इनकरके रहित करदे, मूढ करदे अपना पराया न जाने, और मस्त लज्जारहित होजावे ॥ १० ॥ पसवाडोंमें शूलहो, शिरकांपे, श्वास हिचकी, जागना, मुखका ये पित्तके मदात्ययके लक्षण हैं ॥ ११ ॥ तंद्रा, सूखी रद, गीलेकपडेसे पोंछासादेह, वमन, अरुचि देहभारी और शीतल अंगहो उसको कफके मदात्ययकहते हैं ॥ १२ ॥

अंगमर्दतृषाशूलरूक्षगात्रविवर्णता ॥ हिक्का भ्रमैश्च तं विद्याद्वातप्रायं मदात्ययम ॥ १३ ॥

त्रिदोषकेमदात्ययकालक्षण ।

सोपद्रवैः सर्वलिंगैस्त्रिदोषोत्थैर्मदात्ययः ॥ त्रिदोषजनितो ज्ञेयः साध्योयं च भिषग्वरैः ॥ १४ ॥ चिह्नं च तत्परमदस्य वदंति वैद्याश्छिक्कातृषागगुरुतावहुपर्वभेदः ॥ विण्मूत्रशक्तिररुचिर्विरसास्यता च श्लेष्मा ज्वरस्तु कृशता रुजता कपाले ॥ १५ ॥

अर्थ–अंगोंका टूटना, प्यास, शूल, रूखाशरीर, तथा विवर्णदेहका, हिचकी भ्रम, ये लक्षण वातके मदात्ययकेहैं ॥ १३ ॥ जो उपद्रवके साथ हो और तीनों दोषोंका लक्षण मिलतेहों उसको सन्निपातका मदात्यय जानना ॥ १४ ॥ औरभी सन्निपातमदात्ययके चिह्न कहते हैं जिसमें छींक, प्यास, शरीरभारी, संधिमें पीडा, विष्टा, मूत्रका निकलजाना, अरुचि, मुखसे स्वाद जातारहै, कफ और ज्वर तथा मस्तकमें पीडा हो ॥ १५ ॥

मद्यपानोत्थअजीर्णकेलक्षण।

अजीर्णं मद्यपानोत्थं कुर्यादाहमचेतसम् ॥ तृष्णाध्मानमुद्गारं संधिभेदः शिरोरुजम् ॥ १६ ॥

मद्यपानोत्थभ्रमकेलक्षण।

भ्रमो मद्यपानोत्थितः कंठधूमं कफं दाहमुग्रं ज्वरं श्यामजिह्वम् ॥ प्रशोषं पिपासां वमिं पार्श्वशूलं गरिष्ठोदरं नीलमोष्ठं प्रकुर्य्यात्१७॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे मदात्ययपरमदाजीर्णविभ्रमाणां लक्षणानि ॥

अर्थ--मद्यपीनेसे हुआ अजीर्ण वो ये लक्षण करताहै, होश न रहै ऐसा दाहको करै प्यास और पेटफाफूलना, तथा डकारका आना, संधिसंधिमें पीडा, मस्तकमे दर्द ॥ १६ ॥ मद्यके पीनेसे हुआ जो भ्रम वो ये लक्षणको करै, कंठसे धुंयेंका निकलना, कफनिकलना, दाहहो, ज्वर, जीभकाली- पड़जाय, मुखशोष, प्यास, वमन, पसवाडोंमें दर्द या शूल, उदरमे भारीपना, ओठनीले ॥ १७ ॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यां मदात्ययरोगस्समाप्तः ॥

अथोन्मादलक्षणानि।

विक्षिप्तता मनोवृत्तिर्दोषैर्वातादिभिर्भवेत् ॥ समस्तैर्वासमस्तैर्वासो- न्मादः कथितो बुधैः ॥ १ ॥ वार्त्ताया विस्मृतिर्येन गाने गीत- स्य विस्मृतिः ॥ शौचाशौचेन जानाति सोन्मादः कथितो बुधैः॥२॥

उन्मादरोगकेलक्षण।

उन्मादहेतुर्द्विजदेवतानां संन्यासिनां साधुपतिव्रतानाम् ॥ आध- र्षणं कुत्सितमंत्रसाधनं दुष्टाशुचीनामशनं च पानम् ॥ ३ ॥

अर्थ—उसको पण्डितोंने उन्मादरोग कहाहै.जिसमें समस्त या न्यून वातादि दोषों करके मनकी वृत्तिमें विक्षिप्तता अर्थात् बावलापना पाया जाय ॥१॥ बात करनेकी विस्मृति, और गानेमें गीतकी- विस्मृति, जिस करकेहो और शौच भ्रष्टताको जो न जाने उसको पंडितोंने उन्मादरोग कहाहै ॥ २ ॥ ये उन्मादरोग होनेके कारणहै, ब्राह्मण, देवता, संन्यासी, साधु, पतिव्रतास्त्री इनको दुःख देनेसे और खोटे मंत्रके साधनसे, अपवित्र और दुष्ट पदार्थके भोजनसे वा पीनेसे ॥ ३ ॥

वातोन्मादकेलक्षण ।

वातोन्मादगृहीतः क्वचिदपि हसते रोदति क्वापि काले रूक्षांगः शून्यचित्तः परिवदति वचो निष्ठुरं ह्यर्थहीनम् ॥ शीघ्रोत्साहं विधत्ते स्मितचलनयनो गीतनृत्यं करोति स्वांगानां क्षेपणं वा विकलकृशतनुः क्षीणधातुर्मनुष्यः ॥ ४ ॥

पित्तउन्मादकेलक्षण ।

पित्तोन्मादनयुक्तः सततजलरुचिर्भोजने दत्तदृष्टिः ॥ रक्ताक्षस्तब्धनेत्रो भ्रमविकलतनुः शुष्ककंठौष्ठतालुः ॥ शीतेच्छामर्मदाहः परिवदति वचो रौत्यमर्षं विधत्ते भक्ष्याभक्ष्यं परेषां परिहरति हठाद्वाग्विवादं करोति ॥ ५ ॥

कफउन्मादकेलक्षण ।

कफोन्मोदे चिह्नं भवति कृशता छर्यरुचयः कफोद्रेकः कंठे मनसि जडतांगे विकलता ॥ गतोजो मूकत्वं श्रुतिबधिरता देहगुरुतावमिर्निद्रालालोरसि कृमिशतं वाक्शिथिलता ॥ ६ ॥

अर्थ–यातउन्मादयुक्त मनुष्यके ये लक्षण होते है, कभी हंसे, कभी रोवै, रूखा शरीरहोजाय, शून्यचित, दुष्टवचन बोले, व्यर्थबोले, कभी उत्साहयुक्त हो, कभी स्मितयुक्त, चंचलनेत्र, कभी गीत गावे कभी नाचनेलगै, कभी अंगोंको चलानेलगै, विकलहो, शरीरकृश, क्षीणधातु॥४॥जलपीने और भोजन की इच्छाहो, लाल तिरछे नेत्रहों भ्रम और देहमें, बेकलीहो, कंठ, तालु, ओठ इनका सूखना, शीतल वस्तुकी इच्छा, मर्ममर्ममें दाह, बुरावोले, रोवे, क्रोधयुक्तहो, पराया भोजन, भक्ष्य अभक्ष्यको हठसे छटले, वादकरने लगे, ये लक्षण पित्तोन्माद युक्तके है ॥ ५ ॥ देहकृश, वमन, अरुचि, कफका बढना, कंठमें मनमें जडता, देह विकल, गति और ताकत इनका बंदहोना, गूंगापना, बहिरापना, देहभारी, रदहोना, निद्रा आवे और लारका गिरना, पेटमें कृमि पडजायँ, वाणी शिथिल, ये कफके उन्मादके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

सन्निपातकेउन्मादकेलक्षण ।

उन्मादेन त्रिभिर्दोषैर्जातेन ग्रसितो नरः ॥ सोपद्रवैरसाध्योयं कथितो भिषजांवरैः ॥ ७ ॥

औरभी कारण लिखतेहैं ।

चौरैर्नृपेन्द्रैरारिभिस्तथान्यैः संत्रासितः क्षीणधनोभिघाती ॥ शोकाभितप्तो मुनिभिः प्रशप्तः संजायते तस्य मनोविकारः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे उन्मादलक्षणम् ॥

अर्थ–त्रिदोष उन्माद करके ग्रसागया जो मनुष्य और उपद्रवयुक्तहो वो रोगी असाध्य है, ऐसे श्रेष्ठ वैद्योंने कहाहै ॥ ७ ॥ चोरोंने राजाने वैरियोंने और किसीने इस मनुष्यको त्रास दिखायाहो, और जिसका धन नष्टहोगयाहो, चोटलगीहो, शोकयुक्तहो, ऋषि मुनि करके शापदियागयाहो, ऐसे मनुष्यके मनोविकार अर्थात् उन्माद रोग होताहै ॥८॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां उन्मादरोगस्समाप्तिमगमत् ॥

अथभूतोन्मादलक्षणम् ।

ब्रह्मण्यो गुरुदेवपूजनरतो दाता च शुद्धाक्षरः संतुष्टो मितभुक् सुगन्धिवनिताप्रीतिर्विनिद्रोऽनिशम् ॥ तेजस्वी बलवान् शुचिर्नयपरोभिज्ञोतिहर्षान्वितो देवोन्मादयुतो नरः स भवति ब्रह्मात्मको ब्रह्मवित् ॥ १ ॥

दैत्यलगेहुये मनुष्यके लक्षण ।

देवब्राह्मणसाधुवैष्णवगवां स्त्रीणां च संन्यासिनां विद्वेषी भयदोऽतिनिष्ठुरवचास्तुष्टोन्नपानादिषु ॥ दुष्टात्मा परमर्मभिद्गतभयः क्रोधी च मानी नरःस्तब्धो गर्वसमन्वितो दनुजयुक् क्रूरो सहिष्णुर्बली ॥ २ ॥

गंधर्वलगाहो उसके लक्षण ।

संचारी विपिने नदीपुलिनयो रम्यस्थले पर्वते हृष्टारमारुणकंजचारुनयनो वादित्रगीतप्रियः ॥ तुष्टो नीतिपरायणोतिचतुरो वाग्मी सुगंधान्वितो गंधर्वग्रहपीडितः सुवचनः स्वाचारभुङ्मानवः ॥३॥

अर्थ–जो ब्राह्मण गुरु देव इनका पूजन करताहे, दाताहो, शुद्धबोले, संतुष्टहो, थोडाखानेवाला, सुगन्धी और स्त्रीमें प्रीतिहो, रातदिन निद्रा न आवे, तेजस्वीहो, बलवानहो, पवित्ररहे, नीतिमें

जाननेवालाहो, सर्व वार्तोको जाने, हर्पयुक्तहो, ब्रह्मका जाननेवाला, ब्रह्मात्मक ऐसा मनुष्य देवताका उन्मादवाला जानना ॥ १ ॥ जो मनुष्य देव ब्राह्मण साधु वैष्णव गौ स्त्री संन्यासी इनसे वैरकरे, इनको भयदे, तथा खोटाबोले, अन्नजलसे जो तुष्ट नहो, दुष्टहो, पराये मर्मका छेदनेवालाहो, निडरहो, क्रोधीहो, मानीहो, स्तब्धहो, गर्वयुक्तहो, क्रूरहो, सहनशील, तथा बलीहो, ऐसे मनुष्यको दैत्यकी बाधाजाने ॥ २ ॥ जो मनुष्य वन नदी पुलिन रमणीकस्थल पर्वत इनमें विचरनेवाला हो, प्रसन्नचित्त, लालकमलकेसे नेत्रहों, बाजा और गीत जिसको प्यारालगे, तुष्टहो, नीतियुक्तहो, अति चतुरहो, शुभ बोलनेवालाहो, सुगंधयुक्तदेहहो, वाग्मी, अपने वित्तमाफिक भोजनकरे ऐसे मनुष्यको गंधर्वकी बाधा जाननी ॥ ३ ॥

यक्षग्रस्तके लक्षण ।

गंभीरोल्पवचोऽरुणाम्बरधरो धीरोतिशूरो महान् भो मर्त्याः प्रवदंतु मे झटिति किं दास्यामि कस्मै वरम् ॥ यो यक्षग्रहपीडितो वदति ना नान्योरुणाक्षोनिशं तेजस्वी बलवान् वरो द्रुतगतिर्वाग्मी सहिष्णुर्भृशम् ॥ ४ ॥

महासर्पआदियुक्तउन्मादके लक्षण ।

क्रोधात्मा भुजगग्रहेण परितो ग्रस्तो हि यो मानवो रक्ताक्षो रुधिरप्रियोतिबलवान् प्रेप्सुः पयःपायसे ॥ शौचाचारबहिर्मुखो विलिहितोऽसृक्सृक्किणीजिह्वया शून्यागाररतः कचित्प्रसरतः सर्प्पेव हिंसाप्रियः ॥ ५ ॥

पितृश्वरोंकेदोपका लक्षण ।

दध्योदने पायसशर्करासु मध्वाज्यमासेपु च रक्तवस्त्रे ॥ सुगंधपुष्पेष्वतिशीतलोदे पितृग्रहग्रस्तनरोभिलापी ॥ ६ ॥

अर्थ-जो मनुष्य गंभीर और अल्पवाणीका बोलनेवालाहो लालकपडे पहिने धीर अतिशूरहो और जो कहे कि हे मनुष्यो! मुझसे वर मांगो, क्यादूं. और लाल नेत्रहो, तेजस्वीहो, बलवान्हो, जल्दी चलनेवालाहो, श्रेष्ट बोलनेवाला, सहनशील, ऐसा मनुष्य यक्षकी बाधायुक्त जानना ॥ ४ ॥ क्रोधीहो और रुधिरप्यारा लगे, बलीहो, दूध और खीरके भोजनकी इच्छाहो, शौच और आचाररहितहो, बिले सरीखा घर प्यारालगे, लालनेत्रहो, जीभसे ओठोंके रुधिर लगेको चाटे, शून्यघरमें रहाकरे, कभी पसरजाय, सांपकीसीतरह हिंसा करना प्यारालगै, ऐसे मनुष्यको भुजंग अर्थात् महासर्पकी बाधा

समझनी चाहिये ॥ ५ ॥ दही भात खीर बूरा शहद घी मांस लालवस्त्र सुगंध पुष्प शीतलजल ये पदार्थ जिसको प्यारे हों उस मनुष्यको पित्रीश्वरोंकी बाधा जाननी ॥ ६ ॥

राक्षसलगेहुयेमनुष्यके लक्षण ।

सुरामांसरक्तेषु लिप्सुर्विलज्जो महाक्रोधयुक्तोतिशूरः सहिष्णुः ॥ बली निष्ठुरः क्रूरकर्मा विरूपो ग्रहीतो निशाचारिभिर्यो मनुष्यः॥७॥

प्रेतग्रस्तके लक्षण ।

भ्रमति रुदिति नित्यं गह्वरारण्यसेवी विलपति किलमूर्च्छामेति कंपं विधत्ते ॥ हसति लिखति भूमिं भक्ष्यपानैरतृप्तो वदति विकल वाणीं प्रेतग्रस्तो मनुष्यः ॥८॥ बालभीरुस्त्रिया देहे प्रविशंति सुरादयः ॥ शीतादयो यथाकाये मन्यंते प्रतिविंबवत् ॥ ९ ॥

अर्थ–मद्य मांस रुधिर इनकी इच्छाहो, लज्जारहित, महाक्रोधी, शूर, सहिष्णु, बली, निठुर, क्रूरकर्मका करनेवाला, विरूप, ऐसा मनुष्य राक्षसग्रस्त जानना ॥ ७ ॥ डोलाकरे, नित्यरोयाकरे, पर्वत वनमें रहाकरे, विलापकरे, कभी मूर्च्छासे गिरपडे, काँपे, हँसे, धरतीको लिखे, भोजन और पीनेसे तृप्त न हो, विकलवाणी बोले ऐसा मनुष्य प्रेतग्रस्त जानना ॥ ८ ॥ बालक डरपोक स्त्री इनके देहमें देवता आदि प्रवेश करतेहैं जैसे शीतघाम देहमें लगे तिसीतरह प्रतिबिंब उनका मालूम होताहै ॥ ९ ॥

विशंति देहे मनुजस्य सर्वतो ग्रहादयः कैरपि दृश्यते न ते ॥ कुर्वंति पीडां महतीं सुदुस्सहां गच्छंति शात्या बलिमंत्रकादिभिः ॥१०॥ विशंति नरदेहेषु पूर्णमास्यां सुरग्रहाः॥ संध्ययोर्दानवादेत्या गंधर्वाश्चाष्टमीद्वयोः॥ ११ ॥ पितरः कृष्णपक्षे च यक्षा ये प्रति पत्तिथौ ॥ पंचम्यासुरगा रात्रौ गंधर्वाराक्षसादयः ॥ १२ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे भूतोन्मादलक्षणंसंपूर्णम् ।

अर्थ–ग्रहादि संपूर्ण मनुष्यके देहमें प्रवेशकरते किसीको नहीं दीखते और दुस्सह तथा भारी पीडाको करते हैं यो सर्व शांति और बलिदान तथा मंत्रजापसे शांत होते हैं ॥ १० ॥ देवताग्रह मनुष्यके देहमें पूर्णमासीको प्रवेश करते हैं, और असुर दानव पूर्णमासी• और अमावास्या इनकी

संधिमें प्रवेश करते हैं और गंधर्व दोनों शुक्ल व कृष्ण पक्षकी अष्टमीमें प्रवेश करते है ॥ ११॥ पितर कृष्ण पक्षमें और यक्ष पड़वामें, सर्प्प पंचमीमें, रात्रिमें राक्षसादिक, चतुर्दशीमें पिशाच ये प्रवेश करते है ॥ १२ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांभूतोन्मादलक्षणं सम्पूर्णम्॥

वातअपस्माररोगके लक्षण ।

मासे पक्षे दशाहे प्रकुपितमरुतां संभवो घोररूपो रोगोपस्मारसंज्ञः सपदि स कुरुते पातयित्वा नरांगम् ॥ श्वासं कासं च मूर्च्छां करचरणशिरःक्षेपणं शून्यदेहं दोषोद्रेकं विसंज्ञां कफचयवमने स्वेदशोषांगपीडाः ॥ १ ॥

पित्तकीमृगीरोगके लक्षण ।

पित्तापस्माररोगी पतति भुवि नभः पीतरक्तं च दृष्ट्वा फेनं पीतं कफस्य प्रवमति मुखतः पीतनेत्रास्यकायः ॥ उत्तप्ताक्षो विसंज्ञः क्षिपति करपदः कंपते सप्रसेकः संरंभश्वासमूर्च्छो भ्रमति बहुतरं शुष्कहृत्कंठतालुः ॥ २ ॥

कफकीमृगीरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मापस्माररोगी वितरति बहुशो हस्तपादप्रकंपं संरंभाद्दर्शयित्वा सपदि शितनभः पातयित्वा मनुष्यम् ॥ शीतांगं शुक्लनेत्रं शितकफनिचयं वक्त्रदेशोद्गिरंतं रोमांचश्वसशीतं जडतरहृदयं गौरवांगं स्फुरंतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मासमें पक्षमें दशदिनमें कुपित हुआ जो वात सो अपस्मारनाम मृगीरोगको पैदाकर ये लक्षणोंको करताहै मनुष्यको पृथ्वीपर गेरदेता है, और श्वास, खांसी, मूर्च्छा, तथा हाथपैरोंको इधर उधर पटकना, तथा शिरको पटकना, शून्य देह, दोषोंको बढ़ावे, बेहोशी, कफकी उलटी करै, पसीने, शोष, अङ्गोंमें पीड़ा ॥ १ ॥ पित्तकी मृगीवाला रोगी धरतीमें गिरपडे और आकाशको लाल पीला देखे, और मुखसे पीले झाग कफको गेरे, पीलेनेत्र, पीलाही देह होजाय, नेत्र तप्त हो जायँ, बेहोशी हो, हाथ पैर पटके, कांपे, पसीनेहो, श्वासका बढना, मूर्च्छा, बहुत डोले, तालु कण्ठ हृदय सूखे, ये पित्तकी मृगी रोगवाला करै ॥ २ ॥ कफकी मृगी

रोगवाला मनुष्य ये लक्षणोंको करै हाथ पैरको कँपावे, जल्दीसे श्वेत आकाशको देख पृथ्वीपर गिरपडे, देह शीतल होजावे, नेत्रसपेद, श्वेतकफको मुखसे गेरे, रोमांचहो, श्वास हो, शरदी लगे, हृदय जकड जावे, शरीरभारी, तथा देह फड्के ॥ ३ ॥

सन्निपातकीमृगीरोगके लक्षण ।

वातपित्तकफैर्युक्तश्चिह्नैः सर्वैः समन्वितः ॥ अपस्मारः प्रकुरुते पंचत्वं रोगिणोनिशम् ॥ ४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे अपस्मारलक्षणम् ॥

अर्थ-बादी कफ पित्त तीनो दोषोंके चिह्नों करके युक्त जो मृगीरोगवाला सो मर जावे ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामपस्माररोगनिदान समाप्तम् ॥

वातव्याधिरोगलक्षण ।

व्यायामेन क्षुधातृषातिकटुकक्षाराम्लरूक्षाशनैः शोकव्याधिविकर्षणातिगमनैरत्यम्बुपानादिकैः॥धातोः संक्षयघातपातवनितात्यंतप्रसंगादिभिर्वातः संकुपितः करोति विविधान् रोगान्महादारुणान् ॥ १ ॥ स्रोतांसि सर्वाणि शरीरजानि रिक्तानि धातुप्रवहाणि तानि ॥ प्रपूरयित्वातिरुषा शरीरे मर्माणि संतोदति चंडवातः॥२॥ हृत्पार्श्वोदरवस्तिहस्तचरणग्रीवाशिरःकूजनं नासाकर्णमुखाक्षिदंतरसनागुल्मांत्रसंपीडनम् ॥ कुब्जत्वं बधिरं कृशत्वमरतिं खांज्यं शिरःकंपनं अर्द्धांगे जडतां करोति कुपितो वातो महादारुणः ॥ ३ ॥

अर्थ-दण्ड कसरतके करनेसे, क्षुधा तृषाके रोकनेसे, अति कडुआ खारा खट्टारूखा ऐसे पदार्थके खानेसे, शोचसे, देहमें रोगके होनेसे, बहुतचलनेसे, बहुत जल पीनेसे, धातुके क्षय होनेसे घातसे, गिरपडनेसे, स्त्रीके बहुतसङ्ग करनेसे वात कुपित हो मनुष्योंको महादारुण अनेक वातके रोग पैदा करै ॥ १ ॥ जितनी शरीरमें धातुकी बहनेवाली नाडी तिनको वात शुष्क करदे और

रोपको प्राप्त हुई जो वात सो सर्व नसोंमें प्रवेश कर प्रचण्ड वात मर्ममर्ममें पीडा करती है ॥ २॥ हृदय पसवाडा पेट बस्ती हाथ पैर नाड शिर इनका गूंजना, नाक कान मुख नेत्र दांत जीभ टकना आंत इनमें पीडा हो, कुबडा होजाय. बहिरा तथा लटजावे, मनका न लगना, खंजापना, शिरका हिलना, अर्द्धाङ्गवायु होजाय तथा वादीसे जकड जाय, ये लक्षण कुपितमहावात करती है ॥ ३ ॥

सर्वांगेषु गतो मरुद्गुरुतरं शूलं करोति द्रुतं भेदं संधिषु कंपनं करपदामस्थ्नां च संस्फोटनम्॥सर्वांगस्फुरणं विनिद्रमनिशं शोकं शरीरे भ्रममाध्मानं कटिपीडनं हृदिरुजं विण्मूत्रयोस्स्तंभनम्॥४॥ वातः कुर्यात्कोपितो दंतबंधं जिह्वास्तंभं कर्णयोर्गुंजशब्दम्॥नाडी स्तब्धं रक्तवीर्यादिशोषं अस्थिस्फोटं देहसंकोचवृद्धीः ॥ ५ ॥ जृम्भोद्गारं च हिक्कां वितरति पवनः पीतवर्णं शरीरं हृल्लासं श्वासकासं मनसि विकलतां छर्यतीसारगुल्मम्॥अंतर्दाहं विसंज्ञां कृशतनुमरतिं कामलां पांडुरोगं उद्वेगं संधिभेदं व्यथयति सततं सर्वकाये मनुष्यम्॥ ६ ॥

अर्थ–सर्व अङ्गोंमें प्राप्त हुई जो वात सो ये लक्षणोंको प्रगट करै प्रबल शूल, संधीनमें पीडा, हाथ पैरोंका कांपना, हड्डी हड्डीका फूटना, सब शरीरका फड़कना, नींदका न आना, सूजन तथा भ्रम, पेटका फूलना, कमरमें पीड़ा, हृदयमें दुःख, विष्टा मूत्रका रुक जाना ॥ ४ ॥ कुपित वात दन्तबन्ध जीभका स्तम्भन, कानोंमें गुञ्जारशब्द, नाडियोंका स्तम्भ, रुधिर और वीर्यका सूखना हड्डी हड्डीमें पीडा देहका घटना बढना ये सर्व लक्षण करती है ॥ ५ ॥ जम्भाई, डकार, हिचकी, पीलिया, सूखी रद्द, श्वास, खाँसी, मनमें बेकली, उलटी, अतीसार, गोला भीतरी दाह, बेहोशी, शरीर कृश मनका न लगना, कामला, शरीरका रंग पीला, उद्वेग सन्धिनमें पीडा, सब शरीरमें व्यथा, ये लक्षण सर्वांगकी पवन करती है ॥ ६ ॥

करोति कुपितोनिलो हलीमकं च गृध्रसीम्॥विषूचिकां विलंबिकां प्रलापमंगपीडनम् ॥ ७ ॥

त्वचामेंप्राप्तवातका लक्षण ।

त्वग्गतः पवनः कुर्य्याद्रूक्षत्वं त्वचि कृष्णताम् ॥ कार्कश्यं शून्यतां कार्श्यं वैवर्ण्यं स्फुटितारुजम् ॥ ८ ॥

रुधिरमेंप्राप्तवातका लक्षण ।

वातो रक्तगतः कुर्यात् कार्श्यं रुधिरशोषणम् ॥ तीव्रतापं व्रणं गुल्मं खर्ज्जूं दद्रूं विचर्चिकाम् ॥ ९ ॥

अर्थ–कुपितहुई जो वात सो मनुष्यकी देहमें हलीमक, गृध्रसी, विषूचिका, विलंबिका, प्रलाप, अंगोंमें पीडा करतीहै ॥ ७ ॥ त्वचामें प्राप्त पवन शरीर रूखा तथा कालावर्णको करे, कर्कशस्वभाव तथा देहमें शून्यता और कृशपना, विवर्ण तथा देहका फटना, ये लक्षण करतीहै ॥ ८ ॥ रुधिरसे प्राप्तवादी शरीर कृशकरे, रुधिरमात्रको सुखाय देय, तीव्रज्वरकरे, फोडा और गोलानको पैदाकरे, खुजली, दाद, खाजको करती है ॥ ९ ॥

मांसमेदोगतवायुके लक्षण ।

मांसमेदोगतो वातो गुर्वंगं कुरुते श्रमम् ॥ स्तब्धांगमरुचिं ताप-मरतिं रक्तशोषणम् ॥ १० ॥

मज्जास्थिगतवातके लक्षण ।

वातो मज्जास्थिगः कुर्याद्भेदं पर्वास्थिसंधिषु ॥ बलमांसक्षयं शूलं विनिद्रां वीर्यनाशनम् ॥ ११ ॥

शुक्रगतवातके लक्षण ।

शुक्रस्थः पवनः कुर्यादरुचिं त्रिषु पीडनम् ॥ वीर्यशोषं मनस्तापं बलकांतिसुखक्षयम् ॥ १२ ॥

अर्थ–मांस मेदामें प्राप्त वात देहको भारीकरे, अनायास श्रमको करे, शरीर जकडजाय, अरुचि, ताप, मनका न लगना, रुधिरका सूखना ॥ १० ॥ मज्जा और हड्डमें प्राप्तहुई जो वात सो गांठोंमें पीडा, हड्डी और संधिनमें पीडा मांस और बलका क्षय होना, शूल और नींदनाश तथा वीर्यका नाश ये लक्षणोंको करे ॥ ११ ॥ शुक्रमें प्राप्तहुई वात सो अरुचि, मन, वाणी, देह इनमें पीडा, वीर्यका शोष, मनमें ताप, बल कान्ति सुखका नाश ये लक्षणोंको करे॥ १२ ॥

नाडीगतवातके लक्षण ।

वातः शिरागतः कुर्यात्कुब्जं खांज्यं महारुजम् ॥ शिरासंकोचं स्तब्धत्वं बाधिर्यं वमनं कृशम् ॥ १३ ॥

कोष्ठगतवातके लक्षण।

कोष्ठस्थानगतो वातः कुरुते मूत्रबंधनम् ॥ शूलाध्मानमुदावर्तं गुल्मार्शांसि भगंदरम् ॥ १४ ॥

सर्वांगगतवातके लक्षण।

सर्वांगस्थोपि कुपितः पवनो विविधा रुजः ॥ कुरुते वर्द्धते सर्वान् बाह्याभ्यंतरपीडकान् ॥ १५ ॥

अर्थ-नाडीगत वातरोग ये लक्षणोंको करै, कुबडापना, खंजापना, नाडीनका सुकडना, तथा जडता, बहिरापना, बौनापना और कृश ॥ १३ ॥ कोष्ठमें प्राप्तभई जो वात सो मूत्रबन्धको करै, शूल और अफराको करै, उदावर्त, गोला, बवासीर, भगंदर इनको करती है॥ १४ ॥ सर्वांगमें प्राप्तभई पवन सो तरहतरहके रोगोंको पैदा करतीहै, और सर्वांगमें कुपित वात बाहरके रोगोंको तथा भीतरके रोगोंके वढातीहै ॥ १५ ॥

सन्धिनमेंस्थितवातके लक्षण।

संधिस्थः पवनः कुर्यात् शोफं शूलं च दारुणम् ॥ संधीन्विस्फोटयेत्सद्यः स च कर्षति वर्द्धते ॥१६॥ वायवः पंच देहस्था हेतवः सुखदुःखयोः॥ स्वस्थाने सुखदाः सर्वे परस्थानेषु दुःखदाः॥१७॥

पंचवातके अलगअलग लक्षण।

प्राणो वायुर्वसति हृदयेऽपानसंज्ञो गुदांते नाभेश्चक्रे भ्रमति परितो जीवभूतः समानः ॥ कण्ठस्थाने चलति पवनो योह्निरात्रावुदानः सर्वांगेषु प्रसरति मरुद्व्यानसंज्ञो नितांतम् ॥ १८ ॥

अर्थ-संधियोंमें प्राप्त वात सूजन और दारुणशूल, संधिनमें पीडा और सुखावै तथा बढावै ॥ १६ ॥ पांच वात देहमें सुखदुःखकी देनेवाली रहती हैं। यदि वो अपने स्थानपर रहें तो सुखदायक और दूसरेके स्थानपर जानेसे दुःखदायक होती हैं ॥ १७ ॥ १ प्राणवात हृदयमें रहतीहै, २ अपानवायुगुदामें रहतीहै, ३ जीवभूतसमानवायु नाभिचक्रमें रहती है और ४ रात दिनकी बहनेवाली उदानवायु कंठमें रहती है और ५ सब देहमें रहनेवाली व्यानवायुहै ॥ १८ ॥

पित्तान्वितप्राणवातके लक्षण।

प्राणः पित्तान्वितः कुर्य्यादूष्माणं चित्तविभ्रमम् ॥ तृष्णां शूलं च हृल्लासं हिक्कां छर्दिं च दुस्सहाम् ॥ १९ ॥

कफान्वितप्राणवातके लक्षण ।

प्राणः कफावृतः कुर्याद्दौर्बल्यालस्यसादनम् ॥ वैरस्यमरुचिं तंद्रामुत्क्लेदं दोपसंचयम् ॥ २० ॥

पित्तकफयुक्तउदानवातके लक्षण ।

उदानः पित्तयुक् कुर्यान्मूर्च्छां दाहं भ्रमं क्लमम् ॥ कफान्वितोति मंदाग्निं शीतं हर्पं च कंपनम् ॥ २१ ॥

अर्थ–पित्तसंयुक्त प्राणपवन देहमें गरमीको करै तथा चित्तभ्रम, प्यास, शूल, सूखीरद, हिचकी, वमन ये लक्षणोंको करै ॥ १९ ॥ कफसंयुक्त प्राणवात ये लक्षण करताहै दुर्बलता, आलस्यका स्थान, विरसता, अरुचि, तंद्रा, उकलाहट दोपके समूहको बाढताहै ॥ २० ॥ पित्तके साथ मिली जो उदानवायु सो ये लक्षण करै मूर्च्छा, दाह, भ्रम, ग्लानि, और उदानवायु कफके साथ मिलीहो तो मंदाग्नि, शीत, हर्प, तथा कंपको करती है ॥ २१ ॥

पित्तकफयुक्तसमानवातके लक्षण ।

समानपित्तयुक्तृष्णां मूर्च्छामूष्माणमेव च ॥ कुर्यात्कफान्वितो हर्पं विण्मूत्रं रोमहर्पणम् ॥ २२ ॥

पित्तयुक्तअपानवातके लक्षण ।

अपानः पित्तयुक्कुर्यात् रक्तातीसारमुल्वणम् ॥ ऊष्माणमरतिं दाहमर्शांसि च भगंदरम् ॥ २३ ॥

कफयुक्तअपानवातके लक्षण ।

कफयुक्तो यदापानो गुदांते कृमिसंचयम् ॥ कुरुते गुरुता मूत्रमालस्यं वलनाशनम् ॥ २४ ॥

अर्थ–समानवायु पित्तके साथ मिली हुई तृष्णा, मूर्च्छा, गरमीको करतीहै, इसीतरह कफयुक्त समानवायु हर्प, विष्टा मूत्रका रुकना, रोमांचको करतीहै ॥ २२ ॥ अपानवायु पित्तके संयुक्त ये लक्षण करतीहै–रक्तातीसार, गरमी, मनका कहीं न लगना, दाह, बवासीर, भगंदर ॥ २३ ॥ कफयुक्त अपानवायु गुदामें कृमिरोगकरै, शरीरभारी, बहुत मूत्रका होना, आलस्य, बलकानाश ये लक्षणोंको करै ॥ २४ ॥

पित्तकफयुक्तव्यानवातके लक्षण ।

व्यानः पित्तान्वितः कुर्यादंगविक्षेपणक्लमम् ॥ दंडकं स्तम्भनं

दाहं शोफं शूलं कफान्वितः ॥ २५ ॥ नाडीं यदा समभ्येत्य कुपितः पवनो वली ॥ देहविक्षेपणं कुर्य्याच्छिरःकंपं करोति च ॥ २६ ॥ यदा संकुपितो वातो नानाहेतुभिरूर्ध्वगः ॥ तदा संकुरुते दोपं हृच्छिरःशंखपीडनम् ॥ २७ ॥

अर्थ—व्यानवायु पित्तके साथ मिलीहुई अंगोंको पटकतीहै,ग्लानिको करतीहै, उपताप, स्तंभ, दाह, सूजन, शूल ये व्यानवायु कफसंयुक्त करतीहै ॥ २५ ॥ वली पवन कुपितनाडीनमें प्रासहो शरीरका इधर उधर पटकना, करती है—और शिर कंपको करतीहै ॥ २६ ॥ जब वादी नाना हेतूनसे कुपित उपजती है तब हृदयमें मस्तकमें कनपटीमें पीडा करती है और अनेकदोषोंको करती है ॥ २७ ॥

गत्वोर्ध्वं स्वगृहात्करोति पवनो देहं च कोदंडवत् कंठः कूजति कोकिलेव सततं गात्रं मुहुः क्षेपणम् ॥ स्तब्धत्वं नयनद्वयोर्वितनुते शोपं मुखे वक्रिमां श्वासं कासमन्वितं च जठरे शूलं तृपां संभ्रमम् ॥ २८ ॥

पित्तयुक्तवातके लक्षण ।

दाहं पित्तान्वितः कुर्य्यात्तृष्णां छर्दिं शिरोव्यथाम् ॥ हृल्लासं हृदयग्रंथिं हिक्कां कंठहनुग्रहम् ॥ २९ ॥

कफयुक्तवातके लक्षण ।

कफान्वितो वमिं कुर्य्यात्तंद्रां निद्रांगगौरवम् ॥ जाड्यं शैत्यं सरोमांचं क्षवं शोफं च वेपथुम् ॥ ३० ॥

अर्थ—अपने स्थानसे ऊपरको चढी हुई वात मनुष्यके देहको धनुपकी तरह बांका करदे, और कंठ कोकिलाकी वतौर वोले, तथा शरीरको इधर उधर पटके, दोनों नेत्रोंका स्तम्भत्वहो, मुखका सूखना, तथा मुख टेढा होजाय, श्वास, खांसीके साथ पेटमें दर्दहो, और प्यास तथा भ्रमहो ॥ २८ ॥ पित्तयुक्त वात दाहकरै, प्यास, और वमनको करै, शिरमें दर्द, सूखीरद, हृदयमें गांठ, हिचकी, कंठमें हनुग्रह, इन रोगोंको करै ॥ २९ ॥ कफयुक्त वात वमन, तन्द्रा निद्रा, देहभारी, जडता, शीत लगना, रोमांच छींक, सूजन, कंप ये रोग करतीहै ॥ ३०

कफपित्तयुक्तवातके लक्षण ।

कफपित्तान्वितो वायुः पक्षाघातं कटिग्रहम् ॥ कुब्जं खंजं शिरःकंपमंगभंगं प्रपीडनम् ॥ ३१ ॥

अधोभागमेंप्राप्तवातके लक्षण ।

गत्वाऽधः कुपितः करोति मरुतोरुस्तंभनं कुंडलं शूलाध्मान विलंबिकां गुदरवं गुल्मोपदंशं भृशम् ॥ शूकार्शांसि भगंदरं कटिरुजं विण्मूत्रयोस्स्तम्भनं जंघोरुगुदशिश्नयोनिवृषणानां पीडनं दण्डकम् ॥ ३२ ॥ हेतुभिः कुपितो वातो ह्यतिकोपोन्यदोषयुक् ॥ महाकोपस्त्रिदोषाभ्यां स वै भवति रोगदः॥ ३३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे वातव्याधिलक्षणम् ॥

अर्थ–कफ पित्त मिली हुई वात पक्षाघात, कमरमे दर्द, कुबडापना, खंज व शिरका हिलना, अंगभंग और पीडा करती है ॥ ३१ ॥ नीचेके भागमें प्राप्त हुई जो पवन सो ऊरुस्तंभ, कुडलीरोग, शूल, अफरा, विलंबिका, गुदामें शब्द, पेटमे गोला, उपदंश, शूकरोग, बवासीर, भगन्दर, कमरमें दर्द, दस्तपेशाबका रुकजाना, जंघा, ऊरू, लिंगेन्द्री, योनि,अंडकोश इनमें दर्द, तथा दडकरोग इनको करती है ॥ ३२ ॥ अपने हेतूनसे कुपित वात रोग करती है, और दोषके मिलनेसे अति कोपको प्राप्त होती है, और त्रिदोषसे महाकोपको प्राप्त होती है तब बराबर रोग करती है ॥ ३३ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां वातव्याधिरोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

अथवातरक्तरोगनिदानम् ॥

तत्रादौ वातरक्तरोगोत्पत्तिः ।

रूक्षोष्णाम्लकषायतीक्ष्णकटुकस्निग्धाशनैर्भूयसः निष्पावांसकुलत्थशाकमधुरक्षारान्नपित्ताशनैः ॥ तक्राम्लासववारुणीदधिपयःपानैर्निशाजागरैः प्रायः कुप्यति वातरक्तमपरैर्व्यायामशो-

---

१ जोमूत्रापातमें कहा है ।

कादिभिः ॥१॥ विरुद्धदुष्टाशुचिपानभोजनैर्जलावगाहैर्वनितातिसं
गमैः ॥ रात्रौ दिवा जागरणैः प्रधर्षितो रक्तप्रकोपं कुरुते मरुत्तदा
॥२॥ स्रोतांसि रक्तप्रवहाणि रुद्ध्वा करोति वातो रुधिरं च कृष्णम्॥
रोषात्तथा शोणितमुच्छलंति समस्तरोगान्वितनोति नूनम् ॥ ३ ॥

अर्थ-रूखा, गरम, खट्टा, कसेला, तीखा, कडुआ, चिकना भोजन करनेसे, निष्पाव तथा मांस कुलथी शाकमींठा खारमिला और पित्तकी करनेवाली वस्तुके खानेसे छांछ, आम्र,आसव,मद्य, दही दूधके पीनेसे, रातमें जागनेसे, दंड कसरतके करनेसे शोचसे, वातरक्त कोपको प्राप्त होताहै ॥ ॥ १ ॥ विरुद्ध दुष्ट अपवित्र वस्तुके पीनेसे, तथा खानेसे, स्नानसे, बहुत स्त्रीसंगसे, रातदिनके जागनेसे और डरनेसे वात रक्त रोग पैदा होता है ॥ २ ॥ रुधिरकी बहनेवाली नाडीनके मार्गको रोककर वात रुधिरको कालारंगका करदेवे, फिर क्रोधको प्राप्त हुआ जो रुधिर सो देहके बाहर तथा भीतर अनेक रोगोंको पैदा करै ॥ ३ ॥

करोत्यालसं मंडलं वातरक्तं शरीरं विवर्णं रुजं रूक्षगात्रम् ॥
भ्रमं मूत्रकृच्छ्रं क्लमं मर्मतोदं ज्वरं वेपथुत्वं शिरःपीडनं तत् ॥ ४ ॥

पित्तान्वितवारक्तकेलक्षण ।

करोत्येवपित्तान्वितं वातरक्तं मुदं दाहसम्मोहतृष्णांगशोषम् ॥
भ्रमोष्मारति श्छर्दिस्वेदांगतोदं कटुत्वं मुखे शोफमूर्छां विनिद्रम् ५

कफयुक्तवातरक्तलक्षण ।

कफेनान्वितं वातरक्तं गुरुत्वं करोत्यालसं मंडलं रक्तपीतम् ॥
वमिं मंदचेष्टेंद्रियेषु प्रलापं शरीरेति पामां कृशत्वं क्षवत्वम् ॥६॥

अर्थ--वातयुक्त वातरक्त आलकस, कालेकाले देहमें चकत्ता, तथा शरीरका विवर्ण, रूखा देहकरदे, पीडा हो, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, ग्लानि, मर्ममर्ममें पीडा, ज्वर, कंप, शिरमें पीडा ॥ ४ ॥ पित्तान्वित जो वातरक्त सो मस्तपना, दाह, मोह, प्यास, अंगशोष, भ्रम, गरमी, मनका उमाटोल्पना, वमन, पसीनेका आना, अंगोंमें पीडा, मुख कडुआ, सूजन, मूर्च्छा, निद्राका नाश ये लक्षणोंको करता है ॥ ५ ॥ कफयुक्त वातरक्त देहभारी करै, आलकस, देहमें लालपीले चकत्ते करै, वमन, इंद्रियोंकी मंदचेष्टा होना, बकना, देहमें खाज, तथा देहकृश और छींकका आना ये [illegible]णोंको करै ॥ ६ ॥

पांगुल्यं च विसर्पिकारुचिमदा मूर्च्छांगुलीवक्रता हिक्कादाह-

प्रवेपिका भ्रमतृषाश्वासक्लमः स्फोटता॥कासो मोहशरीरशोपमधिकं मर्मग्रहश्चार्बुदः संप्रोक्तास्समुपद्रवामुनिवरैस्ते वातरक्तेऽहिताः ॥ ७ ॥ सोपद्रवं त्याज्यतमंभिषग्भिर्द्विदोषजं कष्टतरेणसाध्यम् ॥ जपेन दानेन शिवार्चनेन यत्नौषधीभिर्ननु वातरक्तम् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे वातरक्तलक्षणम् ॥

अर्थ–पांगुरा, विसर्परोग, अरुचि, मद, मूर्च्छा, उंगलीटेढी हो जाय, हिचकी, दाह, कंप भ्रम, प्यास, श्वास, ग्लानि, शरीरका फटना, खांसी, मोह, देहमे शोष, मर्मस्थानोंमें पीडा, अर्बुदरोग ये वातरक्त रोगके उपद्रव मुनीश्वरोंने असाध्य कहे हैं ॥ ७ ॥ वैद्यों करके उपद्रवके साथ जो वातरक्त सो त्याज्य है, और दो दोषसे पैदा हुआ जो वातरक्त सो कष्टसाध्य है वो जप दान शिवपूजन और इलाज औषधी करके अच्छा हो ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां वातरक्तनिदानं सम्पूर्णम् ॥

अथऊरुस्तम्भनिदानम् ।

नीत्वाधः कुपितो वातः सञ्चयं श्लेष्ममेदयोः ॥ जंघोरुसक्थिगुल्फेषु पूरित्वास्तम्भयेद्गतिम् ॥ १ ॥ जंघोर्वोश्लेष्ममेदाभ्यां सम्पूर्णौ भवतो वलो ॥ ऊरुस्तम्भः सविज्ञेयो भिषग्भिः प्राकृतेर्भृशम् ॥ २ ॥

ऊरुस्तम्भलक्षण ।

ऊरुस्तम्भेति पीडा भवति चरणयो रोमहर्षो जडत्वं शीतं सर्वाङ्गकम्पो वयसि शिथिलता छर्दिनिद्राकृशत्वम् ॥ कृच्छ्रान्न्यासस्पदानामरुचिररतिवमिर्मन्दवह्निर्गुरुत्वं चिह्नान्येतानि नूनं मुनिगणवचनात्कीर्तिता हंसराजैः ॥ ३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे ऊरुस्तम्भलक्षणम् ॥

अर्थ–कोपको प्राप्त हुई जो वात सो कफ और मेदाके समूहको नीचे ले जायकर जांघ ऊरु जानू टकना इनमें व्याप्त करके चलनेकी शक्तिको स्तम्भन करदे, उसे

ऊरुस्तंभरोग कहते है ॥ १ ॥ जांघ ऊरु जब कफ और चर्बीसे परिपूर्ण हो जाय और चला न जावे उसको वैद्योंने ऊरुस्तम्भ रोग कहाहै ॥ २ ॥ ऊरुस्तम्भ रोगमें ये लक्षण होते हैं दोनों पैरोंमें पीडा, रोमांच, जडत्व, शीतका लगना, सर्व देहमें कंप, अंगोंमें शिथिलता, रद, निद्रा, कृशता, पैरोंका कठिनतासे उठना, अरुचि, मनका न लगना, वमन, मन्दाग्नि देहभारी, ये ऊरुस्तंभ रोगके लक्षण मुनीश्वरोंके वचनके अनुसार हंसराज कविने कहेहैं ॥ ३ ॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यां ऊरुस्तम्भरोगनिदान सम्पूर्णम् ॥

अथामवातलक्षणम् ।

व्यायाममंदाग्निविरुद्धभोजनैः स्निग्धाशनेनातिविहारचेष्टया ॥ रात्रौ दिवाजागरणेन कोपितः श्लेष्मस्थले ह्यामचयं नयेन्मरुत्१॥ आमान्नस्य रसोपक्वो मरुताक्रियतेपुनः ॥ दूषितः कफपित्ताभ्यां नाडीभिः पीयते निशम् ॥ २ ॥ आमसंज्ञः सएवायंयो जीर्णजनितोरसः ॥ रोगाणामाश्रयोघोरः स्रोतांसि तुदते भृशम् ॥ ३ ॥

अर्थ—तीन श्लोक कारिके प्रथम आमरोगकी उत्पत्ति लिखते हैं दंड कसरतके न करनेसे, विरुद्ध भोजनसे, चिकने पदार्थ खानेसे, अत्यन्त स्त्रीआदि सेवन करनेसे रातदित जागनेसे, कोपको प्राप्त हुई जो वात सो कफके स्थानमें आमके समूहको प्राप्त करती है॥ १ ॥ अन्नका जो रस विनापका उसको वात दूषित करे तथा पित्त कफ कर दूषित भया हो उसको नाडी पीती है ॥ २ ॥ उसी अजीर्णसे पैदा हुये रसको आमरोग घोररोगोंका आश्रय करते हैं और यह आम नाडीके मार्गोंको रोक देती हैं ॥ ३ ॥

वातजन्यआमरोगके लक्षण ।

आमो रुग्विदधाति शोफमधिकं संकोपितो वायुना जंघोरूकरसन्धिपादवृषणस्कन्धास्यनेत्रेषु च ॥ मांसास्थित्रिककुञ्चनश्च हृदये कम्पं ज्वरं शोषणं स्तब्धांगं वितनोति दारुणभयम्पाकं तृषां शून्यताम् ॥ ४ ॥

पित्तसेकुपितआमलक्षण ।

आमः संकुरुते रुपांगमरुणं पित्तेन संकोपितः शीर्षे सन्धिषु पीडनं कटिरुजं सर्वांगदाहं ज्वरम् ॥ मूर्च्छां संभ्रमशोषणं च हृदये शूलं महादारुणं बन्धं मूत्रपुरीषयोर्नयनयोः पीतत्वमार्तिं तृषाम् ॥५॥

आमः श्लेष्मयुतः करोति जडतां निद्रां गुरुत्वन्तनौ ह्यालस्यं वहुमूत्रताञ्चगलके संकूजनं शीतताम्॥दौर्वल्यं मुखपादहस्तवृषणे शोफङ्गते स्स्तम्भनं वीर्यौजोरुचितेजसां वलधियां नाशं प्रसेकं क्लमम् ॥ ६ ॥

अर्थ--बादीसे कुपित आमरोग जाघ ऊरू हाथ तथा देहकी संधी पैर अंडकोश कंधेनमें मुख तथा नेत्रोंमें सूजन करदे, मास हड्डी त्रिक कहिये मकड इनका घटना, हृदयमें कंप, ज्वर, शोष, देहका जकडजाना, घोरभय, तथा देहका पकना, और प्यास और देहमें शून्यता ये लक्षण करती है ॥ ४ ॥ पित्तसे कुपित जो आमरोग सो देहको लाल करदे, मस्तक तथ संधीनमें दर्द, सब देहमें दाह, तथा ज्वर, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, हृदयमें महादारुण शूल, मूत्रपुरीषक रुकना, नेत्र पीले, प्यास और खेद, ये लक्षण करता है ॥ ५ ॥ कफयुक्त आमरोगके ये लक्षण हैं शरीर जकडजाय, निद्रा, देहभारी,आलकस, पेशाब ज्यादा उतरे, गलेका गूँजना, जाडा लगे दुर्बलपना, मुख हाथ पैर अंडकोश इनमें सूजन, गतिका रुकना, वीर्य, ताकत, रुचि, तेज, बल बुद्धि इनका नाश; लारका गिरना, ग्लानी ॥ ६ ॥

आमस्त्रिदोषजोऽसाध्यः कष्टसाध्यो द्विदोपजः ॥ दोषैकसंयुतः साध्यः सुखेनैव भिषग्वरैः ॥ ७ ॥ त्रिदोषजनितैः सर्वैर्लक्षणैर्लक्षितो हि यः ॥ सान्निपातः स विज्ञेयो द्विदोषो हि द्विदोषजैः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे आमवातलक्षणम् ॥

अर्थ–त्रिदोषसे पैदा हुआ आमरोग असाध्य है, और ददोषोंसे जो हुआ सो कष्टसाध्य है, और एक दोषयुक्त साध्य है ऐसे सुषेणादि वैद्योंने कहाहै ॥ ७ ॥ जिसमें त्रिदोषके सब लक्षण मिलते हों उसको सन्निपातका आमवातरोग कहते हैं, और जिसमें दोदोषोंके चिह्न हों उसे द्विदोषज कहते हैं ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां आमवातलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

अथ परिणामनिदानम् ।

अथपरिणामशूललक्षणम् ।

विण्मूत्ररोधाद्विषमासनस्थात् शीतांबुपानात् पवनस्य रोधात् ॥

अत्युच्चभाषादतिभक्ष्यपानाद्रूक्षाशनात्कुत्सितयानरूढात् ॥ १ ॥ अपक्वपिष्टान्नविरुद्धभक्षणात्कषायतिक्ताशुचिदुष्टभोजनात् ॥ दिवा निशंजागरणाद्विलंघनात्करोति शूलं पवनो रुषान्वितः ॥ २ ॥ नाभिमूले गुदे वस्तौ योनौ पार्श्वे त्रिकेस्थिषु ॥ शूलं वातकृतं ज्ञेयं भिषग्भिर्नात्र संशयः ॥३॥

अर्थ–विष्ठामूत्रके रोकनेसे, खोटी सवारीपर बैठनेसे, शीतलजल पीनेसे, पवनके वेग रोकनेसे, ऊंचे बोलनेसे अत्यंत भोजन और पानसे तथा रूखे पदार्थके भोजनसे, यह शूलरोग होता है ॥ १ ॥ बिना पका पिसाहुआ ऐसे अन्नके खानेसे, विरुद्ध भोजनसे, कसेला तीखा अपवित्र दुष्टभोजनसे, दिनरातके जागनेसे, लंघन करनेसे, रोषको प्राप्त हुई जो पवन सो शूलरोगको पैदा करती है ॥ २ ॥ नाभिमूलमें गुदामें मूत्रस्थानमें योनीमें पसवाडोंमें त्रिकस्थानमें हाडोंमें बादीका शूल वैद्य जाने इसमें सन्देह नही ॥ ३ ॥

वादीकेशूलके लक्षण।

शूलं वातोद्भवं कुर्यात्प्रभातेंगविमर्दनम् ॥ विण्मूत्रबंधनं हिक्काध्मानोद्गारस्तब्धताः ॥ ४ ॥

पित्तके शूलके लक्षण

तीक्ष्णोष्णपिण्याकविदाहिपूगैस्तैलाम्लनिष्पाककटुसूर्यतापैः ॥ व्यायामसौवीरसुराविकारैः प्रवृद्धपित्तं कुरुते हि शूलम् ॥ ५ ॥ पित्तोद्भवं शूलमतीव रौद्रं मध्यंदिने कुप्यति चार्द्धरात्रौ ॥ करोति मूर्च्छा भ्रमदाहमोहतृट्स्वेदमार्त्तिज्वरमुग्रशीतम् ॥ ६ ॥

अर्थ–प्रातःकाल शरीरका टूटना, दस्त और पेशाबका बन्द होना, हिचकी, पेटका फूलना डकारका आना, जडता ये वातशूलके लक्षण हैं ॥ ४ ॥ तीक्ष्ण गरम पिण्याक दाहकरनेवाली वस्तु, सुपारी, तेल, खट्टा, निष्पाव, कटु, सूर्य्यकी घाममें डोलनेसे, दंड कसरतके करनेसे, कांजीके पीनेसे, मद्यके विकारसे, कोपको प्राप्त हुआ जो पित्त सो शूलरोगको करताहै ॥ ५ ॥ पित्तसे पैदा हुआ घोरशूल सो मध्याह्न और अर्द्धरात्रमें कोप करता है, और मूर्च्छा, भौंर, दाह, बेहोशी, प्यास, पसीने, खेद, घोरज्वर और शीत ये करे है ॥ ६ ॥

कुक्षौ सजठरे पार्श्वे शूलं पित्तसमुद्भवम् ॥ सोष्माणं दारुणं ज्ञेयं वैद्यैराधुनिकैर्ध्रुवम् ॥ ७ ॥

कफके शूलका लक्षण ।

मध्वाज्यमासैर्मधुराम्लतक्रैर्वृन्ताकशीतोदकदुग्धपानैः ॥ माषेक्षुमज्जातिलतैलशीतैः श्लेष्मा प्रवृद्धः कुरुते हि शूलम्॥८॥वक्षःस्थल भवं शूलं कफान्तस्य समुद्भवम् ॥ वमनेन शमं याति संध्ययोर्वलवत्तरम् ॥ ९ ॥

अर्थ—कूख पेट पसवाडोंमें पित्तका शूल होता है, और दारुण गरमी ये लक्षण अबके वैद्योंने कहेहै ॥ ७॥ सहत, घी, मांस, मीठा, खट्टा, छांछ, बैंगन, शीतलजल, दूध इनके सेवनसे, उडद, ईख, चरबी, तिल, तेल शरदीसे कुपित हुआ जो कफ सो शूलरोग पैदा करताहै ॥ ८ ॥ कफसे पैदा हुआ जो शूल सो वक्षस्थल तथा सन्धियोंमें बढता है, यह वमनके करानेसे आराम हो ॥ ९ ॥

शूलं कफात्स्यं कुरुते प्रसेकं तंद्रालसं गौरवतां प्रकंपम् ॥ हृल्लासकासारुचिछर्दिदाहं कंठेऽतिपीडास्तिमितांगशीतम् ॥ १० ॥

वातकफशूलकेलक्षण ।

पार्श्वेषु वस्तौ हृदये च शूलं वदंति वैद्याः कफवातजातम् ॥ पित्तानिलाभ्यां जनितं सदाहं कुक्षिहृदये तद्धृदये प्रपीडयेत् ॥ ११ ॥

शूलरोगकीउत्पत्ति।

चंडीशशास्त्रं कफपित्तसम्भवं जानीहि तं त्वं हृदयोदरस्थम् ॥ रूपाणि स्वं स्वं कुरुते स्वकाले दोषैः समस्तैः प्रभवं त्यजेत्तम्॥१२॥

अर्थ—कफसे पैदा हुआ जो शूल- पसीना, तंद्रा, आलकस, देहभारी, कंप, सूखी, रद, खांसी, अरुचि, वमन, दाह, कंठमें पीडा,- मंद जाडा लगे, ये लक्षण करे ॥ १० ॥ जिसमें ये लक्षण हों उसको वात कफका शूल वैद्य कहते हैं, पसवाडोंमें मूत्र स्थानमें हृदयमें शूल हो, वातपित्तजनित शूल लक्षण ॥ और जिसमें दाहहो, कूखमें और हृदयमें पीडा हो उसे वात पित्तका शूल रोग जाने ॥ ११ ॥ श्रीमहादेवके शूलसे तथा कफपित्तसे पैदा हुआ शूल सो हृदयमें पेटमें अपना अनेक तरहका रूप धारण करे, और सब दोषोंसे पैदा हो ऐसा शूलवान् रोगीको वैद्य त्याग दे ॥ १२ ॥

शूलकाअसाध्यलक्षण ।

वायुः संनिहितश्च पित्तकफयोः स्थानं समावर्त्तयेद्यः शूलं कुरुते तदेवमपरं भुंक्तेऽतिशांतिं व्रजेत् ॥ तच्छूलं परिणामजं मुनिवरैः प्रोक्तं च दोषान्वितं ज्ञेयं प्राक्कथितैर्नरैः कफमरुत्पित्तोद्भवैर्लक्षणैः ॥ १३ ॥ सोपद्रवं त्रिदोषोत्थमसाध्यं कथितं बुधैः ॥ कष्टसाध्यं द्विदोषोत्थं सुखेन निरुपद्रवम् ॥ १४ ॥

शूलकेदशउपद्रवकेभेद ।

तंद्रामूर्च्छा ज्वरो दाहः श्वासः कासोऽतिवेदना ॥ हिक्काङ्गगौरवंछर्दिः शूलस्योपद्रवादश ॥ १५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे परिणामशूललक्षणं सम्पूर्णम् ।

अर्थ–जिसमें ये लक्षण हों उसे परिणाम शूल जानना जो वादीसे युक्त और पित्त कफके स्थानमें प्राप्त होकर पीछे दर्दको करे, और दूसरा खानेसे शांति हो और त्रिदोषयुक्त हो उसे असाध्य मुनीश्वरोंने तथा प्राचीन वैद्योंने कहाहै ॥ १३ ॥ जो उपद्रवके साथ हो और सन्निपातसे पैदा हुआ हो वो शूलरोग असाध्य है ऐसा वैद्योंने कहाहै और जो दो दोषसे पैदा हुआ हो वो शूल कष्टसाध्य है और जो उपद्रव रहित हो वो सुखसाध्य है ॥ १४ ॥ १ तंद्रा, २ मूर्च्छा, ३ ज्वर, ४ दाह, ५ श्वास, ६ खांसी, ७ अनिद्रुःख, ८ हिचकी, ९ देहभारी, और १० वमन, ये शूलरोगके दश उपद्रवहैं ॥ १५ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां शूलरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथ अनाहउदावर्तरोगनिदानं तस्योत्पत्तिः ।

पुरीषमूत्रानिलवेगरोधादनाहरोगः किलमर्मभेत्ता ॥ संजायतेऽसौ कुरुते विकारान् वातामयान् वैद्यवरा वदन्ति॥१॥अपानवातसंरोधादूर्ध्ववातगतिर्भवेत् ॥ अनाहोऽसौ परैः प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्ववादिभिः ॥ २ ॥ हिक्काश्वासवम्युद्गारक्षुत्तृष्णायावरोधनात् ॥ उदावर्त्तो भवेद्रोगो वातवृद्धिप्रवर्त्तकः ॥ ३ ॥

अर्थ–दस्त, पेशाब, अधोवायु इनके रोकनेसे मर्ममर्ममें पीडाका करनेवाला अनाह रोग होताहै, और वादीके विकारको करताहै ऐसे वैद्य कहते है ॥ १ ॥ अधोवायुके रोकनेसे ऊपरकेभार्ग होकर वायुकी गति होती है, इसीको अनाहरोग तत्त्ववादी ऋषियोंने कहा है ॥ २ ॥

हिचकी, श्वास, वमन, डकार, भूँख, प्यास, इनके रोकनेसे वातको बढानेवाला उदावर्त रोग पैदा होताहै ॥ ३ ॥

अधोवातरोकनेसेपैदाउदावर्तकेलक्षण।

अपानवातसंरोधाद्वातविण्मूत्रसंगमः॥शूलं क्लमोरुजाध्मानः पीडाटोपोमरुद्भ्रमी ॥ ४ ॥

विष्ठाकेवेगरोकनेकेलक्षण।

विड्वेगे निहते पुंसो वातशूलं गुदे रुजम् ॥ जठरे वातजाग्रंथिः पीडावस्तौ भवेद्भृशम् ॥ ५ ॥

मूत्रकेरोकनेसेहुये उदावर्तके लक्षण।

मूत्रस्य रोधनात्पुंसो मूत्रकृच्छ्रं शिरो व्यथा ॥ वस्तिमेहनयोः शूलमानाहोयमिति स्मृतः ॥ ६ ॥

अर्थ--अधोवायु रोकनेसे विष्ठा मूत्र आपसमें मिलकर शूल, ग्लानि, स्वेद, अफरा, दुःखका आटोप, याने समूह, पवनका मंद चलना भौर, ये रोग होते हैं ॥ ४ ॥ विष्ठाके वेग रोकनेसे मनुष्यके वादीसे दर्दहो, गुदामें पीडाहो पेटमें वादीसे गोला हो, और मूत्रस्थानमें पीडा हो ॥ ५ ॥ पेशावके रोकनेसे पुरुषोंके मूत्रकृच्छ्र, शिरमें पीडा, मूत्रस्थान, लिंगेन्द्रिय इन स्थानोंमें शूल हो इसीको आनाह कहते हैं ॥ ६ ॥

जँभाईरोकनेसेहुयेउदावर्तकेलक्षण।

जृम्भास्तम्भाद्गलस्तम्भो मन्यास्तम्भः शिरोव्यथा ॥ कर्णास्यनेत्रनासासु रोगस्तीव्रोभवेद्भृशम् ॥ ७ ॥

आंसूकेरोकनेकेउपद्रव।

शोकानंदभवास्त्रस्यप्रासोदं नैव मुंचति ॥ सरुक् शिरो गुरुत्वं स्यान्नेत्ररोगस्तु पीनसः ॥ ८ ॥

छींककेरोकनेकेउपद्रव।

क्षवथोर्धारणाच्छूलं मन्यास्तम्भः शिरोर्द्धरुक् ॥ इन्द्रियाणा च दौर्बल्यं भवेत्पीडास्यचक्षुषि॥ ९ ॥

अर्थ--जभाई रोकनेसे गला बैठ जाय, गलेके पिछली नसका जकडना, शिरमें पीडा, कान नेत्र नाक मुख इनमें पीडा हो ॥ ७ ॥ जो पुरुष आनंदसे अथवा शोकसे पैदा हुआ आंसू रोके उसके शिरमें दर्द, तथा शिरमें भारीपना, नेत्ररोग, और पीनसरोग, होय ॥ ८ ॥ छींक रोक-

नेसे शूल, गलेकी पिछली नसका जकडना, आधे शिरमें दर्द, इन्द्रियनमें दुर्बलता, नेत्रोंमें और मुखमें पीडा होवे ॥ ९ ॥

डकाररोकनेकेउपद्रव ।

उद्गारेभिहते तोदः पूर्णत्वं वक्त्रकंठयोः ॥ पवनस्याप्रवृत्तित्वं कूजत्वं हृदये भवेत् ॥१०॥ छर्देर्निग्रहणाद्भवंति विविधा रोगा महादारुणाः हृल्लासारतिशोफकष्टरुचयो हिक्काविसर्पज्वराः ॥ कोष्ठाशुद्धिविवर्णदाहकृमयोवातप्रसूतारुजः कंडूमोहविजृम्भणानि बहुशः पांड्वंगमर्दभ्रमाः ॥ ११ ॥

भूखरोकनेकेउपद्रव ।

क्षुधाभिघाताद्बलवीर्यहानिः स्यान्मन्ददृष्टिः कृशता शरीरे ॥

प्यासरोकनेकेउपद्रव ।

तृष्णाभिघाताद्बहुरोगबाधाहृत्कंठशोषभ्रमदाहमूर्च्छाः ॥ १२ ॥

अर्थ—डकार आई हुईको रोकनेसे मुख और कंठमें पीडा हो, और डकारका न आना, हृदयमें गुंजान शब्द हो ॥ १० ॥ अथ वमनोपद्रव ॥ आई हुई रदको रोकनेसे दारुण अनेक तरहके रोग हों, सूखी उलटी हो, अरति, सूजन, कोढ, अरुचि, हिचकी, विसर्परोग, ज्वर, कोठेमें अशुद्धता, विवर्ण, दाह, कृमिरोग वातव्याधि, खुजली, बेहोशी, बहुतजंभाईका आना, पीलिया, अंगोंका टूटना, भौंर, ये रोग होते हैं ॥ ११ ॥ भूख रोकनेसे बलवीर्यका नाशहो, तथा मंददृष्टि हो शरीरमें कृशताहो, प्यास रोकनेसे बहुत रोग सतावे, प्याससे कंठ सूखे, भौंर, दाह, मूर्छा, ये रोग होते हैं ॥ १२ ॥

श्वासरोकनेकेउपद्रव ।

श्वासस्य निग्रहाद्गुल्मो हृद्रोगो विरतिर्भवेत् ॥ मोहो वातकृतो रोगे ह्याटोपो विद्रधिस्तथा ॥ १३ ॥

निद्रारोकनेकेउपद्रव ।

निद्राघाताद्भवेज्जृम्भा तंद्रालस्यांगगौरवम् ॥ अक्ष्णोः घूर्णत्वरक्तत्वद्रवत्वं जडतारुचिः ॥ १४ ॥ कषायाम्लद्रवै रूक्षैर्विरुद्धकटुभोजनैः ॥ वातः संकुपितः कुर्यादुदावर्त्तं हि लक्षणम् ॥ १५ ॥

अर्थ—श्वास रोकनेसे पेटमें गोला, हृदयकारोग, मनका न लगाना, मोह, और वातके रोग पेटमें गुटगुडाहट, विद्रधिरोग, ये होते हैं ॥ १३ ॥ निद्रारोकनेसे जंभाई, तन्द्रा, आलस्य, देह-

भारी होना, नेत्रटेढे, तथा लाल, अश्रुपातयुक्त, जडता, और अरुचि ये रोग होते है ॥ १४ ॥ कसैली खट्टी, पतली, रूखी, निरुद्ध, तथा कटुवस्तुके खानेसे कुपित हुई जो वात सो दारुण उदावर्त्त रोगको करैहै ॥ १५ ॥

उदावर्तनिदानम् ।

स्रोतांस्युदावर्त्तयतेनिलोयमपानविण्मूत्रकफादिकानाम् ॥ वहानि-हृत्पार्श्वगुदोदरेषु ह्याटोपशूलं कुरुते शिरोर्तिम्॥१६॥ उदावर्त्तवातः करोत्यंगमर्दं मरुद्ग्रन्थिमार्त्तिं पुरीषं सकष्टम् ॥ तृषोद्गारहिक्काभ्रम श्वासकासं वमिं शून्यतां रूक्षतांगं प्रकम्पम् ॥ १७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रेऽनाहो दावर्त्तलक्षणंसम्पूर्णम् ॥

अर्थ–विष्ठा, मूत्र, कफ, आदिकी वहनेवाली जो अपानवायु सो नाडीनके मार्गको रोककर, हृदय पसवाडा गुदा पेट इनका फूलना, और शूल तथा शिरमें दर्दको करैहै ॥ १६ ॥ वातक उदावर्त्त रोग हडकल, पेटमे पवनकीगांठ, तथा खेदहो, कष्टसे दस्तका होना, प्यास, डकार, हिचकी, भ्रम, श्वास, खांसी, वमन, देहमे शून्यता, शरीररूखा, तथा कंप, ये लक्षण करताहै ॥१७॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यामुदावर्त्तनिदानं समाप्तम् ॥

अथ गुल्मरोगनिदानम् ।

गुल्मं वातोद्भवं पैत्त्यं कफजं द्वंद्वसम्भवम् ॥ संनिपातोत्थितं रौद्रं रक्तजं कीर्तितं बुधैः ॥ १ ॥ हृन्नाभ्योरंतरे वस्तौ ग्रन्थिरूपं चला-चलम् ॥ चतुरंगुलपर्यंतं गुल्मन्तत्परिकीर्तितम् ॥ २ ॥

वातगुल्मकेलक्षण ।

निंवूदुंवरयोः फलस्य सदृशं गुल्मं मरुत्सम्भवमुद्गारं च मुहु-र्मुहुर्वितनुतेविण्मूत्रयोर्बंधनम्॥जृम्भाध्मानशरीरशोषकृशताऽशूलं तृषां हृद्रुजं पीडामंत्रविकूजनं रुचिहरं भुक्ते मृदुत्वं व्रजेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–वातसे, कफसे, पित्तसे, द्वंद्वज सन्निपातसे तथा रुधिरसे आठ प्रकारका गोल्हेकारोग वैद्योंने कहाहै ॥ १ ॥ हृदय नाभिके बीचमें मूत्रस्थानमें गांठके आकार गोलाहो एकतो चलायमान दूसरा अचल चारअंगुलके बीचमें उसको गुल्म अर्थात् गोल्हेकारोग कहते हैं ॥ २ ॥ जो नींबू गूलर फलके समानहो उसे वादीका गोला जाने, जिसमें डकार वेरवेरमें आवे दस्त पेशावका बन्द होना

जंभाई पेटकाफूलना, शरीरमें शोप, तथा करापना, और शूल, प्यास, हृदयरोग, पीडा, आंतोंका बोलना, अरुचि और भोजनकरनेसे नरम होजाय ये वादीके गोलाके लक्षण है ॥ ३ ॥

पित्तगुल्मकेलक्षण ।

गुल्मं कुक्षिगतं कपित्थसदृशं पीतं पुरीपं भवेदुष्माहृद्गलके रतिर्नशिमुखे शोषाः पिपासाधिका ॥ प्रस्वेदज्वरशूलदाहमधिकं स्पर्शा सहः संभ्रमः चिह्नं पीतसमुद्भवस्य कथितं गुल्मस्य वैद्योत्तमैः ॥ ४ ॥

कफगुल्मकेलक्षण ।

स्तैमित्यं कठिनोदरं शिथिलतालस्यं गुरुत्वं तनौ वाह्ये शीतलतांतरे ज्वलनता निद्राव्यथामस्तके॥स्वात्कंडूस्त्वचि गुल्ममाम्रसदृशं कासोरुचिपांडुता गुल्मश्लेष्मसमुत्थितस्य भणितं चिह्नं सुपेणादिभिः ॥ ५ ॥

रक्तगुल्मकेलक्षण ।

गुल्मं रक्तसमुद्भवं दृढतरं जंवीरनिम्बूसमं हृन्नाभ्यंतरभूमिकासु जनितं पुंसस्त्रियो योनिपु ॥ हृत्कंठास्यविशोपणं च कुरुते दाहं महादारुणं प्रस्वेदं ज्वरशूलमुग्रमधिका तृष्णारती संक्रमम् ॥६॥

अर्थ—जो कैथके फल समान हो, कोठमेंहो पीलादस्त उतरे, हृदय और गलामें गरमी हो, मनका न लगना, नाक मुखमें शोप, प्यास, अधिक पसीना, ज्वर, शूल, दाह, अधिक स्पर्श न सहाजावे, भौर ये लक्षण, वैद्योंने पित्तके गोलाके कहे है ॥ ४ ॥ देह गीला, पेट कड़ा, शिथिलता, आलकस, देहभारी, बाहर शीतलता, भीतर ज्वालासी मालूमहो निद्रा, मस्तकमें पीडा, देहमें खाज, आम्रफलके समान गोला, खांसी, अरुचि, पीलिया ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने कफसे पैदा गोलाके कहे हैं ॥ ५ ॥ जो गोला, जंभीरीनीम्बूके समानहो पुरुषके हृदय नाभिके बीचमें पैदा हुआ हो, स्त्रियोंकी योनिके समीपहो हृदय, कण्ठ, मुखका सूखना, दारुण दाह पसीना, ज्वर, शूल, अतिप्यास, अरति, ग्लानि, ये लक्षण रुधिरसे पैदा हुये गोलाके हैं ॥ ६ ॥

असाध्यगुल्मकेलक्षण ।

अतीसारहिक्कारतिच्छर्दिशूलैः पिपासाकृशत्वार्तिहृल्लासदाहैः ॥ ज्वरश्वासकासांगशोफैर्युतो यः स गुल्मी न जीवेत्सुषेणादिवैद्यैः ॥ ७ ॥

सन्निपातगुल्मकेलक्षण ।

त्रिदोषसंभवैः सर्वैर्लक्षणैर्लक्षितंहि यत् ॥ तद्गुल्मं सान्निपाताख्यं द्विदोषोत्थं द्विदोषजैः ॥ ८ ॥

साध्ययाप्यअसाध्यकेलक्षण ।

एकदोषोद्भवं साध्यं द्विदोषं याप्यमुच्यते ह्यसाध्यं यत्त्रिदोषोत्थं गुल्मं सोपद्रवं त्यजेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—अतीसार, हिचकी, अरति, रद, शूल, प्यास, कृशता, खेद, सूखी उलटी, दाह, ज्वर, श्वास, खांसी, देहमें सूजन, ये लक्षण युक्त जो गुल्मरोगवाला वो सुषेणादिवैद्योंसे अच्छा नहीं हो अर्थात् असाध्यहै ॥ ७ ॥ जिसमें तीनों दोषोंके चिह्न मिलतेहों उसे सन्निपातका गोलाजाने, और जिसमें दो दोषोंके चिह्न मिलतेहों वो द्विदोषज गुल्म जाने ॥ ८ ॥ जो एक दोषसे पैदा हुआहो वो साध्य दो दोषयुक्त याप्यहै, त्रिदोषोत्थ असाध्यहै, और उपद्रवयुक्त गुल्मीको वैद्य त्यागदे ॥ ९ ॥

गुल्मकेदशउपद्रव ।

शोफस्तंद्रारुचिश्छर्दिर्हृल्लासः कृशतातृषा ॥ शूलं स्वेदोऽङ्गदाहश्च गुल्मस्योपद्रवादश ॥ १० ॥

इति हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे गुल्मलक्षणम् ।

अर्थ—१ सूजन, २ तंद्रा, ३ अरुचि, ४ वमन, ५ हृल्लास, ६ कृशता, ७ प्यास, ८ शूल, ९ पसीना, १० दाह, ये गुल्मरोगके दश उपद्रवहैं ॥ १० ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां गुल्मरोगनिदानम् ॥

अथ हृद्रोगनिदानम् ।

शस्त्राभिघातात्पवनस्य रोधनादत्युष्णतिक्ताम्लकषायभोजनात् ॥ अत्युच्चपाताद्भ्रमनादतिश्रमाद्धृद्रामयः स्याद्गुरुभारधारणात् ॥ १ ॥

वादीके हृद्रोगका लक्षण ।

हृद्बाधा कुरुते मरुत्प्रकुपितः संदूषयित्वा रसं हृत्स्थो गुंजति पीडयत्यनुदिनं मर्माणि संतोदते ॥ पार्श्वास्थीनि विदारयत्यविरतं शोषं मुखे हृद्गले ह्याध्मानं च मुहुर्मुहुर्वितनुते श्वासं सकासं ज्वरम् ॥ २ ॥

पित्तके हृद्रोगका लक्षण ।

पित्तः कोपसमन्वितो हृदि गतः संशोषयित्वा रसं हृत्पीडामधिकां निरंतरतृषा दाहं शिरःपीडनम् ॥ ऊष्माणं हृदयोदरे नसि मुखे शूलं महादारुणं मूर्च्छास्वेदविपाकमोहमरतिं जानीहि तं हृद्रुजम् ॥ ३ ॥

अर्थ–शस्त्रके लगनेसे पवनके वेगको रोकनेसे, अतिगरम तथा कडुआ, खट्टा, कसेला भारी ऐसे भोजनसे, उच्चस्थानके गिरनेसे, वमनसे, अतिश्रमसे, भारीबोझ उठानेसे हृदयमें रोग होताहै ॥ १ ॥ कुपित वात हृदयमें स्थित रसको बिगाडकर हृदयरोगको करे, तथा गूंजे, नित्य हृदयमें, पीडाहो, मर्मस्थानोंमें पीड़ाहो पसवाडोंकी हड्डीनमें पीडा हो, मुख हृदय गलेमें शोष, अफरा बारबारमें हो श्वास, खांसी, ज्वर, ये वात के हृदयरोगके लक्षणहैं ॥ २ ॥ कुपित हुआ जो पित्त सो हृदयमे प्राप्तहोकर रसको बिगाड हृदयमें पीडा, प्यास, दाह, शिरमें दर्द, गरमी, हृदयमें पेटमें, नसोंमें, मुखमें, शूलहो, मूर्छा, पसीना, पाक, बेहोशी, अरति, ये लक्षण पित्तके हृद्रोगके हैं ॥ ३ ॥

कफके हृद्रोगकालक्षण ।

श्लेष्मा संकुपितः करोति हृदये पीडां सकण्ठेऽरुचिं माधुर्यं वदनेऽनलस्य कृशतां तंद्रां गुरुत्वं तनौ ॥ संस्रावं कफसंचयस्य वमनं हृल्लासशूलं ज्वरं हृद्रोगो भिषगुत्तमैर्निगदिताश्चिह्नैरमीभिर्भृशम्॥

सन्निपातकेहृद्रोगकालक्षण ।

तद्धृद्रोगं त्रिदोषोत्थं विद्याच्चिह्नैस्त्रिदोषजैः युक्तं सोपद्रवं वैद्यस्त्यजेन्नूनं विदूरतः ॥ ५ ॥

कृमिकेहृद्रोगकालक्षण ।

शोफश्वेतासि संभ्रमो नयनयोः कार्ष्ण्यं तमो गौरवं चोत्क्लेदो विक्षतिस्तृषा भवति तन्निष्ठीवनं मेहनम् ॥ हृल्लासोऽरुचिरंतरे कृश-

चपुः शूलं सकंडूव्यथा हृद्रोगे कृमिसंभवे निगदितं चिह्नं सुषेणादिभिः ॥ ६ ॥ शोषः क्लमो भ्रमः स्वेदो हृद्रुजः स्युरुपद्रवाः ॥ चत्वारो घोररूपास्ते मुनिभिः परिकीर्तिताः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे हृद्रोगलक्षणम् ॥

अर्थ–कुपित हुआ जो कफ सो हृदयमें, कंठमें पीडाकरे, अरुचि, मुख मीठा, अग्निमंद, तंद्रा, देहभारी, कफका गिरना, वमन, हृल्लास, शूल, ज्वर, इन लक्षणोंसे कफका हृद्रोग कहाहै ॥ ४ ॥ त्रिदोषयुक्त चिह्नोंसे सन्निपातका हृद्रोग जाने और उपद्रव युक्तहो उसे वैद्य असाध्यजानकर त्यागदे ॥ ५ ॥ सूजन चित्तमें भ्रम, नेत्र काले, अँधेराआवे, देहभारी, उकलाहट, देहकी विकृति, श्वास, वारवार थूकना, मेहन, हृल्लास, अरुचि, देह कृश, शूल, खुजली, व्यथा, इन लक्षणोंसे सुषेणादि वैद्योंने कृमीका हृदय रोग कहा है ॥ ६ ॥ १ शोक २ ग्लानि ३ भ्रम ४ पसीना, ये चारहृदयके घोर उपद्रव मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ७ ॥

इतिहंसराजार्थबोधिन्या हृद्रोगनिदानम् ॥

अथमूत्रकृच्छ्रलक्षणम् ।

अनूपमांसाशनमद्यसेवनैः कषायतीक्ष्णोष्णविदाहिभोजनैः ॥ व्यायामघर्माध्यशनाध्वजागरैः स्यान्मूत्रकृच्छ्रं बहुकष्टदं नृणाम् ॥ १ ॥ प्रपीडयत्यधोगत्वा मार्गं रुद्ध्वाकफादयः ॥ मूत्रं मुहुर्मुहुः स्वल्पं सकृच्छ्रं कारयंति ते ॥ २ ॥

वातकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मुहुर्मुहुः कष्टतरेण तुच्छं मूत्रं भवेत् पीतनिभं सशूलम् । मेढ्रे च वस्तौ महती प्रपीडा तन्मूत्रकृच्छ्रं पवनात् प्रसूतम् ॥ ३ ॥

अर्थ–अनूप मांसके खानेसे, मद्य पीनेसे, कसेली, तीखी, गरम, दाहकरनेवाली ऐसी वस्तुके खानेसे, दंड कसरतके करनेसे, घाम, अध्यशन, अर्थात् भोजनके ऊपर भोजनसे, रास्ताके चलनेसे, रातमें जागनेसे, मनुष्योंके बहुत कष्टका देनेवाला आठ प्रकारका मूत्र कृच्छ्र रोग, होताहै॥१॥ कफादिकदोष नीचे जायकर मूत्रके मार्गको रोककर और पीडाकरें तब मनुष्यके कठिनसे वारवार, थोडाथोडा पेशाब उतरे उसे मूत्रकृच्छ्ररोग कहते हैं ॥ २ ॥ जो मनुष्य वारवारमें थोडाथोडा मूते, पीला, शूलयुक्त, अंडकोश तथा मूत्रस्थानमें पीडाहो, उसे बातका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मूत्रं भवेद्दाहयुक्तं मुहुर्मुहुः पीतारुणाभं रुधिरेण संप्लुतम् ॥ तप्तं सकष्टं गुदमेढ्रयोर्व्यथा तन्मूत्रकृच्छ्रं किलपित्तजं वदेत् ॥ ४ ॥

कफकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मूत्रं सिताभं परिबुद्बुदान्वितं सपिच्छिलं मेदुरमार्तिदं गुदे ॥ लिंगे च योनौ बहुशोफगौरवं तन्मूत्रकृच्छ्रं कफसंभवं त्यजेत् ॥५॥

कष्टसाध्यासाध्यलक्षण ।

द्विदोषोद्भवं मूत्रकृच्छ्रं सदाहं भवेत्कष्टसाध्यं प्रयत्नौषधीभिः ॥ त्रिदोषोत्थितं दारुणं प्राणनाशं निरुक्तं मुनींद्रैरसाध्यं नितांतम् ६॥

अर्थ–जिस रोगीका पेशाब दाहकेसाथ उतरे, वारवार और पीलाहो लालहो रुधिर मिलाहो, तप्त और कष्टसे उतरे, गुदा और अण्डकोशमें दर्दहो उसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ ४ ॥ जिसका मूत्र सपेद और बबूले सयुक्त गाढा और चिकनाहो, गुदामें दर्दहो, लिंग और योनीमें सूजनहो, देहभारी, ये लक्षण कफके मूत्रकृच्छ्रकेहैं ॥ ५ ॥ दो दोषसे हुआ जो मूत्रकृच्छ्र दाह-युक्त सो मंत्र औषधियोंसे कष्टसाध्य कहाहै, और त्रिदोषसे हुआ सो प्राणकानाशक मुनीश्वरोंने असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥

मूत्रकृच्छ्रम्भवेद् घातात्संरोधान्मूत्रशुक्रयोः ॥ शल्यात्पातात्क्षतात्कष्टाद्बस्तिमेहनशूलकृत् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे मूत्रकृच्छ्रलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ-मूत्र और वीर्यके रोकनेसे, घात, शल्यसे, पडनेसे, घावसे, कष्टसे मूत्रस्थान लिंगमें दर्दका करनेवाला मूत्रकृच्छ्ररोग पैदा होताहै ॥ ७ ॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यां मूत्रकृच्छ्रनिदानम् ॥

मूत्राघातकीउत्पत्ति ।

नाभेरधोधः प्रगतास्त्रिदोषा भवन्ति ते कुंडलिकासमानाः ॥ स्वहेतुभिः संकुपिता भ्रमंति कुर्वंति पश्चाद्बहुमूत्रघातान् ॥ १ ॥ नाभेरधो यदा वायुः कुंडलाकारसंस्थितः ॥ आध्मापयन् गुदं बस्तिमूत्राघातो भवेत्तदा ॥ २ ॥ मूत्रस्य वेगं विदधाति तीव्रमपानवायुः कुपितस्तु तेन ॥ नाभेरधोर्ध्वं महतीं प्रपीडां करोति यस्तस्य नरस्य नूनम् ॥ ३ ॥

अर्थ–दोष नाभिके नीचे जाय कुंडलीके समान होकर और अपने हेतुनसे कुपितहो भ्रमण करै पश्चात् मूत्राघातरोगको प्रगट करतेहैं ॥ १ ॥ जब पवन नाभिके नीचे कुंडलाकारहो गुदा मूत्रस्थानमें भरजावे तब मनुष्यके मूत्राघात रोग होताहै ॥ २ ॥ जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै तब, उसके अपान वायु कुपितहो नाभीके ऊपर नीचे भारी पीडा करै उसे मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ॥ ३ ॥

वातकमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

वातोधःप्रगतो रुणद्धि पुरतो मूत्रं पुरीषान्वितं मेढ्रे बस्तिगुदे दधाति महतीं पीडां च शोफान्वितम्॥आध्मानं कुरुते मुहुर्मुहुरतो मूत्रं सकृत्कष्टदम्॥कृष्णाभं पवनोद्भवं निगदितं तन्मूत्रघातंपरैः॥४॥

पित्तकेमूत्राघातकेलक्षण ।

मेढ्रं वस्तिं गुदाग्रं दहति बहुतरं मूत्रमार्गं रुणद्धि स्वल्पं स्वल्पं सकृच्छ्रम्बहुरुधिरयुतं कारयत्येवमूत्रम् ॥ धत्तेधोगत्यकोपं वितरति वलयाकाररूपं च पित्तं तत्पैत्त्यं मूत्रघातं निगदितमृषिभिर्मानसैः सद्भिषग्भिः ॥ ५ ॥

कफकेमूत्राघातकालक्षण ।

श्लेष्माधोगत्यशोफं वितरति गुरुतां मूत्रमार्गं रुणद्धि मेढ्रे वस्तौ गुदाग्रे प्रवहति सरुजं कारयत्येव मूत्रम् ॥ तुच्छं तुच्छं सकष्टं क्वचिदपि बहुशो मेदुरं श्वेतवर्णं सान्द्रं शीतं सफेनं कथितमृषिवरैर्मूत्रघातं कफस्य ॥ ६ ॥

अर्थ–वात नीचे जायकर दस्त पेशावको रोके अंडकोश और मूत्रस्थानमें सूजनके साथ भारीपीडा करै, अफरा, और वारवार कष्टसे थोडा पेशाव काले रंगका उतरे, उसे वातका मूत्राघात कहते है ॥ ४ ॥ कुपित हुआजो पित्त सो नीचे जायकर कंकणके आकारहो अंडकोश और मूत्रस्थानमें तथा गुदाग्रमें पीडाकरै, मूत्रके मार्गको रोकदे, थोडाथोडा कठिनतासे बहुत रुधिरमिला मूते, उसे ऋषि और वैद्योंने पित्तका मूत्राघात रोग कहाहै ॥ ५ ॥ कफ नीचे प्राप्तहो सूजनको करै देहभारी, मूत्रके मार्गोंको रोकदे, मेढ्र वस्ति, गुदा इनमें पीडा करै, थोडा थोडा कठिनतासे कभी बहुतसा चिकना सफेदरंगका गाढा शीतल झागमिला ऐसा पेशाव उतरै, उसे कफका मूत्राघातरोग ऋषियोंने कहा है ॥ ६ ॥

मूत्राघातं द्विदोषोत्थं त्रिदोषोत्थं भिषग्वरैः ज्ञायते लक्षणैः सर्वैर्वातपित्तकफोद्भवैः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषकूचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे मूत्राघातलक्षणम् ॥

अर्थ—दो दोषोंके लक्षणोंमें द्विदोषका मूत्राघातरोग जानना त्रिदोषसे सन्निपातका मूत्राघात चैथों करके जानना ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां मूत्राघातनिदानम् ॥

अथाश्मरीरोगनिदानम् ।

स्त्रियां योनिरंध्रे शिशुनां च मेढ्रे भवत्यश्मरी मूत्रवेगस्य रोधात् ॥ मरुच्छ्लेष्मपित्तैर्भवाशुक्रजान्या महादुःखदा प्राणहंत्री प्रसिद्धा॥१॥

वातकीअश्मरीकालक्षण ।

रूक्षावातभवाश्मरी गुरुतरा भल्लातमज्जासमा शिश्नं छिद्रगतारुणद्धि परितो मूत्रं विगंधान्वितम् ॥ पीडां मूत्रपुरीषयोर्वितनुते मेढ्रे गुदे वस्तिषु ह्याध्मानं कुरुते रुचिं कृशतनुं ग्लानिं ज्वरं बिभ्रते ॥ २ ॥

पित्तकीपथरीकेलक्षण ।

सूक्ष्मापित्तसमुद्भवामणिनिभा खर्जूरतुल्यारुणा तता कंटकसंयुताथ चिपिटा शिश्नेगता याश्मरी ॥ छिद्रं मूत्रपुरीषयोर्दहति या योनौ रुजं वर्द्धते मूत्रं कृच्छ्रतमं सदाहमनिशं तृष्णाङ्करोति द्रुतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मूत्रके वेग रोकनेसे स्त्रियोंकी योनिमें और बालकोंके अंडकोशोंमे पथरीका रोग होताहै १ बादीसे २ पित्तसे, ३ कफसे, ४ शुक्रसे, चार तरहकी है महादुःखकी देनेवाली प्राणकी नाशक प्रसिद्ध॥ १ ॥ वातकी पथरी रूखी भारी भिलावेकी मज्जाके समानहो, इंद्रीमें प्राप्तहो इन्द्रीके छिद्रको रोकदे मूत्रमें बास आवे, पेशाब और दस्त के समय गुदा मूत्रस्थान और पोतोंमें दर्द हो, अफरा, अरुचि, कृशदेह, ग्लानि, ज्वर ये लक्षण वातकी पथरीकेहैं ॥ २ ॥ छोटी हो, मणिके समानहो, खजूरके फलके तुल्य, लालहो गरम तथा कांटे और चपटी लिंगमेंहो मूत्र दस्तके छिद्रको दहन करै, योनिमें दर्दहो, कठिनतासे दाहयुक्त पेशाब उतरै, प्यासहो, ये लक्षण पित्तकी पथरीके हैं ॥ ३ ॥

शूलं मेढ्रगुदे भगे प्रलपनं कार्श्यं ज्वरं कंपनमूष्माणं विदधाति वस्तिगुदयोर्मूत्रस्य धारारुणम् ॥ वैक्षीण्यं परितो रुणद्धि सहसा पार्श्वोदरे पीडनं घोरा पित्तभवाश्मरी निगदिता वैद्योत्तमैः प्राणहा ॥ ४ ॥

कफकीपथरीकालक्षण ।

स्निग्धाम्रमज्जासदृशाकफोद्भवा श्वेताश्मरीकंटकवेष्टितादृढा ॥ शीतातिमध्ये गुदशिश्नयोर्भवासंजायते मूत्रनिरोधनाच्छिशोः॥५॥ शैथिल्यंकुरुतेश्मरीकफभवा शिश्नान्तरे तोदनं धैर्यं नाशयतेऽरुचिं वितनुते ह्यङ्गं मुहुः कंपते ॥ मूत्रं श्वेतनिभं रुणद्धि गुरुतां काये शिरःपीडनं धत्ते पांडुरुजं तनौ कृशवपुर्निद्रालसं विन्दते ॥ ६ ॥

अर्थ–अंडकोश, गुदा, भग इनमें शूलहो, प्रलाप, कृशता, ज्वर, कम्प, गुदा और मूत्रस्थानमें गरमी, तथा मूत्रकीधार लालहो, क्षीणता, पेशाबका रुकना, पसवाडोंमें तथा पेटमें दर्द ऐसे लक्षणोसे वैद्योंने प्राणकी नाशक पित्तकी पथरी कहीहै ॥ ४ ॥ चिकनी, आमकी गुठलीके समान हो, सपेद और काटेयुक्त, दृढ, शीतल, तथा गुदा और लिङ्गेंद्रियके मध्य हुई हो, ये बालकके मूत्रबाधा रोकनेसे पैदा होतीहै ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ॥ ५ ॥ शिथिलता, इन्द्रियमें पीडा धैर्यका नाश, अरुचि, अंगोमें कम्प, सपेद पेशाबहो, और रुकरुक कर उतरै, देहभारी, शिरमें दर्द, पाण्डु, और कृशता देहमें, निद्रा, आलस्य ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ॥ ६ ॥

वीर्य्यरोधकीपथरीकालक्षण ।

यूनां वीर्यस्य रोधाद्भवति च महती शुक्रजाताश्मरी या शिश्नं वस्तिं गुदां वै रुजयति वृषणं मूत्रमार्गं रुणद्धि॥दौर्बल्यं कुक्षिरोगं वितरति सहसा शुक्रनाशं करोति तुच्छं तुच्छं सकष्टं क्वचिदपि बहुशः कारयत्येव मूत्रम् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे अश्मरीलक्षणम् ।

अर्थ–जवानपुरुषोंके वीर्यके रोकनेसे जो पथरी रोगहो उसके ये लक्षण हैं, लिंग, मूत्रस्थान, गुदा, में पीडाहो, तथा अंडकोशोंमें दर्दहो मूत्रके मार्गको रोकदे, दुर्बलता, कूखमें दर्द, शुक्रका नाश, कष्टसे कभी थोडा कभी बहुत पेशाबउतरे ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामश्मरीलक्षणम् ॥

अथप्रमेहलक्षणम् ।

दधिमधुघृतदुग्धं मद्यपानं नवान्नं फलरसमतिमिष्टं तक्रमिक्षोर्विकारम्॥ रविकृतपरितापः सुन्दरीस्त्रीकटाक्षैर्भवति विषमचेतो मेह हेतुर्नितांतम् ॥ १ ॥

वातकीप्रमेहकालक्षण ।

मूत्राग्रे वाथ पश्चात्प्रपतति सततं शुक्रमिक्षोरसाभं यामे याम द्वये वा क्वचिदपि समये पातमाप्नोति दोषैः ॥ निर्गंधं तक्ररूपं लवणजलनिभं दुग्धतुल्यं सुराभं रूक्षं वातप्रमेहं प्रवदति चरकः कृष्णवर्णं च नीलम्॥ २॥ मेहो वातसमुद्भवः प्रकुरुते शूलं महादारुणं हृद्रोगं पिटिका मुखे मधुरतां श्वासं शरीरं कृशम्॥ आध्मानं तनुपीडनं विकलतां शोषं च कासान्वितं ह्युन्निद्राग्निबलनाश नश्चपलतां रूक्षां त्वचं साहसम् ॥ ३ ॥

अर्थ–दही, सहत, घी, दूध, मद्यके, पीनेसे नवीनअन्न फल रस अतिमीठा छांछ ईखके विकारसे सूर्यके घामसे सुंदरस्त्रीके कटाक्षसे चित्तमें प्रमेहका हेतु होताहै॥ १॥पेशाब करनेके पहिले या पीछे ईखकासारंग ऐसा शुक्र गिरे पहर पहरमें या दोपहरमें दोषोंके होनेसे दुर्गंधयुक्त छांछके समान, या नोनके पानीसरीखा, दूधके समान, मद्यके समान रूखाहो ये लक्षण वातकी प्रमेहके चरक ऋषिने कहे हैं ॥ २ ॥ वातका प्रमेह दारुणशूल हृदयरोग मरोडी मुखमें मिठास श्वास देहकृश अफरा देहमें पीडा बेकली शोष खांसी निद्रा बलका नाश चपलता त्वचामें रूखास साहस ये लक्षण करताहै ॥३॥

पित्तकीप्रमेहकालक्षण ।

घनं पावकाभं हरिद्रानिभं वारुणं रक्ततुल्यं च सिंदूरवर्णम् ॥ प्रमेहं च पित्तोद्भवं वैद्यराज विजानीहि मंजिष्टकावर्णतुल्यम् ॥४॥ कषायश्च मूत्रं करोति प्रमेहो रतिं पित्ततः कष्टसाध्योऽतिकृच्छ्रम्॥ ज्वरं वस्तिशूलं कृशांगं पिपासां क्लमं मेढ्रदाहं भ्रमं शोषमंगे ॥५॥

कफकेप्रमेहकालक्षण ।

घृतदधिवसरूपं दुष्टदुर्गंधयुक्तं घनमधुसदृशं वा पिच्छिलं मेहवर्णम्॥ सितलवणनिभं वा मेदुरं तंतुमिश्रं बुधजन किलमेहं विद्धि साध्यं कफात्स्यम्॥ ६ ॥

अर्थ–गाढा अग्निके समान वर्ण, तथा पीला वा लाल, अथवा जलकेसदृश, वा मंजीठके वा सिंदूरके रंगकासा पेशाव उतरे, उसे हे वैद्यराज ! पित्तका प्रमेहजानो ॥ ४ ॥ कसेले रंगका रुधिरकेरंगका ज्वरकरे मूत्रस्थानमें पीडा छदा देह प्यास ग्लानि अंडकोशोंमे दाह, भ्रम, शरीरमें शोष, अरति ये पित्तकी प्रमेहके लक्षणहैं, य कष्टसाध्यहैं ॥ ५ ॥ दही, घृत, चर्वीके समान मूत्र, दुर्गंध युक्त गाढा सहतके समान, तथा सफेद मिश्री और नोनके रंगसा और चिकना पेशाव उतरे तन्तु युक्तहो उसको पंडित कफका प्रमेह कहते हैं ॥ ६ ॥

मेहः श्लेष्मसमुद्भवो बलहरः शुक्रस्य विध्वंसक आलस्यं कुरुते रुचिर्वृषणयोः शोथं तनौ पांडुताम् ॥ शैथिल्यं गुरुतां वमिं नयनयो-श्शौक्ल्यं त्वचि स्फोटनं तंद्रारात्रिदिनेऽनिशं मलचयं दन्तांघ्रि-हस्तेष्वलम् ॥ ७ ॥

प्रमेहरहितकेलक्षण ।

यदा प्रमेहिणो मूत्रं कटुतिक्तमपिच्छिलम् ॥ शुद्धंरूक्षं शुभ्रधारं तदाऽऽरोग्यं वदेद्भिषक् ॥ ८ ॥

साध्यअसाध्यकष्टसाध्यविचार ।

मेहः कफोत्थितः साध्यः साध्यः कष्टेन पित्तजः ॥ वातस्त्वृषिभिः पूर्वैरसाध्यः परिकीर्तितः ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे प्रमेहलक्षणम् ॥

अर्थ–कफका प्रमेह बल हरता, शुक्रका नाशकरता, आलकस, अरुचि पोतोंपर सूजन, शरीर पीला, और शिथिल तथा भारी, वमन, नेत्र सफेद, त्वचाका फटना, रात, दिन तन्द्राका होना, दांत, जीभ, हाथ, पैरोंमें मैलका समूह होना ये लक्षण करताहै ॥ ७ ॥ जिन प्रमेहवालेका पेशाव कडुआ, तीखा, पतला, शुद्ध, रूखा, सफेद धारका उतरे, उसका प्रमेह दूरभया जानिये ॥ ॥ ८ ॥ कफका प्रमेह साध्यहै, पित्तका कष्टसाध्यहै, वातका प्रमेह पूर्व ऋषियोंने असाध्य कहाहै ॥ ९ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां प्रमेहनिदानम् ॥

अथपिटिकारोगनिदानम् ।

तिक्ताम्लोष्णविदाहिरूक्षकटुकक्षारातपाध्यश्रनैर्मद्यस्निग्धविरुद्धभोजनरसैर्दुष्टैर्नवान्नद्रवैः ॥ दोषं पित्तमरुत्कफाद्विदधते संदूष्य रक्तामिषं त्वक्संभेद्यवहिर्गताश्च पिटिका रूपेण कुप्यन्ति ते ॥ १ ॥

दुष्टग्रहप्रकोपेन दोषामर्मप्रभेदिनः ॥ जनयंति शरीरेषु पिटिका ब-हुधामताः ॥ २ ॥ ज्वरश्छर्दिरतीसारो रक्तांगो तीव्रवेदना ॥ स्वेदे तृषारुचिः श्वासो वैवर्ण्यं विकलोरतिः ॥ ३ ॥

अर्थ-तिक्त, खट्टा, गरम, दाहकरनेवाला, कटु, रूखा, खारी भोजन घाममें डोलनेसे भोजनपर भोजन करनेसे मद्य चिकनी विरुद्ध भोजन और पानसे दुष्ट नवान्न और पतली वस्तुसे कुपितहुये जो वातपित्त कफ सो रुधिर और मांसको बिगाड कर त्वचाको फाडकर फुंसीरूप पिटिका रोग कोप करताहै ॥ १ ॥ दुष्टग्रहके कोपसे तीनोंदोष मर्मस्थानको भेदकर देहमें अनेक प्रकारके पिटिका रोग पैदा करते हैं ॥ २ ॥ ज्वर, रद, अतीसार, देहलाल, तीव्रदुःख, पसीना, प्यास, अरुचि, श्वास, विवर्ण, बेकली, अरति ॥ ३ ॥

पिटिकाका पूर्वरूप ।

अस्थिस्फोटोङ्गदाहश्च शोषः कंडूरुचिर्भ्रमः ॥ पिटिकानां पूर्वरूपं मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ ४ ॥

वातकीपिटिकाकेलक्षण ।

तृष्णा पावकसंनिभाश्च पिटिका वातोद्भवास्त्वग्गताः सूक्ष्मा मुद्गसमा मसूरसदृशाः सप्ताहपाकारुजाः ॥ सूक्ष्माभाश्चिपिटाघ नाश्च परितः कुर्वंति पीडाभयं दाहानाहतृषाक्षवार्तिवमथुश्वासा-तितापाकराः ॥ ५ ॥

पित्तकीपिटिकाकालक्षण ।

अस्थिस्फोटः पर्वभेदोंगदाहः श्वासः शोषो विड्ग्रहो मूत्रकृ-च्छ्रः॥रौद्रास्स्फोटारक्तजारक्तवर्णा वैद्यैरुक्तं पित्तकोपस्य चिह्नम्॥६॥

अर्थ-हड्फूटन, देहमें दाह, शोष, खुजली, अरुचि, भ्रम, ये मुनीश्वरोंने पिटका रोगका पूर्वरूप कहाहै ॥ ४ ॥ काली, अग्निके रंगकी, त्वचामें फुंसीहों छोटी और मूंगके समान तथा मसूरके समान सात दिनमें पकें कमदीखें चपटी और कठोरहों और पीडा भयको देनेवाली, दाह, आनाह, प्यास, छींक, मथवाय, श्वास, अत्यंत तापको करनेवाली, वातकी, पिटिका जाने ॥५॥ हड्फूटन, गांठोंमें दर्द, अंगोंमें दाह, श्वास, शोष, दस्तका रुकना, मूत्रकृच्छ्र, रौद्र, फोडे, रक्तसे पैदा लालरंगके हों तो वैद्य पित्तकी पिटिका जाने ॥ ६ ॥

कफकीपिटिकाकेलक्षण ।

पिटिका कफकोपभवाः कठिनाः स्फटिकद्युतयो बहुधा कृतयः ॥ चिरपाकरुजास्तनुशोककरा बदरीफलपक्वसमारुचयः ॥ ७ ॥

श्लेष्मा कोपेन कुर्यात्त्वाचि पिटकशतं बुद्बुदाकारतुल्यं शोफ प्रांतं कठोरं बदरफलसमं मांसत्वग्भेदजातम् ॥ निद्रां तन्द्रां पिपासां भ्रममरुचिवमिं कासमंगेषु पीडां श्वासं कंडूप्रसेकं ह्यवयवशिथिलं शीर्षरोगं ज्वरार्तिम् ॥ ८ ॥ वातपित्तभवानीला मध्ये निम्ना ज्वरान्विताः ॥ भवंति पिटिकाः क्षुद्राः शोपदाहतृषा युताः ॥ ९ ॥

अर्थ–कफ कोपकी पिटिका, कठिन, स्फटिक मणिके समान, तरह तरहकी, देरमें पकें, देहमें सूजनहो, पके बेरके समान कान्तिहो ॥ ७ ॥ कफकोपकी पिटिका त्वचामें सैंकडों फुन्सीको बबूलेके आकार, उसके चारों ओर सूजन, तथा कठिन बेरफलके समान मांसत्वचाको फाडकर प्रगटहो, निद्रा, तंद्रा, प्यास, भ्रम, अरुचि, वमन, खांसी, अंगोंमें पीडा, श्वास, खुजली, लारका गिरना, शरीरके अवयव शिथिल, शिरमें दर्द, ज्वर तथा खेद ये कफकी पिटिकाके लक्षणहैं ॥ ८ ॥ वात पित्तकी पिटिका नीले रंगकी, बीचमें बैठीसीहो, ज्वरहो और क्षुद्रा पिटिका दाह, शोष, प्यासयुक्त होतीहैं ॥ ९ ॥

स्थूलाः श्वेताः प्रोन्नता दुश्चिकित्स्याः पूयस्रावाः स्फोटकाः कष्टपाकाः ॥ स्निग्धाः कंडूशोफतंद्रापिपासाकासश्वासारोचकातापयुक्ताः ॥ १० ॥ संभूताः कफवाताभ्यां विज्ञेयाः पंडितैर्नरैः ॥ अतः परं तु ज्ञातव्या विस्फोटाः कफपित्तजाः ॥ ११ ॥ रोगार्त्तैः पिटिकाघना बुधजनैर्ज्ञेयाश्च निम्नोन्नताः पित्तश्लेष्मभवाविवृत्तवदनास्स्थूलाः शिरोर्तिप्रदाः॥ वक्त्रेभ्यो रुधिरस्रवाश्चिमिचिमामूर्च्छा पिपासान्विता निद्राकंडुविवर्णताशिथिलताकंठांगपीडाकराः॥१२॥

अर्थ–मोटी, सफेद, ऊंची, जिनका कठिन उपाय, राधबहे, कष्टसे पके, चिकनी और खुजली, सूजन, तंद्रा, प्यास, खांसी, श्वास, अरुचि, ज्वर ऐसी पिटिका वातकफकी जाननी ॥ १० ॥ इस श्लोकका अन्वय दूसरे अगाडीके श्लोकमें लगता है ॥ अब इसके आगे पित्तकफकी पिटिकाके लक्षणजानो ॥ ११ ॥ रोगीकी फुन्सी कठिन, नीची, ऊंची, मोटी, खुले मुखकी, शिरमें दर्दकी करनेवाली, रुधिर चुचावे, चिमचिमीयुक्त, मूर्छा, प्यास, निद्रा, खुजली, विवर्णता, शिथिलता, कंठ अङ्गोंमें पीडाहो, ये लक्षण पित्तकफकी पिटिकाके होते हैं ॥ १२ ॥

संनिपातकीपिटिकालक्षण।

असाध्याः पिटिकाज्ञेया वातपित्तकफोद्भवाः ॥ उत्पद्यन्ते विली-

यंते शरीरे रोगिणां पुनः ॥ १३ ॥ पित्तश्लेष्ममरुद्भवाश्च पिटिकाः पूयस्रवा रक्तदा आध्मानं तनुगौरवं विकलतां कुर्वंत्यसाध्यारुजाः॥ दाहं शोफतरं तृषां वहुमुखाः पाके च दुःखप्रदाः अस्थिस्फोटमहर्निशं वहुतरं श्वासं विवृत्ताननाः ॥ १४ ॥ रक्तस्रावं नासिकाकर्णनेत्रास्येभ्यो मूर्च्छां मंडलं मांसकोचम् ॥ हिक्कांकासं मूत्रकृच्छ्रांगभेदं कृष्णाः स्फोटा मृत्युदा दुश्चिकित्स्याः॥ १५ ॥

अर्थ–वात पित्त कफकी पिटिका रोगीके देहमें पैदाहों और नाशहों वो असाध्य है ॥ १३ ॥ सन्निपातकी पिटिकामें रुधिर और राध चुचाय, अफरा, देहभारी, बेकली, दाह, सूजन, प्यास वहुतसे मुखहों, पकनेके समय दुःखहो, हडकल हो, श्वास, तिरछे नेत्र ये असाध्य पिटिकाके लक्षणहैं ॥ १४ ॥ नाक कान नेत्र मुख इनसे रुधिर चुचाय, मूर्च्छाहो, खूनके चकत्तेहों,मांसका संकोचहोना, हिचकी, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, अंगोंमें पीडा, कालेरंगके फोडा ये लक्षण मृत्युके करनेवाले चिकित्सा रहित जानने ॥ १५ ॥

त्वचामेंगतपिटिकालक्षण ।

त्वग्गताः पिटिकाज्ञेया जलबुद्बुदसन्निभाः॥स्वल्पदोपजलस्रावाः सुखसाध्या भिषग्वरैः ॥ १६॥

रक्तमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

रक्तस्था रक्तभाः साध्याश्शीघ्रपाकास्तनुत्वचः ॥ रक्तस्रवाविदीर्णास्या विज्ञेया पिटिकाः परैः ॥ १७ ॥

मांसमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

मांसस्थाः पिटिकाः स्निग्धाः कठिनाः कठिनत्वचः ॥ चिरपाका ज्वरश्वासकंडूदाहतृषान्विताः ॥ १८ ॥

मेदमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

मेदजाः पिटिकाः स्निग्धाः स्थूलाज्वरसमन्विताः ॥ मृदवो मंडलाकाराः पीताभाः किंचिदुन्नताः ॥ १९ ॥

मज्जामेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

रूक्षामुद्गसमाः क्षुद्राश्चिरपाकसमान्विताः ॥ मज्जस्थाश्चिपटा ज्ञेयाः सव्यथाः किंचिदुन्नताः ॥ २० ॥

अर्थ--जलके बबूलेके समानहो, थोडे दोषयुक्त, जल चुचावे और त्वचामेंहो वो वैद्योंने सुख साध्य कही है॥१६॥जो फुन्सी लालरंगकीहो, जल्दी पके, नर्मत्वचाहो, रुधिर चुचाय, खुलेमुखकी, वो रक्तगत पिडिका जाननी येभी साध्यहै ॥१७॥ मांसमें प्राप्त पिडिका कठिन, चिकनी, करडी त्वचेवाली, देरमें पके, ज्वर, श्वास, खुजली, दाह, प्यास इनसे युक्त होती है ॥ १८ ॥ चरबीमें प्राप्तपिडिका चिकनी, मोटी, ज्वरयुक्त, गरम, गोलमंडलके आकार, पीली, कुछ ऊंची होती है ॥ १९ ॥ रूखी, मूंगके समान छोटी, देरमें पकनेवाली, चपटी, दर्द युक्त, कुछऊंची, मज्जागत पिडिका जाननी ॥ २० ॥

हाडमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

अस्थिस्थाः पिटिकाः कुर्य्युर्भ्रमं दाहं तृषां ज्वरम् ॥ छिंदंति मर्म धामानि प्राणानाशु हरंति च ॥ २१ ॥

शुक्रमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

शुक्रस्थाः पिटिकाः कुर्य्युः स्तैमित्यं बहुवेदनाम् ॥ प्राणनाशं शिरःकंपं श्वासं कासं ज्वरान्वितम् ॥ २२ ॥

असाध्यशीतलाकालक्षण ।

मसूराभिभूतस्य कर्णाक्षिनासामुखेभ्यः स्रवेदस्यरक्तंनितांतम् ॥ विवर्णार्तिहिक्कातृषापीडितस्य सरोगी यमस्यालये याति नूनम्२३

अर्थ--अस्थिमें प्राप्तपिडिका ये लक्षण करतीहै भ्रम, दाह, प्यास, ज्वर, मर्ममर्ममें पीडा और जल्दी प्राणोंकानाश करे ॥ २१ ॥ शुक्रमें प्राप्त पिडिका देहगीला, बहुत दुःख, प्राणोंकानाश करे शिरमें कंप, खांसी, श्वास, ज्वर ये लक्षणकरतीहै ॥ २२ ॥ शीतलावाले रोगीके कान नाक मुख नेत्रसे रुधिरगिरै विवर्ण तथा दर्द हिचकी प्यास ये लक्षण होनेसे असाध्य जानना ॥ २३ ॥

दोषैकेनोत्थिताः साध्याः कष्टसाध्याद्विदोषजाः ॥ पिटिकाः सान्निपातोत्था मृत्युदाः कीर्त्तिताः परैः ॥ २४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे मसूरिकानिदानम् ॥

अर्थ--एकदोषसे उठी साध्य, द्विदोषसे उठी, कष्टसाध्य, त्रिदोषसे उठी वो फुन्सी मौतकी देनेवाली कहीहै ॥ २४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां पिटिकारोगनिदानम् ।

अथपिटिकारोगनिदानम् ।

सराविका कच्छपिकाथजालिनी मसूरिका सर्षपिका च पुत्रिणी॥ विदारिका विद्रधिका तु पिंडिका तथांजली ज्ञेः पिटिका द-शस्मृताः ॥ १ ॥

प्रमेहसेउत्पन्नापिटिका ।

मेहोत्थाः पिटिका भवंति दशधा बाल्ये कचिद्यौवने कायस्यां तरबाह्ययोः प्रजनिता नृणां स्त्रियां भूयशः ॥ ताः कुर्वंति महज्ज्वरं नयनयोर्मुद्रां शिरःपीडनं हृल्लासांतरगुंजनं विकलतां निद्रांग विक्षेपणम् ॥२॥ अस्थिस्फोटनमंगदाहमरतिं श्वासं च कासं रुजं दौर्गध्यं परीतःस्त्रवं विलपनं शोपं शरीरेनिशम्॥ मूकत्वं बधिरं कृ-शत्वमरुचिं संधिग्रहंसंभ्रमं वैवर्ण्यं शिथिलं नरं गतबलं कुर्वंति वी-र्यक्षयम् ॥ ३ ॥

अर्थ–१ सराविका, २ कच्छपिका, ३ जालिनी, ४ मसूरिका, ५ सर्षपिका, ६ पुत्रिणी, ७ विदारिका, ८ विद्रधिका, ९ पिण्डिका, १० अंजली ये वैद्योंने दश प्रकारकी पिटिका कही हैं ॥ १ ॥ प्रमेहसे उठी पिटिका दशतरहकी बालक अवस्थामें कभी जवानपनेमें होतीहैं, देहके बाहर भीतर स्त्रीपुरुषोंके बहुतसी ये ज्वर, नेत्रकामुंदजाना, शिरमें दर्द, सूखी रद, आंतोंका बोलना, बेकली, निद्रा, अंगोंका फैंकना. इन लक्षणोंको करतीहैं ॥ २ ॥ हडकल, अंगोंमें जलन, अरुचि श्वास, खांसी, दुर्गंध, स्राव, विलाप, शोप, बहिरापना, तथा गूंगापना, कृशता, अरुचि, संधियोंमें पीडा भ्रम,, विवर्णता, शिथिलता, बलहीन, वीर्यका क्षयपना, ये लक्षण पिटिका रोगके हैं ॥ ३ ॥

पिटिकाः कर्बुरानीलामलिनांतर्गताः शिताः ॥ मृत्युप्रदारक्तवर्णाः पाटलाः कष्टदाः स्मृताः ॥ ४ ॥ किंचित्कष्टप्रदाः पीताः पिशंगाः पिंगलास्तथा॥ स्वभ्राः स्फटिकसंकाशाः स्निग्धाः सुखकराःस्मृताः ॥ ५ ॥ मर्मस्थलेषु वांसेषु जायंते संधिपून्नताः॥ पिटिकाः श्वेतरक्ता-भा मध्यगर्त्ताः सराविकाः ॥ ६ ॥

अर्थ–धूसरे रंगकी, नीले रंगकी, मलिन,भीतर सपेदहो यो मृत्युकी देनेवाली पिटिका जाननी और लाल या गुलाबीरंगकी कष्टदेनेवाली होतीहै॥ ४ ॥ पीलेरंगकी हरतालके रंगकी पिटिका कुछ कष्टदेती है नीबुआ रंगकी, स्वच्छस्फटिक मणिके रंगकी,चिकनी, सुखकरनेवाली होती है ॥५॥ मर्ममें और मांसमें तथा संधियोंमे उठीहुई सपेदलाल रंगकी बीचमे गड्ढाहो उसको सराविका कहतेहैं॥६॥

कूर्मरूपामहापुष्टा वर्त्तुलाज्वरदाहदाः ॥ जायंते पिटिकाः सर्वाः कच्छप्यस्ताउदाहृताः॥७॥तीव्रदाहप्रदामांसे सक्लेदावर्द्धतेरुजम् ॥ जालवद्वेष्टयत्यंतं प्रोक्ता सा जालिनीबुधैः ॥८॥ मसूरदेहवत्सूक्ष्मा रक्ताभा सा मसूरिका॥गौरसर्षपभा स्निग्धा तत्प्रमाणा च सर्षपा॥९॥

अर्थ–कछुएकेसा स्वरूपहो, ज्यादा मोटीहो, बत्तीकी तरहहो, ज्वर और जलनको करे ये लक्षण कच्छपिकाके हैं ॥ ७ ॥ तीव्र जलन, मांसमेंही क्लेशयुक्त पीडाको बढावे, और जालकी तरह चिपटे उसे पंडित जालिनी कहते हैं ॥ ८ ॥ मसूरकी दालकी समान छोटी, और लाल हो, उसे मसूरिका कहतेहैं और सपेद सरसोंके समानहो और चिकनी हो उसे सर्षपिका कहते हैं ॥ ९ ॥

पिटिकासु प्रजायंते पिटिका घोरदर्शनाः॥ पुत्रिण्यस्त्वार्तिदानीलाः प्रोक्तावैद्यैर्विशारदैः॥१०॥ अतिदीर्घासशोफाया परस्परयुता रुणा ॥ विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ता प्रोक्ता विद्रधिका बुधैः ॥ ११ ॥ विदारिकंदवद्दीर्घा कठिना दुःखकारिणी ॥ ज्वरार्तिदा क्षुधाहारी विज्ञेया सा विदारिका ॥ १२ ॥

अर्थ–जो फुन्सीमें दूसरी फुन्सी घोर पैदाहो और पीडायुक्त हो और नीलेरंगकी हो उसे पुत्रिणी कहते हैं ॥ १० ॥ बहुत बडी सूजनयुक्त और परस्परमिली हुईहो लालरंगहो और विद्रधिके लक्षण मिलतेहों उसे वैद्योंने विद्रधिका कही है ॥ ११ ॥ विदारीकंदके समान मोटीहो कडी दुःखकारक ज्वर, खेद, भूखकानाश करनेवाली उसको विदारिका कहते हैं ॥ १२ ॥

पिंडीवत्पिंडिका ज्ञेया देहशोफकरीसिता ॥ व्यक्तांजुल्याकृतिर्ज्ञेया वैद्यैः सा विततांजुला ॥ १३ ॥ पिटिकार्तिविनाशाय शीतलां पूजयेत्सुधीः ॥ पुष्पैर्धूपाक्षतैर्दीपैर्नैवेद्यैर्मंगलैस्तथा ॥ १४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रेमसूरिकापिटिकालक्षणम् ।

अर्थ–जो पिंडीके आकारहो उसे पिंडिका जाननी, जो देहमें सूजनको करतीहै जो मिलीहुई अंजलीके आकारमेंहो उसे वैद्य विततांजुली कहते हैं ॥ १३ ॥ पिटिका और शीतला एकहीहै इसी वास्ते पिटिकाके दुःखके नाशनार्थ शीतलाका पूजन धूप दीप चावल पुष्प नैवेद्य और मंगलाचरणके साथ करै ॥ १४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां पिटिकामसूरिकारोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथमेदोरोगनिदानम् ।

मेदउत्पत्तिः ।

अव्यायामैर्दिवास्वप्नैर्मांसमिष्टान्नभोजनैः ॥ अतिस्निग्धाशनैर्देहे मेदोवृद्धिः प्रजायते ॥ १ ॥ जठरे मेदसोवृद्धिःकरोति वलसंक्षयम् ॥ निद्रांदौर्गंध्यमंगेपुअशक्तिं सर्वकर्मसु ॥ २ ॥ स्थूलोदरमनुत्साहं गौरवं तनुशीतलम् ॥ जठराग्नेः क्षयं जाड्यं श्वासं कंपनसादनम् ॥ ३ ॥

अर्थ–दंड कसरतके न करनेसे सोनेसे, मांस मिष्टानके खानेसे, अति चिकनी वस्तुके खानेसे देहमें मेदवढाहै ॥ १ ॥ पेटमें मेदके वढनेसे वलका नाशहोताहै, और निद्रा तथा दुर्गंध देहमें और सर्वकर्ममें अश्रद्धा होतीहै ॥ २ ॥ पेटको वढावे, उत्साह रहित, तथा देह भारी तथा शीतल, जठराग्निकानाश और जडता, श्वास, कंप और देहका रहजाना करेहैं ॥ ३ ॥

कायं स्थूलतरं मेदः सस्वेदं स्वल्पमैथुनम् ॥ धातुक्षयं त्वचं पीतां वहुमूत्रां शितेक्षिणीम् ॥ ४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे मेदसोवृद्धिलक्षणम् ।

अर्थ–जिसकी देह मोटी मेदसे और पसीने युक्त, मैथुन थोडा कराजाय, और धातु गिराकरै पीली त्वचा होजाय, मूत्र बहुत उतरे, सपेद नेत्रहो, ये मेद रोगके लक्षणहै ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां मेदोरोगलक्षणम् ।

गंडमालरोगनिदानम् ।

विस्फोटमालागलकेशशोफमेदोद्भवा तोदयुतातिरक्ता ॥ कर्कंधुजंब्वामलकप्रमाणा तां गंडमालां प्रवदंति वैद्याः ॥ १ ॥

वातकीगंडमालाकेलक्षण ।

वातोद्भवा या गलगंडमाला कृष्णारुणाभा कुरुतेतितोदम् ॥ स्तब्धाशिरातालुगलेप्रशोषं भिन्नस्वरं रूक्षतमं शरीरम् ॥ २ ॥ वैरस्यमास्ये विदधातिकष्टं संस्रावयेद्रक्तनिभं च पूयम्॥भिन्नस्वरं कष्टतरेण पाकं करोति वातात्मकगंडमाला ॥ ३ ॥

अर्थ–फोडे मालाकीतरह सूजनयुक्त गलेमें हो और लालहो तथा बेर जामुन आमलेके प्रमाणहो मेदसे पैदा हुआहो उसे वैद्य गंडमाला रोग कहते हैं ॥ १ ॥ वातकी गंडमालाके ये लक्षणहैं कालीहो, लालहो, अतिपीडाकरै, नाडिनको स्तंभन करदे, तालु गलेमें शोषहो, बुरास्वर, शरीररूखा करे ॥ २ ॥ मुखमें स्वाद न रहै, कष्टको बढावे, तथा राधरुधिरवहै, बुरास्वर होजाय कष्टसे पकै येभी वातकी गंडमालाके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

पित्तकीगंडमालाकालक्षण ।

ज्वरं शोफशूलं करोत्युग्रदाहं कटुत्वं मुखे कंठताल्वोष्ठशोषम् ॥ महत्पित्तकोपोद्भवारक्तवर्णा गलेमुष्कपंक्त्याकृतिर्गण्डमाला ॥४॥

कफकीगंडमालाकालक्षण ।

जम्बूककंधुपूगीफलकलितरुभापक्वनारंगपिंगा काठिन्या ग्रंथिपंक्तिर्वितरतिपरतः कंठदेशेषु शोफम्॥कंडूपीडां विधत्ते प्रतिदिनमरुचिं गौरवाङ्गंच कासं पूयं रक्तं सगंधं स्रवति भवति सा श्लेष्मजा गंडमाला ॥ ५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे गंडमालालक्षणं समाप्तम् ।

अर्थ–ज्वर, शूल, दाह, मुखकडुआ, कंठ तालु ओठ इनका सूखना, लाल वर्ण, गलेमें अंडकोशकी पंक्तिके आकारहो उसे पित्तकी गंडमाला कहते हैं ॥ ४ ॥ जामुन बेर सुपारी बहेडा, पके नारंगीके समान पीलीहो, कठिन गांठकी पंक्तिभीहो, और कंठमें सूजनहो खुजली पीडाको बढा अरुचि, देहभारी, खांसी, राधरुधिर बासके साथ निकलै, उसे कफकी गंडमाला कहते हैं ॥ ५ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां गंडमालारोगनिदानम् ॥

अथश्लीपदरोगनिदानम् ।

शोफो नृणां पादगतोऽतिरौद्रो वल्मीकतुल्योंतरमांसवर्ती ॥ मेदाश्रयःकंटकवेष्टितांगो वैद्योत्तमैः श्लीहपदो निरुक्तः ॥ १ ॥

वातकीश्लीपदकालक्षण ।

निमित्तशून्यं बहुशोफपादं कृष्णं च रूक्षं स्फुटतीव्रतोदनम् ॥ वातोद्भवं श्लीहपदं ज्वरार्तिर्निरूपितं वैद्यवरैर्नितांतम् ॥ २ ॥

पित्तकीश्लीपदकालक्षण ।

शोफाधिकं रक्तज्वरार्तिदाहं संस्रावयुक्तं वहुरक्तवर्णम् ॥ पित्तात्मकं श्लीहपदं गुरुत्वं ज्ञेयं भिषग्भिः किलकष्टसाध्यम् ॥ ३ ॥

अर्थ–मनुष्योंके पैरमें सूजनहो, और क्रमसे वडके सर्पकी गांवोंके समान लम्बी पेडू जंवा मांसमें प्राप्तहो, और मेदके आश्रयहो कांटेयुक्त हो उसे वैद्य श्लीपदरोग कहते हैं ॥ १ ॥ विनाकारण बहुत सूजन हो, काली रूखी फटी तीव्र वेदनायुक्त, ज्वर, स्वेदहो, उसे वैद्य वातका श्लीपदरोग कहते हैं ॥२॥ जिसमें सूजन ज्यादा हो, लालरंगहो,ज्वर, खेद, दाह रुधिर गिरै, भारीहो वो वैद्योंने कष्टसाध्य पित्तका श्लीपद कहा है ॥ ३ ॥

कफकेश्लीपदकालक्षण ।

स्निग्धं श्लीहपदं गुरुत्वमनिशं शोफाधिकं सज्वरं श्वेताभं वहुकंटकैः परिवृतं वल्मीकतुल्यं दृढम्॥मेदोमांसपराश्रयं चरणगं स्थूलं च शीतान्वितं भोभोवैद्यविशारदाः कफभवं जानीहि तत्पांडुरम्४

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे श्लीहपदलक्षणम् ॥

अर्थ–चिकना, भारी सूजन, विशेष ज्वर, सपेदरंग, बहुत कांटेयुक्त, वामीके तुल्यहो, और दृढ़हो मेदमांसके आश्रयहो, पैरोंमेंहो, मोटी और शीतल हो उसे हे वैद्य ! तू कफकी श्लीपद रोग जानो ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजर्थबोधिन्यां श्लीपदरोगनिदानम् ॥

अथविद्रधिरोगनिदानम् ।

त्वग्रक्तामिषमेदांसि दूष्यदोषास्थिगाः पुनः ॥ नाभेरधोमहच्छोफं ज्वरं कुर्वन्ति ते शनैः॥१॥ स विद्रधीरुक्परीतोविचार्य्य प्रीतैर्भिषग्भिःकिलशास्त्रपारगैः ॥ महार्त्तिकृद्दाहविवर्द्धनोऽसौ शोफान्वितो हृज्जठरे च शूलम् ॥ २ ॥ विद्रधिः षड्विधः प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ दोषैर्व्यस्तैः समस्तैश्च रक्तजः सप्तमः स्मृतः॥ ३ ॥

अर्थ–वात, कफ, पित्त ये त्वचा, रुधिर, मांस, मेदा इनको विगाडकर हड्डीमें प्राप्त हो नाभीके नीचे भारी सूजन और ज्वरको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ बहुत स्वेद और दाह और सूजनको बढ़ावे, तथा हृदय और पेटमें दर्दहो उसे वैद्योंने विचारकर विद्रधि रोग कहाहै ॥ २ ॥ विद्रधि रोग छः तरहकाहै १ वात २ पित्त ३ कफसे ४ वात पित्तसे, ५ वातकफसे ६ पित्तकफसे, और सातवां ७ रुधिरसे ॥ ३ ॥

वातविद्रधिके लक्षण।

रक्तश्यामोऽतिविषमो वेदना बहुभिर्युतः॥ शीर्षपाको विचित्राभो-वातजो विद्रधिः स्मृतः॥ ४॥

पित्तकेविद्रधिकेलक्षण।

पक्वनिंबूफलाकारोरक्ताभोज्वरदाहकृत्॥ शीर्षपाकोमहत्यार्त्तिर्विद्रधिः पित्तजो भवेत्॥ ५॥

कफकेविद्रधिकेलक्षण।

स्निग्धः शीतश्चिरोत्थोयं चिरपाकोल्पवेदनः॥ श्लेष्मजो विद्रधिः पांडुः शरावसदृशो भवेत्॥ ६॥

अर्थ—लाल और काली तथा विषम बहुतपीडायुक्त, जल्दीपके, और विचित्र स्वरूप हो ये वातके विद्रधिके लक्षण हैं॥ ४॥ पके नींबूके समान सूजन हो, लालरंग, ज्वर दाहके करने वाली, शीर्ष पाक हो, अत्यंत पीडायुक्त ये पित्तकी विद्रधिके लक्षण हैं॥ ५॥ चिकनी, शीतल, बहुत दिनकी उठी और बहुत कालमें पकै, मंदपीडा हो पीलेरंगकी, शरावके समान हो, ये कफकी विद्रधिके लक्षण हैं॥ ६॥

सन्निपातकेविद्रधिकेलक्षण।

नानावर्णो दाहशूलो ज्वरार्त्तिः कोष्ठोत्थानं कष्टपाकोऽतिरौद्रः॥ आधिस्त्रावोवस्तिहृत्कुक्षिशोथो वैद्यैः प्रोक्तोविद्रधिः सन्निपातः७॥

रुधिरकेविद्रधिकेलक्षण।

दीर्घोष्णा परिपक्वचूतसदृशो विस्फोटको मांसलः कृष्णाभो बहुदाहकृज्ज्वरकरस्तृष्णान्वितः क्षुद्वरः॥कुक्षौवस्तिगुदोदरेषु हृदये पीडाकरोऽहर्निशं प्रोक्तो रक्तभवोभिषग्वरगणैः पित्तात्मको विद्रधिः॥ ८॥ विद्रधिं रक्तजं विद्यात्कुक्षौलग्नमचञ्चलम्॥मांसशोणितयोर्ग्रंथिं वस्तिहृन्नाभिसंभवम्॥ ९॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रेविद्रधिलक्षणम्॥

अर्थ—विचित्र रंगहो, दाह, शूल, पीडा, कोष्ठमें पैदा हुई कष्टसे पके, अति रौद्र आधि स्राव मूत्रस्थान, हृदय, कूख इन अस्थानोंमें सूजन हो, इसे वैद्योंने सांनिपातका विद्रधि रोग कहा है॥७॥

दीर्घ, गरम, पक्के आमके समान फोडा हो, तथा मोटाहो, कालेरंगके समान, वहुत दाह, ज्वर भूखका नाशकरै, प्यास बढावै, कूख, मूत्रस्थान, गुदा पेट,हृदय, इनमें रातदिन पीडा करै, ऐस विद्रधिको वैद्यगणोंने पित्तात्मक रुधिरकी कही है ॥ ८ ॥ और नाभी मूत्रस्थान हृदयमें मांसकी गां हो, उसे रुधिरकी विद्रधि कहते हैं, तथा कांखमें स्थिर जो हो ॥ ९ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां विद्रधिरोगनिदानम् ॥

अथोपदंशलक्षणम् ।

हस्तस्य घातात्करजस्य पाताद्दंतस्य दंशात्तृणकाष्ठलग्नात् ॥ दुष्टस्त्रियो योनिविकारसेवनात्पञ्चोपदंशाः प्रभवंति शिश्ने ॥ १ ॥

वातकेउपदंशकेलक्षण ।

वातोपदंशो वहुवेदनान्वितो विस्फोटसूक्ष्मैः स्फुरणैस्तु कृष्णभैः॥ युक्तः सतोदैः किलजायते नृणां शिश्नस्य वाह्योपरितोऽन्तरे निशम् ॥ २ ॥

पित्तकेउपदंशकेलक्षण ।

पित्तोपदंशं तमवेहि नूनं तीव्रार्तिदाहं पिशितावभासम् ॥विशीर्णमांसं पिटिकाभिपिक्तं शिश्नांतरे गर्तमतीवरौद्रम् ॥ ३ ॥

अर्थ–हाथके चोटसे तथा नखके लगनेसे, किसी तरहसे दांतके लगनेसे, तिनका, लकडीके लगनेसे, गरमीवाली औरतके संग करनेसे, लिंगमें पांच प्रकारका उपदंश रोग पैदा होता है ॥ १ ॥ वातका उपदंशवाला पुरुष बहुत वेदनायुक्त हो, प्रकाशमान कालेरंगकी छोटी छोट पिडिका हों, पीडायुक्त, लिंगके बाहर भीतर मनुष्योंके होती हैं ॥२ ॥ उसे पित्तका उपदंश जाने जिसमें ये लक्षण हों, तीव्रदाह, मांसके रंग सरीखा तथा बिखरा हुआ मांस हो, पिटिका युक्त लिंगके भीतरी भारी गढाहो ॥ ३ ॥

कफकेउपदंशकालक्षण ।

वैद्योपदंशं कफसंभवं हितं जानीहि कंडूपिटिकाभिराश्रितम् ॥ शोफाधिकं पाडुरवर्णशीतलं स्निग्धं गरिष्ठं पिशितांकुरान्वितम्॥४॥

सन्निपातकेउपदंशकालक्षण ।

आसुष्कशोफं कृमिजं तु जग्धं विशीर्णमांसं वहुगर्तशोफम् ॥ त्रिदोषजं विद्ध्युपदंशमेतमसाध्यमार्तिज्वरशूलदाहम् ॥५॥ जातमात्रेमहारोगे चिकित्सांनैवकारयेत् ॥ वद्धमूलेन रोगेण रोगी यातियमालयम् ॥ ६ ॥

अर्थ–हे वैद्य ? उसे तू कफका उपदंशजान जिसमें खुजली हो, पिटिका हो, अधिक सूजनहो पीलारंग हो, शीतल और चिकना भारी मांसांकुर युक्त हो ॥ ५ ॥ लिंगसे अंडकोशों पर्यंत सूजन हो, कृमिपडगये हों, मांस बिखर गया हो, बडा गड्ढा हो, सूजनहो ज्वर, शूल, दाह युक्त, ऐसे लक्षणोंसे असाध्य त्रिदोषका उपदंश जानना ॥ ६ जो मनुष्य उपदंश रोगको पैदा होतेही इलाज नहीं करै और रोग बद्धमूल होजाय तो वह रोगी यमराजके घर जाता है ॥ ६ ॥

महाक्षतो भवेद्यस्य शिश्ने स्फोटोनिशीर्य्यते ॥ शिरःपीडा ज्वरो देहे निर्लोमो मुखमंडले ॥ ७ ॥ गुह्यदेशे महाशोफो नेत्रयोर्बहुरक्तता ॥ पतेच्छिश्नः समुष्काभ्यां सरोगी नैव जीवति ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचितोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे उपदंशलक्षणम् ।

अर्थ–जिसके लिंगमें बडा घाव हो, और घाव फटजावे, तथा शिरमें दर्द, और ज्वर, मुखपर बाल न रहै ॥ ७ ॥ गुह्यइन्द्रियमें महासूजनहो, और नेत्र लालहों, और जिसका अंडकोशके साथ लिंग गिरपडे वह रोगी नही जीवै ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामुपदंशरोगनिदानम् ॥

अथशूकदोपलक्षणम् ।

यो लिंगवृद्धिं मनुजोभिवांछति शूकोद्भवास्तस्य भवन्ति व्याधयः॥ अष्टादशाख्याः कफवातपित्तजा द्वंद्वोद्भवा रक्तभवा स्त्रिदोपजाः१

सर्षपिकाकालक्षण

सर्षपिका सा सर्षपरूपा लिंगसमीपे दारुणशूका॥वातकफाभ्या संजनितारुक् स्यात्पिटिकेयं पुंस्त्वहरीति ॥ २ ॥

कुम्भिकाकालक्षण ।

रक्तपित्तोत्थिताकुम्भी पिटिका रक्तपूरिता ॥ शिश्नोपरिगताशूकदोपजा तीव्रवेदना ॥ ३ ॥

अर्थ–जो मनुष्य लिंग वढनेकी इच्छा करै, और मूढवैद्यके कहनेसे लेप वा पट्टी बांधे उसके अठारह तरहका, वात, पित्त, कफ ३ दो दोषोंके ३ और त्रिदोषका १ शूकसे पैदा व्याधिहोती है ॥ १ ॥ सर्षपिका सरसोंके समान छोटी फुंसी लिंगपर होतीहै, और वात, कफसे पैदा तथा पुरुषपनेको दूरकरती है ॥ २ ॥ रक्तपित्तसेपैदा कुंभिकाफुंसी रुधिरसे पूरित और लिंगपर शूकदोषसे पैदाहुई तीव्रपीडायुक्त ॥ ३ ॥

मूढपिटिकाकालक्षण ।

पाणिभ्यां मृदितं शिश्नं पीडितं वातकोपतः ॥ तस्मिन्वातसमुद्भूतासामूढपिटिकाभवेत् ॥ ४ ॥

दीर्घिकापिटिकालक्षण ।

दीर्यंते मध्यतो वद्धाः पिटिकारोमहर्षदाः ॥ संधिमध्यगताःशुभ्राः कफजा दीर्घिकाः स्मृताः ॥ ५ ॥

पुष्करिका पिटिकाकालक्षण ।

पित्तोद्भवा पुष्करकर्णिकासमा सिंदूरवर्णा निविडाऽतिदुःखदा ॥ दाहादिपीडां महतीं करोति या सोक्ता परैः पुष्करिका मुनीन्द्रैः ६॥

अर्थ--हाथके मीडनेसे, वातके कोपसे पैदाहुई लिंगपर फुंसी उसे मूढपिटिका कहते हैं ॥४॥ रोमांचको करे, और बीचमेंसे फटजाय, और सन्धियोंके बीचमें सपेद रंगकीहो, वो कफसे पैदा हुई दीर्घिकानाम पिटिका जाननी ॥ ५ ॥ पित्तसे पैदा कमलकी कर्णिकाके समानहो, तथा लाल रंगहो, चिपटी, अतिदुःख देने हारी, दाह, पीडा वहुतकरे, उसे मुनीश्वरोंने, पुष्करिका पीडिका कही हैं ॥ ६ ॥

स्पर्शं नोत्सहते ज्वरं वितनुते पीडां करोति द्रुतं यःशूकं पिटिकाशतं वहुरुजं लिंगे विधत्ते चिरम्॥कृष्णारक्तनिभं विपाककठिनं पाकार्तिकृत्सद्रवं विद्यात्पित्तमरुद्भवं तमनिशं मुद्गादलाभं रुजम्॥ ७ ॥

कफपित्तकेशूककेलक्षण ।

कफपित्तभवा विविधा कृतयः पिटिकावहुशोफयुताः कठिनाः ॥ ज्वरदाहविलापरुजो दधते कृमिशोणितपूयवहा विपमाः ॥ ८ ॥

त्रिदोपजनितशूककेलक्षण ।

मांसपाकं वहुच्छिद्रं लिंगभंगं त्रिदोपजः ॥ कुर्याच्छूकोज्वरं दाहं शोथं च पिटिकान्वितम् ॥ ९ ॥

अर्थ--स्पर्श न सहाजाय, ज्वर, पीडा, और सैकरों फुन्सी लिंगके ऊपरकाली, लाल हों, कठिनसे पकैं, दुःखकी देनेवाली, और चुचावैं, उसे वातपित्तसे पैदाहुई पीडिका मूंगके पत्तेके समान जाननी ॥ ७ ॥ कफ पित्तसे पैदाहुआ जो शूक रोग उसके अनेक तरहकी फुंसीकी आकृतिहों, और सूजनहो, कठिनज्वर के और दाहके करनेवाली, रुदनकरै, कृमी, और रुधिर तथा राधवहे,

और विषम हो ॥ ८ ॥ मांसका पाक तथा बहुतसे छिद्र होजायँ और लिंगगिरपडे, तथा ज्वर, दाह, सूजन, और अनेक मरोडाहों, ये सान्निपातके शूकरोगके लक्षण हैं ॥ ९ ॥

मांसशोणितयोर्ग्रन्थिमर्बुदं तं विदुर्बुधाः ॥ विद्रधेर्विद्रधिं विद्यात्सन्निपातसमुद्भवाम् ॥ १० ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रेशूकदोषलक्षणम् ।

अर्थ—मांस और रुधिरकी गांठ उसे पण्डित अर्बुद कहते हैं, और, विद्रधिकेआकार हो उसे संनिपातसे पैदा विद्रधि कहतेहैं ॥ १० ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां शूकरोगनिदानम् ॥

अथकुष्टरोगलक्षण ।

अथकुष्ठरोगोत्पत्तिः ।

महापापतः कुष्ठिनो देहदाहात्तथात्यंतसंसर्गतो मांसभक्षात् ॥ भवेत्कुष्ठरोगो गुडक्षीरपानादजीर्णाशनाद्रक्तपित्तस्य कोपात् ॥१॥ विरुद्धान्नपातात् स्त्रियोत्यंतसंगाद्दिवास्वापतो रौद्रघर्मादितापात् ॥ गुरुस्निग्धरूक्षाशनान्मूत्रबंधाद्भवेद्रौद्रकुष्ठो जलस्यावगाहात् ॥२॥ मांसचर्मविकारोत्थाः कुष्ठाष्टादशसंज्ञकाः ॥ वातपित्तकफोद्भूता द्वंद्वोत्थाः सन्निपातजाः ॥ ३ ॥

अर्थ—ब्रह्महत्यादि महापापके करनेसे कुष्ठीको दाह देनेसे कोढीके पासरहनेसे मांसके खानेमे भारी तथा दुग्ध आदि पदार्थ के सेवन करनेसे, अजीर्णमें खानेसे, रक्तपित्तके होनेसे, कुष्टरोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ तथा विरुद्ध अन्न और जलके सेवन करनेसे अत्यन्त स्त्रीके संग करनेसे, दिनमें सोनेसे, धूप आदि गरमीके खानेसे, भारी चिकना रूखे आदिके खानेसे, मूत्रबंध होनेसे, बहुत जलमें रहनेसे, घोर कुष्ठरोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ मांस और चर्मके विकारसे पैदा कोढरोग अठारह प्रकारकाहै, वातसे, पित्तसे, कफसे, द्वन्द्वज और सन्निपातसे ॥ ३ ॥

उदुंबरकुष्ठकेलक्षण ।

यद्रूक्षं परुषं कपालसदृशं तोदं कपालेऽधिकं तत्कुष्ठं विषमं वदंति सुधियः कृष्णारुणाभं भृशम्॥यत्कुष्ठं स्फुटितमुदुम्बरसमं रुग्दाह कंडूवृतं शुष्कं रक्तनिभं परैर्निगदितं तत्कुष्ठमौदुंबरम् ॥ ४ ॥

मूकजिह्वनामकुष्टकेलक्षण ।

वृषजिह्वोपमा जिह्वा रोमहर्षोन्तरव्यथा ॥ जायते येन कुष्टेन मूकजिह्वन्तदुच्यते ॥ ५ ॥

मंडलकुष्ठकेलक्षण ।

श्वेतरक्तनिभं स्निग्धं स्थिरं कृच्छ्रसमुन्नतम् ॥ परस्परसमालग्नं कुष्टं मंडलसंज्ञकम् ॥ ६ ॥

अर्थ–जो रूखा, कठोर, खोपडीके समान, कपाल में पीडा करे तथा काला, लाल उसे कपाल संज्ञक कुष्ट कहते हैं, और जो फटगयाहो गूलरकेसमान पीटा दाह, खुजली, तथा सूखा हुआ रुधिरके समान उसे वैद्य उदुम्बर नाम कुष्ट कहते हैं ॥ ४ ॥ बैलकी जीमके समान जीमहो रोमांच तथा भीतरपीडाहो, उसे मूकजिह्व कुष्ट कहते हैं॥५॥ सपेद, लाल, चिकना स्थिर करडा ऊंचा, और आपसमें मिला हुआ हो उसे मण्डल कुष्ट कहते हैं ॥ ६ ॥

करवालकुष्ठकेलक्षण ।

वर्द्धतेऽहर्निशं स्थूलं कृष्णकंडूभिरावृतम् ॥ रूक्षं वहुतरं कुष्टं करवालं तदुच्यते ॥ ७ ॥

किणिकुष्ठकेलक्षण ।

तत्कुष्टं किणिसंज्ञं स्यात्किणं शोथ समन्वितम् ॥ श्यामवर्णं खरस्पर्शं परुषं वहुवेदनम् ॥ ८ ॥

दादनामकोढकेलक्षण ।

कृष्णाभं मंडलाकारं कंडूभिर्वहुभिर्युतम् ॥ अतापे दुष्करं रूक्षं तत्कुष्टं दद्रुसंज्ञकम् ॥ ९ ॥

अर्थ–जो नित्य वढता जावे, और मोटाहो काला और खुजली युक्त रूखा, और बहुतहो उसे करवाल कुष्ट कहते हैं ॥ ७ ॥ वो कोढ किणी संज्ञकहै, जिसमें घाव सूजनके साथ हो कालावर्ण,खरदरा, स्पर्श, कठोर, बहुत खेद युक्तहो ॥ ८ ॥ काला, गोल चकत्ते, खुजली होतीहो, गरमीमें दुःख वहुतहो, रूखा, उसको दादनाम कोढ कहते है ॥ ९ ॥

चर्मदलकोढकेलक्षण ।

कंडुमद्रक्तवर्णं च विस्फोटकसमन्वितम् ॥ सार्द्रस्पर्शासहं शूलं कुष्टं चर्मदलं भवेत् ॥ १० ॥

गजचर्मकोढकेलक्षण।

गजचर्मसमारकारं स्थूलं बहुतरंदृढम्॥ कंडूमच्छ्यामवर्णं यत्कुष्टं तच्चर्मसंज्ञकम्॥ ११॥

पामाकुष्ठकेलक्षण।

स्फोटाभिर्बहुभिर्युक्ता सूक्ष्माभिः पाटलादिभिः॥कंडूदाहार्तिभिर्युक्तापामा सा कीर्तिता बुधैः॥ १२॥

अर्थ-जिसमें खुजलीहो, और लालवर्ण तथा फोडाहो गीला, स्पर्श न सहा जाय, शूलयुक्त, उसे चर्मदल नाम कुष्ठ कहते हैं॥ १०॥ जो हार्थीके चर्मके आकार हो, और मोटाहो, तथा विशेष और दृढ हो, खुजलीयुक्त, कालारंगहो, उसे गजचर्म कुष्ठ कहते हैं॥ ११॥ जिसमें फोडा छोटे और सपेद लाल रंगके बहुत हों, और खुजली दाह पीडा युक्तहो उसे 'पामा अर्थात् खाज कहते हैं॥ १२॥

विचर्चिका और चित्रकुष्ठ।

सैव नूनं बहुस्रावा कथिता सा विचर्चिका॥ यत्पुष्पसदृशं वर्णं चित्रकुष्टं तदुच्यते॥ १३॥

वातकेकुष्ठकालक्षण।

श्यामारुणं खरस्पर्शं रूक्षं वेदनयान्वितम्॥ विवर्णं वातजं कुष्टं कथितं तद्भिषग्वरैः॥ १४॥

पित्तकेकुष्ठकेलक्षण।

श्यामारुणनिभं स्रावं कंडूरोगार्तिदाहदम्॥ तीक्ष्णपित्तोद्भवं कुष्टं कीर्तितं वैद्यसत्तमैः॥ १५॥

अर्थ-वही श्यामा बहुत स्रवे तो उसेही विचर्चिका कहते हैं, और जिसका पुष्पके वर्णके समान रंगहो उसे चित्रकुष्ठ कहते हैं॥ १३॥ जिसका काला, लाल और खरदरा स्पर्श हो, रूखा तथा पीडा युक्त विवर्ण उसे वातका कुष्ठ कहते हैं॥ १४॥ जिसका काला, लालरंगहो, और स्रवे तथा खुजली दाह पीडा हो उसे तीखा पित्तका कुष्ठ वैद्योंने कहाहै॥ १५॥

कफकेकुष्ठकेलक्षण।

कुष्टं कफोद्भवं विद्यात्स्निग्धं कंडुयुतं घनम्॥ गौरवं शीतलं क्लेदि

शोथस्त्रावसमन्वितम् ॥ १६ ॥ चिह्नैर्द्विदोषजैर्युक्तं द्विदोषोत्थं विदुर्बुधाः ॥ त्रिभिर्दोषैर्विमिश्रं यत्कुष्टं कष्टतरं भवेत् ॥ १७ ॥

त्वचामेंस्थितकुष्ठकेलक्षण ।

वहूपद्रवसंयुक्तमसाध्यं तत्प्रकीर्त्तितम् ॥ त्वक्स्थे कुष्ठे शरीरेषु वैवर्ण्यं रूक्षता भवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ—जो चिकना और खुजलीयुक्त घन, भारी शीतल, क्लेदी, सूजनयुक्त, तथा स्त्रवे, उसे कफको कुष्ठ कहते हैं ॥ १६ ॥ जिसमें द्विदोषके लक्षण मिलते हों, उसे पण्डित द्विदोषका कुष्ठ कहते हैं, और त्रिदोषके लक्षण मिले हों, उसे कष्टतर जान वैद्य त्यागदे ॥१७॥ और वहुत उपद्रव युक्तहो, उसे वैद्योंने असाध्य कहाहै, त्वचामें स्थित कुष्ट शरीरको विवर्ण करदे, और रूखा कर देताहै ॥ १८ ॥

रक्तगतकुष्ठकेलक्षण ।

कुष्ठे रक्तगते नेत्रे क्रमो हर्षोरुचिर्भवेत् ॥ प्रस्वेदः कंटशोषश्चविसर्पो रक्तमंडलम् ॥ १९ ॥

मांसगतकुष्ठकेलक्षण ।

हस्तांघ्रिषु नृणां शोफं विस्फोटं तोदगौरवम् ॥ कुष्ठे मांसं गते तस्य विरेको वमनं भवेत् ॥ २० ॥

मेदगतकुष्ठकेलक्षण ।

गात्रभङ्गोंगदुर्गंधं क्षते पूयं च जंतवः ॥ गतिक्षयोऽग्निमंदत्वं कुष्ठे मेदगते भवेत् ॥ २१ ॥

अर्थ—नेत्रोंमें क्रम, तथा, हर्षका नाश, अरुचि, पसीना, कंठका सूखना और विसर्प, रुधिरके मण्डल ये रक्तगत कुष्ठके लक्षणहैं ॥१९॥ हाथ पैरोंमें सूजन, तथा फोडा पीडा, शरीरभारी रहे रद, दस्त ये मांसगत कुष्ठके लक्षण हैं ॥ २० ॥ शरीरका टूटना, देहमें दुर्गन्ध, व्रण, पीव, कृमिहों, गतिका नाश, मन्दाग्नि, ये मेदगत कुष्टके लक्षणहैं ॥ २१ ॥

अस्थिमज्जागतकुष्ठकेलक्षण ।

नासाभंगोऽक्षिणी रक्ते क्षतेषुकृमिसंभवः ॥ स्वरघातोव्रणे दाहः कुष्ठे मज्जास्थिसंस्थिते ॥२२॥ दंपत्योः कुष्ठिनोर्वीर्यशोणिताभ्यां च संभवः ॥ यदपत्यविकाराभ्यां ज्ञेयं तदपि कुष्ठितम् ॥ २३ ॥

कुष्ठकेसाध्यलक्षण ।

त्वग्रक्तमांसगं कुष्ठं साध्यं यंत्रौषधादिभिः ॥ मेदोजं च द्विदोषोत्थं दानस्नानजपादिभिः ॥ २४ ॥

अर्थ—नाकका भंग, नेत्र लाल, घावोंमें कीडापडजायँ, मन्दस्वर, व्रणोंमें दाह, ये हड्डी और मज्जागत कुष्टके लक्षणहैं ॥ २२ ॥ माता और पिताके कोढी होनेसे उन्होंके वीर्य्य और रजसे पैदा जो सन्तान वो भी कोढी होता हैं ॥ २३ ॥ त्वचा, रुधिर, मांसमें जो स्थित कुष्ठ सो मंत्र मंत्र औषधियोंसे साध्यहै, और जो मेदा मज्जामें प्राप्तहो और द्विदोषसे उठाहो वो स्नान दान जपादिसें शांतिहो ॥ २४ ॥

कुष्ठकेअसाध्यलक्षण ।

नरं कुष्ठिनं हन्ति कुष्ठं प्रवृद्धं त्रिदोषोद्भवं संधिमज्जास्थिसंस्थम्॥ प्रभिन्नस्वरं श्वासवाहं सदाहं क्रमीणां क्षतेऽसृक् स्रवं रक्तनेत्रम् ॥२५॥ अंगानि येन शीर्यंते क्षतेषु क्रमिसंभवः ॥ भ्रूनासाक्षिस्वरा भग्नाः कुष्ठं तं परितस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे कुष्ठलक्षणम् ॥

अर्थ—संधि मज्जा अस्थिगत त्रिदोषसे पैदा हुआ जो कुष्ट और बढा हुआ वो कोढी मनुष्यको मारडाले तथा भ्रष्टस्वर, श्वासवान्, दाह, और क्रमियुक्त घाव रुधिरस्रवे, लालनेत्र ॥ २५ ॥ जिससे अंग फटजाय, और घावोंमे क्रमि पटजाय, तथा भृकुटी नाक नेत्र जाते रहैं, स्वर बैठजाय, उस कोढीको वैद्य त्यागदे ॥ २६ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां कुष्ठरोगनिदानम् ॥

शीतपित्तोदर्दलक्षणम् ।

शीतवातस्य संस्पर्शाद्वातपित्तकफाश्रयः ॥ त्वग्रक्तमांसंसंदूष्य विसर्प्पतोंतरे वहिः ॥ १ ॥

उदर्दकलक्षण ।

वरटीदष्टवच्छोथो जायते त्वचि सर्वतः ॥ दाहकंडूशिरस्तोदः स्यादुदर्दस्य लक्षणम् ॥२॥ मंडलानि विचित्राणि रागवंति बहूनि च ॥ सकंडूनि सतोदानि स्थूलानि परितस्त्वचि ॥ ३ ॥

अर्थ—शीतल पवनके स्पर्शसे, वात, कफ, पित्त, तीनों रुधिर, मांस, त्वचा बिगाड कर भीतर और बाहर शीत पित्तरोगको पैदाकरें हैं ॥ १ ॥ जैसे बरटों (मोहारकी मक्खी)के काटनेसे सूजन होतीहै इसीतरह, सब त्वचामेंहो और दाह, खुजली, शिरमें दर्दहो, उसे शीत पित्तवायु जिसे लोकमें पित्तीका रोग कहते हैं ॥ २ ॥ और जिसमें चित्रविचित्र चकत्ते रागवान् हों, और बहुतसेहों उनमें खुजली और पीडाहो तथा मोटी त्वचाहो ॥ ३ ॥

भवंति सर्वतो देहे शीतवातोद्भवानि च ॥ कफात्मकानि चिह्नानि उदर्दस्य विदुर्बुधाः ॥४॥ पित्ताधिकंभवेत्कोठमुदर्दंतुकफाधिकम्॥ वाताधिकं शीतपित्तं संनिपातं त्रिदोषजम् ॥ ५ ॥

उदर्दरोगकापूर्वरूप ।

पूर्वरूपमुदर्दस्य नेत्रयोरक्तताऽरुचिः ॥ हृल्लासतृड्ज्वरो दाहो देह सादोंगगौरवम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सबदेहमें शीतल पवनसे और कफाधिक्यसे जो चकत्तेहों, उसे पंडित, उदर्दरोग कहते हैं ॥ ४ ॥ पित्ताधिकसे कुष्ठहोताहै, कफाधिकसे उदर्द होता है, वाताधिकसे शीतपित्त, सन्निपातसे त्रिदोषज उक्तरोग होते हैं ॥ ५ ॥ नेत्र लालहों, अरुचि, खालीरद्द, प्यास, ज्वर, दाह, देहमें पीडा तथा भारीपना, ये उदर्दके पूर्वरूपहै ॥ ६ ॥

कोढउत्कोढकालक्षण ।

त्वक् संदूष्य बहिर्गतो रुग्महाकाये मरुच्छीतलो देहे मंडलमंडितं वितनुते शोफं सरोगान्वितम्॥कंडू निस्त्वचिसर्वतो वमितरा तोदं च विड्बन्धनं शैथिल्यं बलनाशनं प्रकुरुते रोमोद्गमं गौरवम्७॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे उदर्दकुष्ठलक्षणम्

अर्थ—शरदीसे पवन त्वचाको बिगाड शरीरके बाहर महादारुण रोगको प्रगट करै, देहमें रुधिरके चकत्ते, सूजनयुक्तहों, उनमें खुजलीचले, त्वचा न रहे, वमन और पीडा तथा दस्तका बंद होना शिथिलता बलनाश, रोमांच, और देहभारी ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां शीतपित्तउदर्दकोढउत्कोढनिदानम् ॥

अम्लपित्तकीउत्पत्ति ।

स्निग्धाम्लैर्बहुभोजनैरपाचितैर्वैश्वानरैर्नोदरे रात्रौ जागरणेन वा सरमुखं स्वापेन तापेन वा॥ संक्षोभ्योपचिताम्लपित्तमुदरे हृत्कं-

ठयोर्मस्तके नाभौ वस्तिगुदांतरेषु विविधं धत्ते रुजं दारुणाम्॥१॥ आध्मानं कुरुतेम्लपित्तमनिशं शोषं तनौ कृष्णतामुद्गारं वितनोति धूमसहितं साम्लं मुहुर्दुःखदम्॥हृल्लासं भ्रममोहकंपमरुचिं दाहं च हृत्कंठयोः कंडूमंडलमंडितं सपिटिकं देहं विधत्तेऽरतिम् ॥ २ ॥ अम्लत्वमेति भुक्तान्नमपक्वं यानि वह्निना ॥ शिरोर्तिशूल हृच्छोषमम्लपित्तस्यलक्षणम् ॥ ३ ॥

अर्थ–चिकना, खट्टा, बहुतभोजन करनेसे, मंदाग्निसे रातमें जागनेसे दिनमें सोनेसे, गर्मीमें डोलनेसे, कुपितहुआ अम्लपित्त पेटमें, हृदयमे, कंठ और मस्तकमें तथा नाभी और मूत्रस्थानमें गुदामें नानाप्रकारका रोग पेदा करताहै ॥ १ ॥ अफरा, शोष, शरीर काला, धूमसहित खट्टी डकार वारवारमे आवें, खाटी रद्दहो, भौंर, मोह, कम्प, अरुचि, हृदय, कण्ठमे दाह खुजली, देहमें चकत्ते, और फुंसी, तथा अरतिको करे ॥ २ ॥ खायाहुआ अन्न मंदाग्निके कारणसे अपक्व हुआ खट्टेपनेको प्राप्त होताहै, शिरमें दर्द, शूल हृदयमें शोष, ये अम्लपित्त के लक्षणहैं ॥ ३ ॥

वातकेअम्लपित्तकेलक्षण ।

वाताम्लपित्तं प्रकरोति पीडां शूलं भ्रमं हृत्कमलेऽतिशोषम् ॥ मूर्च्छां प्रकंपं पिटिकानि देहे कृष्णानि सूक्ष्माणि च मंडलानि॥४॥

पित्ताम्लपित्तकेलक्षण ।

पित्ताम्लं शीतजन्यं रुजयति मनुजं पित्तकोपाधिकारं रक्तांगमण्डलाभं त्वचिगतमनिशं छर्दिमूर्च्छाविपाकम्॥ कंडूरूपं सशोफं पिटिकशतचितं मोहशोकादिकारिअंतर्बाह्येति दाहं हृदिजठरगुदेशूलकृच्चर्महारि ॥ ५ ॥

कफाम्लपित्तकेलक्षण ।

पित्ताम्लं कफजं करोति पिटिकां देहे सशोफान्वितामालस्यं मलबंधनं वितनुते कंडूरुजं दारुणाम् ॥ निद्राभंगविमर्दनं च जडतामुद्गारमम्लान्वितं हृत्पीडामरुचिं तमः कफचयं काये गुरुत्वं वमिम् ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे अम्लपित्तलक्षणम् ॥

अर्थ-वातका अम्लपित्त पीडा, शूल, भ्रम, हृदयमें ताप, मूर्च्छा, कंप, फुंसी, काले और छोटे चकत्ते करताहै ॥ ४ ॥ पित्तका अम्लपित्त शीतसे पैदाहुआ मनुष्यको रोगीकरै, देहमें लाल चकत्तेहों, रद, मूर्च्छा, अजीर्ण, खुजली, सूजन, अनेक फुंसी, मोह, शोक, भीतर बाहर दाह, हृदय, पेट, गुदा इनमें शूल, चर्मको दूरकरैहै ॥ ५ ॥ कफका अम्लपित्त फुंसी, सूजन, आलस्य, मलबंध, खुजली, जडता, दारुणपीडा, निद्राकानाश, अंगोंका टूटना स्निग्धकार, हृदयमें पीडा, अरुचि, अँधेरा, कफगिरै, भारीपना और रद ये लक्षण करै है ॥ ६ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामम्लपित्तरोगनिदानम् ।

विसर्परोगलक्षणम् ।

लवणकटुरसानांसेवनाद्धर्मतापात् प्रभवति किलरोगोदोषकोपाद्विसर्पः ॥ वपुषि चलनशीलो दग्धविस्फोटरूपो बदरफलसमानः श्वेतपीतारुणाभः ॥ १ ॥

वातकेविसर्परोगकालक्षण ।

संदूष्यामिषमेदचर्मरुधिरं जातो विसर्पो बहिर्वात्मा विदधाति विद्रुमनिभान् विस्फोटकान् चञ्चलान् ॥ दीप्तांगारसमानदाहजनकान् पीडाकरान् कंडुरान् कासाध्मानमहाज्वरश्रमतथाशीर्षार्तिमोहाकरान् ॥ २ ॥

पित्तकेविसर्परोगकालक्षण ।

मूर्च्छां कुर्याद्विसर्प्पः प्रसरति बहुशः पैत्तिको घोररूपस्तथाग्न्यंगारदाहं पिटिकचयशतं नीलपीतारुणाभम् ॥ निद्रानाशं शरीरं ज्वरयति सततं रक्तमांसावशोषं कासं श्वासं विचेष्टां भ्रममरुचितृषास्फोटमंगेषु मोहम् ॥ ३ ॥

अर्थ-नोनका खट्टा आदि पदार्थ खानेसे, धूपमें रहनेसे, कुपितहुये जो वात, पित्त, कफ सो, विसर्परोग फैलनेवाला दग्धफोडारूप बेरके समान सपेद पीला लालरंगके पैदाकरते है ॥ १ ॥ वातका विसर्परोग मांस मेदाको बिगाडकर बाहर मूंगके समान चंचल फुंसीको पैदाकरै, जैसा प्रज्वालित अंगार दाहको करनेवाले, तथा पीडा कारक खुजली, खांसी, अफरा, महाज्वर, श्रम, प्यास शिरमें दर्द, मोहको करनेवाले, करताहै ॥ २ ॥ पित्तकाविसर्प देहमें फैल जावे, मूर्च्छा हो, अंगारके समान दाह, नीली, पीली लालरंगकी फुंसी, निद्राकानाश, ज्वर, रुधिर मांसका शोष, खाँसी, श्वास, चेष्टा हीन, भ्रम, अरुचि, प्यास अंगोंका, फटना, और मोहको करैहै ॥ ३ ॥

कफकेविसर्परोगकेलक्षण ।

पिटिकाश्च विसर्पकृता रुचिराः स्फटिकद्युतयो बलवीर्यहराः ॥ कफजामिलिता बहुदुःखयुता ज्वरकासतृपालसशोफकराः ॥४॥ आग्नेयाख्यो विसर्प्पः स्याद्वातपित्तसमुद्भवः ॥ कफवातोद्भवोग्रंथिः कर्दमः कफपित्तजः ॥ ५ ॥ ससांनिपातिको ज्ञेयः सर्वलक्षणसंयुतः ॥ विसर्प्पो द्वंद्वजः साध्योऽसाध्यः स्यात्त्रिदोषजः ॥ ६ ॥

विसर्परोगकेउपद्रव ।

विसर्पोपद्रवा ज्ञेया मांसशोथो ज्वरो मदः ॥ मर्मरोधस्तृषा श्वासो हिक्कादाहो भ्रमो रुचिः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे विसर्पलक्षणम् ।

अर्थ—कफका विसर्प रोग रुचिर (रूपवाली), स्फटिक मणिके समान, बल, वीर्य को नाशक, बहुत दुःखकी देनेवाली, ज्वर, खांसी, प्यास, आलस्य, सूजनको, करै है ॥४॥ वात पित्तसे आग्नेय विसर्प रोग होताहै, कफवातसे ग्रन्थिनाम रोग होताहै, और कफ पित्तसे कर्दमनाम विसर्प रोग पैदा होताहै ॥५॥ और जिसमें सब लक्षण मिलतेहों उसे सनिपातका विसर्प रोग जानना द्विदोषसे पैदा विसर्प रोग साध्यहै, और त्रिदोषका असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥ ये विसर्प रोगके उपद्रव जानने मांसमें सूजन, ज्वर, मस्ती, मर्मोंका रुकना, प्यास, श्वास, हिचकी, दाह, भ्रम, अरुचि ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्या विसर्परोगनिदानम् ॥

क्षुद्ररोगलक्षणम् ।

अजगल्लिकालक्षण ।

मुद्गासमानापिटिकासवर्णा स्निग्धासरुक्श्लेष्मविकारजाता ॥ देहे शिशूनां ग्रथिता च नीरुजा तामाजगल्लीं प्रवदंति संतः ॥ १ ॥

यवप्रख्याकालक्षण ।

अरुणभापिटिका बहुवेदना कफमरुज्जनिताग्रथितामिषे ॥ यवसमा कठिनाभिषजांवरैर्निगदिताज्वरकृत्किल सा यवा ॥ २ ॥

गर्दभिकाकेलक्षण।

उन्नता मंडलाकारा शोफयुक्पिटिकान्विता ॥ वातपित्तभवा रक्ता तां विद्याद्गर्दभीं बुधः ॥ ८ ॥

पाषाणगर्दभिकाकेलक्षण।

हनुसंधिगतः शोथो मंदरुक्कफवातजः ॥ स्थिरः स्निग्धो वुधैर्ज्ञेयः सैव पाषाणगर्दभः ॥ ९ ॥

अर्थ-सूजनहो, तथा कमलकी कर्णिकाके समान हो, दाह, पीडा, तृष्णा, अरति, मोह, युक्त फुंसीहों यो वातपित्तसे पैदा इन्द्रवृद्धि नाम कहते है ॥ ७ ॥ जो फुंसी मंडलके आकार गोलहो, ऊँचीहो सूजनको लिये लालहो उसे वातपित्तसे पैदा गर्दभिका कहते हैं ॥ ८ ॥ जो फुसी टोटी की संधीमें सूजन मंदपीडाको लिये हो स्थिर चिकनी यो कफवातसे पैदा पाषाणगर्दभिका कहतेहै ॥९॥

पनसिकाकेलक्षण।

पिटिकाकफवातविकारभवा बहुवेदनकृच्छ्रवणेन्तरजा ॥ ज्वरः-दाहतृषारतिमोहकरा पनसा मुनिभिर्गदिता किल सा ॥ १० ॥

जलगर्दभिकाकेलक्षण।

विसर्प्पवत् सर्पति यो हि शोफो रुजाकरः पित्तविकारजातः ॥ ज्वरार्तिदाहारतिमोहपूयकृत्परैर्निरुक्तो जलगर्दभोयम् ॥ ११ ॥

इरिवल्लिकाकेलक्षण।

पिटिकां सर्वदोषोत्थां सर्वचिह्नशिरोगताम् ॥ वर्तुलां तां विजानीहि वुध त्वं इरिवेल्लिकाम् ॥ १२ ॥

अर्थ-जो फुंसी वात कफके विकारसे पैदाहो और पीडायुक्त कानके भीतरहो, ज्वर, दाह, प्यास, अरति, मोह, लियेहो उसे मुनीश्वर पनसिका कहते हैं ॥ १० ॥ जो सूजन पहले थोडीहो फिर विसर्प रोगकी तरह फैलजाय पीडाकारक ज्वर, दाह, अरति, मोह, राध बहे, उसे जलगर्दभिका कहते है, यो पित्तके विकारसे होतीहै ॥११॥ जो मस्तकमें फुंसी त्रिदोषसेहो, गोलहो और त्रिदोषके लक्षण मिलतेहों उसे इरिवेल्लिका कहते हैं ॥ १२ ॥

कक्षलाईकेलक्षण।

कृष्णास्फोटापार्श्वकक्षांसवाहौ संस्था नूनं वेदनादाहयुक्ता ॥ कक्षासंज्ञांपित्तकोपाभिजातांजानीहि त्वं वैद्यराजोरुजाताम् ॥१३॥

गंधमालाकेलक्षण ।

कक्षाकुक्षिभवामेकां पिटिकाम्पित्तकोपजाम् ॥ त्वग्गता दाहकृत्कृष्णां गंधमालां च तांवदेत् ॥ १४ ॥

अग्निरोहिणीकेलक्षण ।

कक्षाया पिटिकोद्भवा ज्वरकरादीप्ताग्निदाहप्रदा मांसं भेद्यविनिर्गताः कफमरुत्पित्तोच्छ्रिता दारुणाः सप्ताहे दशमे दिनेच मनुजं हंतीह नूनं हठाद् दस्राद्यैर्भिषजांवरैर्निगदिता ज्वालामुखी रोहिणी ॥ १५ ॥

अर्थ--पसवाडेमें व भुजाके एक देशमें व कंधाके एक देशमें: काला फोडा हो, और पीडा दाह युक्तहो, उसे हे वैद्यराज ! तू कखलाई जान ये पित्तके कोपसे होती है ॥ १३ ॥ काखमें अथवा पसवाडेमें काले रंगका फोडाहो त्वचामेंहो दाहयुक्त उसे गंधमाला कहते हैं, येभी पित्तके कोपसे होती है ॥ १४ ॥ कांखमें मांसको विदीर्णकर दीप्त अग्निके समान जो फोडाहो ज्वर, दाहका करनेवाला, उसे अश्विनीकुमारको आदिले वैद्योंने ज्वालामुखी रोहिणी नाम कहाहै, ये रोग मनुष्यको सात या दशदिनमें मारडाले ये सन्निपातसे पैदा होती है ॥ १५ ॥

विदारिकाकेलक्षण ।

कक्षायां संधिदेशेषु विस्फोटो जायते नृणाम् ॥ विदारीकंदवद्वृत्तः सर्वलक्षणलक्षितः ॥ १६ ॥ बहुशीर्षा विदीर्णास्या वातपित्तकफोद्भवा ॥ चिरपाकारुणाभेयं प्रोक्ता वैद्यैर्विदारिका ॥ १७ ॥

शर्कराबुर्दकेलक्षण ।

मेदःस्नायुशिरामांसं दूष्यवायुर्बहिर्गतः ॥ ग्रन्थि शोष्यामिषं कुर्यात्तं विद्याच्छर्कराबुर्दम् ॥ १८ ॥

अर्थ--कांखमे या संधियोंमें फोडा विदारी कंदके समान गोलहो, और सब लक्षण मिलतेहों. ॥ १६ ॥ बहुतसे शिरहो और खुलेमुखकी, देरमें पके, लालरंगकी इसे वैद्योंने विदारिकानाम कहीहै, ये भी सन्निपातसे होतीहै ॥१७॥ वात, मेदा, मांस, नस इनमें प्राप्तहो और इनको बिगाड़कर बाहर प्राप्तहो फेर गांठको पैदाकरे और शोषको करे, उसे शर्कराबुर्द कहते हैं ॥ १८ ॥

शर्कराबुर्दरुकुर्याच्छर्करासदृशामिषम् ॥ शिरास्रावंचदुर्गंधं क्लिन्नगात्रं निरामिषम् ॥ १९ ॥

कदरफुन्सीकेलक्षण।

कंटकैः शर्करैः पादे सक्षते ग्रन्थिरुद्भवः कीलवद्वर्द्धते नित्यं विद्यात्कदरं बुधैः ॥ २० ॥

बिवाईकेलक्षण।

अतिक्रमणशीलस्य पादयोरुक्षयोर्महत् ॥ दारीं च कुरुते कोपात्तं विद्यात्तलसंश्रितम् ॥ २१ ॥

अर्थ-शर्करार्बुद रोग मांसको शर्कराके समान करदे और नस चुचावै तथा दुर्गंध युक्तहो शरीरखंदित और मांस रहित करदेताहै ॥ १९ ॥ कांटे व कंकराके पैरमें लगनेसे जो गांठ पैदाहो और कीलकी तरह बढै उसे, कदर नाम कहतेहैं ॥ २० ॥ जो मनुष्य बहुत टीलाकरै उसके पैरोंमें रूखापनहो और पैरकी एडी फटजाय उसे तलसंश्रित अर्थात् बिवाई कहते हैं ॥ २१ ॥

खारुयेकेलक्षण।

दुष्टकर्दमसंस्पर्शात्पादांगुल्यांतरे बहुः ॥ कंडूसुखातिदाहार्तिशोथयुक्तोऽलसंविदुः ॥ २२ ॥

इन्द्रलुप्तकेलक्षण।

रोमाणां कूपमध्येषु वातपित्तौ विनिर्गतौ ॥ मूर्छितौ तत्र रोमाणां तौ प्रच्यावयतेहठात् ॥ २३ ॥ श्लेष्मासृग्रोमकूपांस्तु रुणद्धिपरितो भृशम् ॥ बन्धात्युत्पत्तिमन्येषामिंद्रलुप्तमादिशेत् ॥२४॥

अर्थ-दुष्टकीच पैरकी उगलियोंमें लगनेसे खूजनहो और खुजानेसे सुखहो दाह और पीडाहो उसे अलसनाम अर्थात् खारुए कहते हैं ॥ २२ ॥ रोमकूपसे वात पित्त निकलकर मूर्छित हो, हठसे बालोंको दूरकरदेवै ॥ २३ ॥ फिर कफ और रुधिर बाल जमनेके स्थानको रोकदे बाल उगने नहीं दे उसे इन्द्रलुप्त कहते हैं ॥ २४ ॥

इन्द्रलुप्तस्यनामानि प्रोक्तानि भिषजांवरैः॥खालित्यमपरेरुह्या प्राहुश्चार्चेति चापरे ॥ २५ ॥

अरुंषिकाकेलक्षण।

अतिरूक्षतमे शीर्षे बहुकण्डुसमन्विते ॥ जायते दारुणोरोगः कफमारुतरोगतः ॥ २६ ॥ अत्यंत श्रमकोपाभ्या जातं पित्तं च मूर्द्धनि ॥ तेन पकाः कृताः केशाः ज्ञेयानि पलितानि च ॥२७॥

अर्थ--इंद्रलुप्तके ये नाम और भी वैद्य कहते हैं, खालित्य और रुया तथा चांदलो ये रोग स्त्रीके नहीं होता ॥ २५ ॥ केश पैदा होनेकी भूमिमें खुजली चले, और वह जगह रूखी होजाय, उसके वात कफसे अरुंषिका दारुण रोगहो ॥ २६ ॥ अति श्रम और क्रोधसे पित्तशिरमें प्राप्तहोकर बालोंको सपेद करदेता है, उसे पलित रोग कहतेहैं ॥ २७ ॥

मुखदूषिकाकेलक्षण ।

कफानिलाभ्यां सहशोणिताभ्यां यूनां शरीरे पिटिकाभिजाता ॥ दाहार्तिकृत्कण्टकतीव्रवेधी बुधैर्निरुक्ता मुखदूपिका सा ॥२८॥

तिलकेलक्षण ।

तिलप्रमाणानि च नीरुजानि स्थिराणि गात्रेषु समुद्भवानि ॥ कृष्णानि पित्तानिलकोपजानि तिलानि तानि प्रवदंति संतः॥२९॥

मस्सेकालक्षण ।

दृढोन्नतं पित्तकफानिलोत्थं मापप्रमाणं पलग्रन्थिरूपम् ॥ कृष्णं स्थिरं नीरुजवद्विपाकं तं मापसंज्ञं कथयन्ति वैद्याः ॥ ३० ॥

अर्थ—वात, कफ और रुधिरके कोपसे जवान पुरुषोंके जो फुंसी मुखपरहो दाह और पीडा तथा सेमलके कांटेकेसमान उसे मुखदूपिका अर्थात् मुहांसे कहते हैं ॥ २८ ॥ तिलके समान पीडा रहित स्थिर देहमें जो कालादागहो उसे वातपित्तसे पैदा तिलनाम कहते है॥२९॥ दृढ और ऊंचा तथा उडदके समान मांसकी गांठ काली और पीडा तथा पाकरहितहो उसे वैद्य मस्सा कहते हैं३०॥

न्यच्छकेलक्षण ।

गात्रोत्थं मंडलं कृष्णं शीतंवामहदल्पकम्॥ नीरुजं कफजं विद्यात्तंरुजंन्यच्छसंज्ञकम्॥ ३१ ॥

व्यंगअर्थात्झांईकेलक्षण ।

कोपश्रमाभ्यां कुपितोऽनिलोनिशमाश्रित्य वक्रंवितनोति मंडलम्॥कृष्णं मुखोत्थं तनुनीरुजं भृशं व्यंगं रुजं तं प्रवदंति साधवः३२

नीलिकाकेलक्षण ।

ऊष्मणासंहितो वायुर्बहिरागत्यकोपतः ॥ विदधाति मुखे छायां नीलिकां तां विदुर्बुधाः ॥ ३३ ॥

अर्थ—शरीरमें काला वा सपेद मण्डल छोटा वा बडाहो, और पीडारहितहो, उसे लहसन संज्ञक कहते हैं ॥ ३१ ॥ कोप और श्रमसे कुपितहुये वात पित्त भो मुखमें प्राप्तहो मंडलको करे हैं, और वो कालाहो पीडा रहित उसे महात्मा व्यंगरोग कहते है ॥ ३२ ॥ गर्मीके साथ पवन कोपहो बाहर निकल मुखपर जो छाया करदे उसे पंडित नीलिका कहते हैं ॥ ३३ ॥

कर्णिकाकेलक्षण।

संमर्दनात्पीडनतोभिघातान्मेढ्रस्य चर्मानुगतो हि वातः ॥ मणे-
रधस्तात्प्रकरोति कोशं ग्रंथिं च विद्यात्किलकर्णिकां ताम् ॥ ३४ ॥

अवपाटिकाकेलक्षण।

नखाभिघाताद्युवतीप्रसंगादुद्वर्तनाद्वीर्यगतेः प्ररोधात् ॥ संपी-
डनाद्यस्य च चर्मपाटयते बुधैर्निरुक्ताकिलपाटिका सा ॥ ३५ ॥

निरुद्धप्रकाशरोगलक्षण।

स्रोतांसि मूत्रस्य रुणद्धि वातो मणिस्थितो वीर्यगतेर्निरोधात् ॥
मूत्रं प्रवर्त्तेत मणिं विदीर्य विद्यान्निरुद्धप्रकाशं हि वैद्यः ॥ ३६ ॥

अर्थ—मसलनेसे वा पीडासे अथवा चोट लगनेसे अंडकोशकी चर्ममें प्राप्तभई वात सो कुपितहो सुपारीके नीचे गांठको पैदा करे, उसे कार्णिका कहते है ॥ ३४ ॥ नखके लगनेसे अथवा जिस स्त्रीकी योनि छोटीहो उससे संग करनेसे उबटनेसे, वीर्यकी गति रोकनेसे लिंगेन्द्रीके मीडनेसे लिंगकी चाम उतर जाय उसे पंडित अवपाटिका कहते है ॥ ३५ ॥ वीर्य्यकी गति रोकनेमे लिंगकी सुपारीके बीचमें स्थित जो वात सो मूत्रके मार्गको रोकदे फेर मूत्र सुपारीको खेदकरता उतरे, उसे वैद्य निरुद्ध प्रकाशरोग कहते हैं ॥ ३६ ॥

सन्निरुद्धगुदाकेलक्षण।

अपानवातस्य गतेर्विघातात्प्रकुप्यवातो विहितो गुदस्थः ॥ रुण-
द्धिमार्गं कुरुतेऽतिसूक्ष्मं द्वारं च विद्यात्किलदुस्तरं तत् ॥ ३७ ॥

गुदभ्रंशरोगकालक्षण।

निर्गच्छन्ति वहिर्गुदाः कृशतनोरुक्षाशिनोरोगिणोऽतीसारेण
युतस्य तं मुनिगणाः प्राहुर्गुदभ्रंशकम् ॥

शूकरदंष्ट्ररोगकालक्षण।

त्वक्पाको वहिर्निर्गतः किलगुदः कंडूधरो दाहकृद्रोगः शूकर-
दंष्ट्रको मुनिवरैः प्रोक्तो ज्वरार्तिप्रदः ॥ ३८ ॥

वृषणकच्छूरोगकेलक्षण ।

वृषणस्थं मलं स्वेदात्कंडूस्फोटं वितन्वते ॥ संस्रावं कफपित्तो-
त्थं विद्याद्वृषणकच्छुरम् ॥ ३९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे क्षुद्ररोगाणां नानाप्रकाराणां लक्षणम् ।

अर्थ—अपान वातको गति रोकनेसे कुपितहुई गुदाकी पवन सो गुदाके मार्गको छोटा करदे उसे दुस्तर रोग कहते हैं ॥ ३७ ॥ कृशदेहवाले पुरुषको तथा रूखा खानेवालेको तथा अतीसार वाले पुरुषकी गुदा बाहर निकल आवे उसे गुदभ्रंश रोग कहते हैं, जिसकी गुदा बाहर निकसिआवै और त्वचा पकजाय उस जगह खुजली चले तथा ज्वर पीडा दाह हो उसे मुनीश्वरोंने शूकरदंष्ट्र रोग कहाहै ॥ ३८ ॥ अंडकोशोंके नहीं धोनसे मैल जमजावे तब उस जगह पसीना आवे और खुजली चले, और खुजानेसे फोडा होजावे, और वो स्रवै उसे, वृषणकच्छु रोग कहते हैं, ये रोग कफ पित्तसे होताहै ॥ ३९ ॥

इतिहंसराजार्थबोधिन्यांक्षुद्ररोगनिदानम् ॥

अथमुखरोगलक्षणम् ।

ओष्ठौ मारुतकोपतोऽतिपरुषौ स्तब्धौ महावेदनौ भिद्येते दल-
संयुतौ मुनिवरैः प्रोक्तौ च वातात्मकौ ॥ रक्तौष्ठौ खरदाहपाकपि-
टिकायुक्तौ च तौ पित्तलौ कृष्णौ पिच्छिलशोफशीतपिटिका
पीडान्वितौ श्लेष्मलौ ॥ १ ॥

सन्निपातजनितओष्ठलक्षणम् ।

नानावर्णधरावोष्ठौ नानारोगसमन्वितौ ॥ पिटिकाभिर्युतौ
स्थूलौ विज्ञेयौ सान्निपातिकौ ॥ २ ॥

दंतरोगनिदानम् ।

आवृत्यदंतान्परितोऽपि रक्तं प्रवर्त्तते दन्तपलं विशीर्यते ॥ सक्ले-
दटुर्गंधयुतं च कृष्णं शीतोदसंज्ञः कफरक्तजोयम् ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रथम ओठके रोग कहतेहै ॥ वादीसे ओठ कठोर और टेढे तथा पीडायुक्त और फटजायँ, ऐसे मुनीश्वरोंने कहाहै, और लाल करडे दाह युक्त और पकजावें पीडिकायुक्त हों, उनको पित्तके कोपमे जानना और काले तथा गाढे सूजन युक्त शीतल पिटिका युक्त तथा पीडायुक्त

ऐसे लक्षणोसे कफका ओठमे रोग जानना ॥ १ ॥ जिनका अनेक प्रकारका वर्ण हो और अनेक रोगयुक्त हो, पीडिका और मोटेहों ऐसा, ओठोंका रोग सन्निपातका जानना ॥ २ ॥ दांतोंमे प्रात हो और रुधिर निकाले और दांतोंमे जो मास उसको दांतोंसे छुडाय दे तथा क्लेद और दुर्गंध युक्त हो तथा काला हो वो कफरुधिरसे पैदा शीतोद संज्ञक दांतरोग जानना ॥ ३ ॥

दंतपुप्पुटरोगकलक्षण ।

मध्येषु त्रिषु दंतेषु नीरुक्शोफः प्रजायते ॥ दंतपुप्पुटको रोगो गदितो भिषजांवरैः ॥ ४ ॥

दंतवेशरोगकलक्षण ।

रचयति बहुशोफं दंतमुत्पाटनाय पचयतिकिलमांसंदंतसंलग्नजातम् ॥ व्यथयति मुखदेशं स्त्रावयत्याशु रक्तं कफपवनविकारात्संभवो दंतवेशः ॥ ५ ॥

सौषिरनामदंतरोगलक्षण ।

लालास्त्रावीमहातापी दंतमूलेषु शोफवान् ॥ सौषिराख्यो हि विज्ञेयो रोगो रक्तसमुद्भवः ॥ ६ ॥

अर्थ--जो मध्यके तीन दांतोंमे पीडारहित सूजन हो उसे दतपुप्पुटरोग कहते है ॥ ४ ॥ जो दांतों के उखाडनेके लिये सूजनको प्रगट करे, और दांतके संलग्न मांसको पृथक करे, और मुखमें पीडाकरे, रुधिर स्त्रवे उसे वातकफसे पैदा दंतवेश नाम रोगकहते हैं ॥ ५ ॥ लार टपका करे, महा ताप होय, दांतोंकी जड़मे सूजन हो वो रुधिर से पैदा सौषिर नामक दंत रोगहै ॥ ६ ॥

महासौषिरदंतरोगलक्षण ।

दंतानावेष्टयस्तालुं दारयेच्च विसर्प्पवत् ॥ नानाव्याधिकरं विद्यात्तं महासौषिरं रुजम् ॥७॥ दंतसंलग्नमांसानि विदारयति शोणितम् ॥ निष्ठीवयति यः पित्तादसृक्परिपरोहिसः ॥ ८ ॥

शोफकशदंतरोगलक्षण ।

दंतानापीडच्य यो रोगश्चालयेच्च मुहुर्मुहुः ॥ पित्तरक्तकफोद्भूतो ज्ञेयः शोफकशोबुधैः ॥ ९ ॥

अर्थ--दांतोंको ढक कर और विसर्प रोग कीसी तरह तालुयेको विदीर्ण करे, और नानाप्रकारके रोग युक्त हों उसे महासौषिर दंतरोग कहते है ॥ ७ ॥ जो दांतसे लगे मांसको विदीर्ण करे, और

रुधिर मुखसे गिरै, वो पित्तसे पैदा असृक्‌शरिषर दंतरोग जानना ॥ ८ ॥ जो दांतोंको पीडाकरे और वारवार चलायमान करदे पित्त, कफ और रुधिरसे पैदाहो सो शोफकश रोग जानना ॥ ९ ॥

वैदर्भरोगकेलक्षण ।

वैदर्भरोगः कथितोभिघातजः सरक्तपित्तानिलकोपसंभवः ॥ संपीड्यदंतान् परिचालयत्यलं कचित्कचिच्छ्रावयतीव शोणितम् ॥१०॥

करालनामदंतरोगकेलक्षण ।

वायुर्दंतांतरे दंतान्कुरुते तीव्रवेदनाम् ॥ वर्द्धंते विकटान् रूक्षान् सकरालोऽभिधीयते॥ ११ ॥

अधिकमांसरोगकेलक्षल ।

हनुगते दशने किलपश्चिमेऽधिकतरार्तिकरेबहुशोफवान्॥कफकृतः पवनेन युतोनिशं मुनिवरैर्गदितोधिकमांसकः ॥ १२ ॥

अर्थ—वैदर्भ रोग चोटके लगनेसे रुधिरसे वात और पित्तके कोपसे दांतोंमें पीडाकरे और चलायमान करदे और कभी कभी रुधिर भी मुखसे गिरै ॥ १० ॥ वादी दांतोंके अन्दर दांत को पैदा करै, और उनमें दर्द हो तथा वे टेढे हों, रूखे हों, और बडे वो कराल नाम दंतरोग कहाहे ॥ ११ ॥ ठोडीके पश्चिम देशमें दांत पैदा हो और उसमें पीडा अधिक हो और सूजनहो, वो वात कफसे पैदा मुनीश्वरोंने अधिक मांसरोग कहाहे ॥ १२ ॥

कीटदंतरोगकेलक्षण ।

दंते दंते कृष्णछिद्रं करोति लालास्रावी चञ्चलो दुष्टगंधिः ॥ पीडा युक्तः शोफसंरंभकारी प्रोक्तो वैद्यैः कीटदंतः सरोगः ॥ १३ ॥

भंजनकदंतरोगकेलक्षण ।

यो दंतभंगं कुरुते हि वक्त्रे पापात्मनां भोजनदुःखितानाम् ॥ वातेन ज़ातः कफमिश्रितेन जानीहि तं भंजनकं हि वैद्यः ॥ १४ ॥

दंतविद्रधिरोगकेलक्षण ।

दंतसंलग्नजं मांसं वलाढ्यञ्चबहुशोफयुक् ॥ रक्तपूयाश्रयं क्लिन्नं तं विद्याद्दंतविद्रधिम् ॥ १५ ॥

अर्थ—दांत दांतमें काले छिद्र करदे खार टपके चंचल और दुष्ट गन्धश्रावे पीडा और सूजन को बढावे वो वैद्योंने कीट दंतरोग कहा है ॥ १३ ॥ पापीमनुष्योंके मुखसे दांतोंको उखाडडालें इसीसे भोजन करनेमें दुःखित हो वो वादीसे और कफसे प्रगट ऐसा भंजनक नाम दंतरोग जानना ॥१४॥ दांतोंसे मिलाहुआ जो मांस उसमे मैल बहुतहो और सूजनहो, तथा रुधिरस्रावकरवै, वो दंत विद्रधि रोग जानना ॥ १५ ॥

दंतहर्षरोगकेलक्षण ।

शीतवाताम्लसंस्पर्शाद्दंतपीडासहोगदः ॥ दंतहर्षः स विज्ञेयो वातपित्तसमुद्भवः ॥ १६ ॥

दंतशर्करारोगकेलक्षण ।

मलोदंतगतः स्थूलः शर्करेव चिरस्थितः ॥ कफोद्भूतो बुधैर्ज्ञेयः सारुजा दंतशर्करा ॥ १७ ॥

दंतश्यावरोगकेलक्षण ।

दंडादीनां विघाताद्वा कोपाच्छोणितपित्तयोः ॥ प्राप्नोति कृष्णता दंतोदंतश्यावो रुगुच्यते ॥ १८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे ओष्ठदंतरोगलक्षणम् ॥

अर्थ—शीतल वात और खट्टी वस्तुके स्पर्शसे जो दांतोंमें पीडाहो वो वातपित्तसे प्रगट दंतहर्षरोग जानना ॥ १६ ॥ दांतोंमें मैल बहुत शर्कराकीसी तरह रहै, वो पण्डितोंने शर्करारोग कहाहै ॥ १७ ॥ दंड आदि चोट लगनेसे और रुधिर पित्तके कोपसे जो कालेदांत पड़जायँ उसे दन्तश्यावरोगकहतेहैं ॥ १८ ॥

इति माथुरदत्तरामकृतेहंसराजार्थबोधिनीभाषाविवरणे ओष्ठदन्तरोगलक्षणम् ।

अथजिह्वारोगनिदानम् ।

वातेन स्फुटिता कठोररसना रूक्षाप्रसुप्तार्तिदा पित्तेनोष्णतरार्ति दाहसहिता दीर्घारुणैः कंटकैः ॥ संयुक्ता च कफेन सा गुरुतरा मांसोत्थितैरंकुरैः श्वेतैः शाल्मलिकंटकाकृतिधरैर्युक्तातिशोफान्विता ॥ १ ॥

उल्लासनामजिह्वारोगकेलक्षण ।

जिह्वातले महाशोथो गुरुर्ग्रंथियुतो दृढः ॥ पूयशोणितयुक्पाकः सोल्लासः कथितो बुधैः ॥ २ ॥ जिह्वाग्रमानस्य करोति शोथं लालान्वितं तीव्रविपाकमुग्रम् ॥ कंडूयुतं रक्तकफाधिशूलं रुक्शोफजिह्वा कथिता भिषग्भिः ॥ ३ ॥

अर्थ–वादीसे जीभ कठोर और फटी तथा रूखी प्रसुप्त पीडायुक्त होतीहै, पित्तसे गरम, दाहयुक्त, बडे और लालकांटोसे युक्त जानना कफसे भारी सपेद, सेमरके कांटे सरीखे कांटे और सूजन युक्त होतीहै ॥१॥ जीभके नीचे सूजन बहुत हो तथा भारी और कठिन गांठहो रुधिर और राधयुक्त हो वो पक जाय उसे उल्लासनाम जीभका रोग कहते हैं ॥ २ ॥ जीभके अग्रभागमें सूजन हो और लारगिरै बहुत पके तथा खुजलीचलै और रुधिर कफसे शूल ज्यादे हो वो शोफजिह्वानाम रोग कहाहै ॥ ३ ॥

तालुमूलोत्थितः शोथः कासश्वासतृषान्वितः ॥ सव्यथः कफरक्तात्मा कंठतुण्डः सकथ्यते ॥ ४ ॥ तालुकोशगतः शोथश्चिरपाकी ज्वरान्वितः ॥ दाहार्तिकासकृत्स्रावी तुंडकेशी स उच्यते॥५॥

कच्छपरोगकेलक्षण ।

कूर्माकारः प्रोन्नतस्तालुदेशे शोथः सोक्तः कच्छपो वैद्यराजैः ॥ रक्ताज्जातो रक्तवर्णो ज्वराढ्यः स्तब्धः शोफः कोलमात्रः कफात्मा ॥ ६ ॥

अर्थ–और जो तालुयेके मूलमें सूजन, खांसी, श्वास, युक्त तथा प्यासके संयुक्त हो, और दर्द होताहो वो कफ पित्तसे प्रगट तुंडनाम रोग कहाहै ॥ ४ ॥ जो तालुके कोशमें सूजन हो और देरमें पके ज्वर युक्त और उसमें खांसी, दाह, पीडाहो, स्रवै, उसे तुंडकेशी रोग कहते है ॥ ५ ॥ तालुयेमें कछुयेके आकार ऊंची सूजनहो उसको वैद्योंने कच्छप नाम रोग कहाहै, रक्तसे पैदा भया और लालवर्ण तथा ज्वरयुक्त टेढा और सूजनहो बेरके प्रमाण वो कफसे पैदा जानना ॥ ६ ॥

तालुपाकतालुशोषलक्षण ।

पित्ताज्जातं शोथमुग्रं सदाहं तृष्णायुक्तं तालुपाकं वदेद्ज्ञः ॥ वातोद्भूतः श्वासकासार्तिशोषैर्युक्तः शोथस्तालुशोषो भवेत्सः॥७॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे जिह्वातालूनां लक्षणानि ॥

अर्थ—सूजन जार दाह तथा प्यासहो, उसे पण्डित तालुपाक रोग कहतेहैं, ये पित्तसे पैदा होताहै और जिसमें श्वास, खांसी, शोथ और सूजनहो वो वातसे पैदा तालुशोष रोगहै ॥ ७ ॥

इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिनीटिकायां जिह्वातालुरोगनिदानं समाप्तम् ॥

गलरोगस्यनिदानम् ।

पित्तश्लेष्मशरीरिणां गलगताः संदूष्यरक्तामिषं ते तत्रैव विमूर्च्छिताः प्रकुपिताः कुर्वंति नानागदान् ॥ मांसोत्थैः कठिनांकुरैश्चपरितो रुंधंति कंठानिलं प्राणानाशु विकर्षयंति मुनिभिः सा रोहिणी प्रोच्यते ॥ १ ॥

वातरोहिणीकेलक्षण ।

चिह्नानिवातरोहिण्यागले मांसभवांकुराः ॥ ज्वरार्त्तिकारिणी तीव्रा शोषिणी कंठरोधिनी ॥ २ ॥

पित्तरोहिणीकेलक्षण ।

मांसांकुरागलोत्पन्ना दाहिनस्तीव्रवेदनाः ॥ सूक्ष्मत्वचस्त्वरापाकाश्चिह्नैः स्यात्पित्तरोहिणी ॥ ३ ॥

अर्थ—मनुष्योंके वात, पित्त, कफ गलेमें प्राप्तहो रुधिर और मांसको विगाड फेर आप दुष्ट हो नानाप्रकारके गलेमें रोग करते हैं, और माससे प्रगट भये जो कठिन अंकुर उनसे कठको रोक तथा श्वास को रोकदे और प्राणको निकाल दे उसे रोहिणी नाम कंठरोग कहते हैं ॥ १ ॥ वातरोहिणीके ये लक्षणहैं, गलेमें मांसके अंकुर हों, सो ज्वर और पीडा, शोष, तथा कंठको रोकदे ॥ २ ॥ मांसके अंकुर जो हों, उनमें दाह और तीव्र पीडा छोटे जल्दी पकें ये पित्तरोहिणीके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

कफरोहिणीकेलक्षण ।

मांसांकुरैः स्थूलतरैरपाकैःकंठांतरोत्थैः कठिनैरवेदनैः ॥ दीर्घैस्थिरैः कंडुरशोथवद्भिर्ज्ञेयाभिषग्भिः कफरोहिणीसा ॥ ४ ॥

रुधिरकीरोहिणीके लक्षण ।

कंठांतरोत्थैः पिटिकैरुजान्वितैः सूक्ष्मैः सशोथैर्गलरोगकारकैः ॥ श्वासार्तिकासज्वरदाहमोहैर्ज्ञेया बुधैरक्तभवा च रोहिणी ॥ ५ ॥

कंठशालूकरोगकेलक्षण ।

कंठे जातं ग्रन्थिरूपं कफोत्थं साध्यं शास्त्रैः कोलमज्जासमानम् ॥ स्थैर्यं कण्डूशोफयुक्तंकठोरं विज्ञेयं तं कंठशालूकरोगम् ॥ ६ ॥

अर्थ–मांसके अंकुर गलेमें मोटेहों, पकेनहीं, तथा कठिन पीडारहित, लंबेहों, स्थिरहों, खुजली, सूजन रहित, यो वैद्योंने कफरोहिणी कहीहै॥४॥कंठमें अंकुर छोटेहों और उनमें पीडा हो और सूजन तथा गलेके रोगोंको प्रगट करनेवाले, श्वास, पीडा, खांसी, ज्वर, दाह, मोहयुक्तहो, उसे रुधिरकी रोहणी रोग कहते हैं ॥ ५ ॥ कोलकी मज्जा अर्थात् बेरकी गुठलीके समान कंठमें गांठ पैदा हो यो कफसे प्रगट साध्य है, स्थिर हो खुजली सूजन कठोर ये कंठशालूक रोगके लक्षण कहे हैं ॥ ६ ॥

अधिजिह्वारोगकेलक्षण ।

शोथोजिह्वाग्रभागस्थः पाकरक्तकफोद्भवः जिह्वावंधो महोग्रार्त्तिरधिजिह्वो विधीयते ॥ ७ ॥

वलासाक्षरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मानिलौ गले शोथं कुरुतः श्वाससंभवम् ॥ मर्मच्छिद्रं गुरुस्थूलं वलासाक्षं विदुर्बुधाः ॥ ८ ॥

नासाशतघ्नीरोगकेलक्षण ।

वर्त्तिर्गलस्था वहुवेदनान्विता मांसांकुरस्था परिकंठरोधिनी ॥ दोषैर्युता प्राणहरी सकंटका नासाशतघ्नी परिकीर्त्तिताबुधैः ॥ ९ ॥

अर्थ–जिह्वाके अग्रभागमें सूजन हो, पके जीभ को स्तम्भन करदे, बहुत पीडा हो उसे रुधिर कफसे प्रगट अधिजिह्वरोग कहाहे ॥ ७ ॥ कफ और वात गलेमें सूजन करै तथा श्वास और मर्म स्थानमें छिद्र तथा मोटा और भारी हो उसे वलासाक्ष रोगकहा है ॥ ८ ॥ उसे पंडितोने नासा शतघ्नीरोग कहा है, जिसमें पीडायुक्त गलेमें वत्तीसीहो तथा मांसके अंकुरनसे कंठ रुकाहो दोषोंसे परिपूर्ण हो प्राणके हरनेवाली कांटे युक्त हो ॥ ९ ॥

गलायुरोगकेलक्षण ।

ग्रन्थिर्गलस्थोवदरप्रमाणो नीरुक्स्थिरोऽसाध्यतमः कफात्मा ॥ प्रोक्तोगलायुर्मुनिभिः कदाचिद्रोगं सपक्षं परितो न पश्येत् ॥१०॥

वलविद्रधिरोगकेलक्षण।

शोथः सर्वं गलं व्याप्य वर्द्धते बहुरोगवान्॥ त्रिदोषोत्थो महा- न्वैद्यैः संज्ञेयो गलविद्रधिः॥ ११॥

गलौघरोगकेलक्षण।

शोथो गलस्थो बहुरूपधारी कंठावरोधी गलदाहकारी॥ श्लेष्मा सृगुत्थो बलवीर्यहारी प्रोक्तो गलौघो मुनिभिर्विकारी॥ १२॥

अर्थ—गलेमें गांठ बेरके समान हो, पीडारहित, स्थिर हो तो असाध्य कहा है ये कफसे प्रगट होताहै पक्षउपरांत नहीं रहै॥१०॥जो सूजन सबगलेमें व्याप्तहो फिर बढै और बहुतसे रोगयुक्त हो उसे सन्निपातसे प्रगट गलविद्रधि रोगकहाहै॥ ११॥ अनेक प्रकारकी सूजन गलेमेंहो और कंठको रोकनेवाली तथा गलेमें दाहके करनेवाली और बल वीर्यका नाशक कफरुधिरसे पैदा गलौघनाम रोग मुनीश्वरोंने कहाहै॥ १२॥

अतिसूक्ष्मतरा वदनांतरगाः परितः खचिता मुखतोदकराः॥ पवनस्य विकारभवा बहुधा परिपाकयुतासितभा ज्वरदा॥ १३॥ अरुणद्युतयो मुखमध्यभवास्तनुरूपधरा बलवीर्यहराः॥ वदनार्ति तृषाज्वरदाहकराः पिटिका किल पित्तभवा भणिताः॥ १४॥ चिरपाकयुताविरुजाकठिनाः कफकोपविकारभवामुखजाः॥गुर- वोऽल्पमसूरदलाकृतयः खरकंडुरदा मुखपाककराः॥ १५॥

अर्थ--बहुत छोटीफुंसी मुखके भीतर पैदाहोयँ, और मुखमें पीडाकरैं, तथा सपेद और ज्वरके करनेवाली और पकनेवाली ये वातके विकारसे पैदा होती हैं॥१३॥लालरंगकी फुंसी मुखमेंहों छोटी तथा बलवीर्यकीनाशक मुखमें पीडाकरै,तथा प्यास,ज्वर,दाहको करै,वो पित्तके विकारसे पैदा होती हैं॥१४॥जो फुंसी देरमें पके पीडाहो, या नहीं कठिन और मसूरकेदालकी समानहों तीखी खुजली चलै और बडीहों तथा मुखके पाककरनेवाली ये कफके विकारसे होती हैं॥ १५॥

पित्तशोणितकोपेन मुखपाकोभिजायते॥ उष्मारतिव्यथादाह ज्वरशोषतृषार्त्तिकृत्॥ १६॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे गलमुखरोगाणां लक्षणानि॥

अर्थ–पित्त और रुधिरके कोपसे मुखपाक होताहै, वो गरमी तथा अरति पीडा, दाह, ज्वर, शोष, प्यास, इनका करनेवाला होताहै ॥ १६०॥

इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतहंसराजार्थबोधिनीटीकायां गलमुखरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथकर्णरोगनिदानम् ।

वातः प्रचंडः स्वगतिं निरुध्य श्लेष्मान्वितो वक्रगतिं विधाय ॥ कर्णांतरे पीडयतीव कोपात्तत्कर्णशूलं कथितं भिषग्भिः॥ १ ॥

कर्णनादकेलक्षण ।

कर्णःस्रोतांसि संवेष्ट्य संभ्रमन्मारुतोवली ॥ करोति विविधाञ्छब्दान्कर्णनादः सकथ्यते ॥ २ ॥ स्रोतांसिकर्णयोर्यस्य वहंति श्लेष्ममारुतौ ॥ समनुष्योऽल्पकालेन वधिरत्वं प्रजायते ॥ ३ ॥

अर्थ–प्रचंड जो वात सो अपनी गतिको रोक और कफके संग है टेढी गतिसे चले, और कानमें पीडाकरै उसे वैद्य कर्णशूल कहते हैं ॥ १ ॥ प्रवल जो वात सो भ्रमणकर्त्ताहुआ कानोंके छिद्रोंको बंदकर और अनेक प्रकारके शब्द करै, उसे कर्णनाद कहते हैं ॥ २ ॥ जिसके कानमें वात और कफ प्राप्तहो वो मनुष्य थोडेही कालमें बहिराहो ॥ ३ ॥

शब्दक्ष्वेडकेलक्षण ।

पित्तश्लेष्मान्वितो वायुः कर्णरन्ध्रेषु संस्थितः ॥ करोति गुंजवच्छब्दं स शब्दक्ष्वेड उच्यते ॥ ४ ॥

स्रावगदरोगकेलक्षण ।

जलस्य पाताच्छ्रुतिरन्ध्रमध्ये शस्त्रादिकैर्वा शिरसोभिघातात् ॥ वातार्दितो यः श्रवणः सरक्तं पूयं स्रवेत्स्रावगदो निरुक्तः ॥ ५ ॥

कर्णगूथरोगकेलक्षण ।

वातेरितः कफः कुर्यात्कंडूश्रवणयोर्द्वयोः ॥ श्लेष्मापित्तोष्मणाशुष्कः कर्णगूथः स जायते ॥ ६ ॥

अर्थ–पित्त कफयुक्त जो वात सो कानोंके छिद्रोंमे स्थित होय, तव मनुष्यके कानोंमें गुञ्जार शब्दहो, उसे शब्दक्ष्वेडरोग कहते हैं ॥ ४ ॥ कानमें जलके पडनेसे तथा शस्त्रआदिके लगनेसे अथवा शिरमें चोटके लगनेसे वातसे पीडित कानमेंसे जो रुधिर और राध निकले उसे स्रावगद

रोग कहते हैं ॥ ५ ॥ वातकरके प्रेरित जो कफ सो दोनों कानोंमें खुजली पैदाकरै और पित्तकी गर्मीसे कफशुष्क होजाय तब कर्णगूथ रोग पैदाहो ॥ ६ ॥

प्रतीनाहकेलक्षण ।

सकर्णगूथो द्रवतां यदा नयेत्पुनश्च तत्रैव विलीयतेऽनिशम् ॥ मुखं च नासां सपुनः प्रपद्यते बुधैः प्रतीनाहमिहोच्यतेतत् ॥ ७ ॥

क्रमिकर्णरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मा मूर्च्छागतः कर्णे जंतूंश्च सृजते बहून् ॥ शिरोर्द्धे कुरुते पीडां क्रमिकर्णो बुधैः स्मृतः ॥ ८॥ श्रवणे श्लेष्मणा पूर्णे संप्रविश्येव मक्षिका ॥ जंतूंश्च स्रवते शीघ्रं क्रमिकर्णोऽभिधीयते ॥ ९ ॥

अर्थ–वोही कर्णगूथ रोग पतलाहोकर फेर जातारहे फेर मुख और नाकमें पैदाहो, उसे वैद्योंनें प्रतीनाह रोगकहाहै ॥ ७ ॥ कफकानमें मूर्च्छितहो बहुत क्रमि पैदाकरे, और आधे मस्तकमें पीडाहो, उसे क्रमिकर्ण रोग कहाहै ॥ ८ ॥ कफसे परिपूर्ण कानमें मक्खी प्रवेशकर कीडोंको पैदाकरै, उसको भी क्रमिकर्णरोग कहतेहैं ॥ ९ ॥

पतंगो वाथवा कीटः प्रविश्य श्रवणांतरे ॥ नराणां कुरुते पीडां व्याकुलं क्षतसंचयम् ॥ १० ॥ कीटः प्रविश्य कर्णांते किल्लीस्फोटयतेऽनिशम् ॥ विद्रधिं कुरुते शीघ्रम्बाधिरत्वं प्रकल्पयेत् ॥ ११ ॥

कर्णपाकरोगके लक्षण ।

कर्णस्य मध्ये पिटिकाब्जकर्णिकाकाराकृतिस्तोदतृषाज्वरान्विता ॥ शोषोल्पपाकः पवनात्मकोयं प्रोक्तोभिषग्भिः किलकर्णपाकः ॥ १२ ॥

अर्थ–पतंग अथवा कीडा कानमें प्रवेशकर मनुष्यको पीडितकरै, तथा कानमें घाव करदे॥ १० ॥ कीडा कानमें घसकर किल्लीमारे वो विद्रधि और बहिरापना करदे॥ ११ ॥ कानमें फुंसी कमल कर्णिकाके आकार पैदाहो तथा पीडा, तृषा, ज्वर, शोष थोडा पाकयुक्तहो, वो वातसे पैदा वैद्योंने कर्णपाकरोग कहाहै ॥ १२ ॥

पित्तकर्णपाककेलक्षण ।

कर्णांतरे कोशविदीर्णकारी दाहार्तिक्लेदस्य विकारधारी ॥ वैकल्यकृद्वीर्यबलोपहारी पित्तात्मकोयं किल कर्णपाकः ॥ १३ ॥

कफकर्णपाकके लक्षण ।

स्थूलत्वक्कर्णविस्फोटकंडूशोपार्तिपाकवान् ॥ पूयस्रावीमहाक्लेदी कर्णपाकः कफात्मकः ॥ १४ ॥ क्षतोत्पाटनात्कर्णपाकेंवुपूर्णाद्भवेद्विद्रधिः कर्णविध्वंसकारी ॥ महारुक्करोतिप्रदोदीर्घशोफं मुहुः स्रावदुर्गंधकृत्कष्टपाकी ॥ १५ ॥

अर्थ–जो फुंसी कानके भीतरी झिल्लीको फोडकर दाह, पीडा, क्लेदयुक्त वेकली, करै, तथा वीर्य बलका नाशकरे, उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपाक कहाहै ॥ १३ ॥ स्थूलत्वचा और कानमें फूटन खुजली, शोप, पीडा, पाकयुक्तहो, राधनिकले, महाक्लेदयुक्त, उसे वैद्य कफका कर्णपाक रोगकहतेहैं ॥ १४ ॥ कानमें घाव होगयाहो उसपरसे खुंड उखाडनेसे तथा कर्णपाकमें पानीके पडनेसे कानमें विद्रधिरोग कानका विध्वंस करनेवाला पैदा होताहै, उसमें पीडा और सूजन तथा स्राव और दुर्गंध और कष्टसेपके ये लक्षण होतेहै ॥ १५ ॥

वातपूतिकर्णरोगकेलक्षण ।

पूयं स्रवेद्यः श्रवणोथपूर्तिं विस्फोटपीडां रतिगुंजघोपः ॥ शोपार्बुदैर्युग्ज्वरशूलयुक्तः वातत्मकोऽयं खलु पूतिकर्णः ॥ १६ ॥

पित्तपूतिकर्णकेलक्षण ।

अत्यंतदाहो वहुतीव्रवेदना नित्यं स्रवेद्यः श्रवणोतिपूतिः ॥ पूयं च पीतं परिपित्तजोयं प्रोक्तो भिषग्भिः किल पूतिकर्णः ॥ १७ ॥

कफपूतिकर्णकेलक्षण ।

कर्णस्रावं पूयमुग्रं सपूतिं शोथः स्निग्धः क्लेदवैश्रुत्यकंडूः ॥ शुक्लस्थैर्यं श्लेष्मजं दीर्घपाकं विद्याद्रोगं पूतिकर्णं नितांतम् ॥ १८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे कर्णरोगलक्षणानि ।

अर्थ–जिसमेंसे राध वहै, कानमें दुर्गंध, तथा फूटन, पीडा, अरति, गुंजारहोना, शोप, अर्बुद, ज्वर, शूल, इन करके युक्तहो उस वातको कर्णपूत रोग कहाहै ॥ १६ ॥ जिसमें दाहतीव्र, दुःख नित्यहो, कानमें राधस्रवे, तथा राधपीली निकसै, उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपूति रोगकहाहै ॥ १७ ॥ कानमेंसे पीव वासकेसाथ निकले, तथा चिकनी सूजन क्लेदयुक्तहो तथा कानमे खुजली चलतीहो सपेदहो देरमें पके वो कफका कर्णपूति रोग जानना ॥ १८ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठकनिर्मितायां हंसराजार्थबोधिनीटीकायांकर्णरोगास्समाप्ताः ॥

नासरोगलक्षणम्।

आनह्यते येन गदेन नासिका विशुष्यते पूय्यति तुद्यते क्वचित्॥
न गंध्यते क्लिद्यति खिद्यतेऽथवा स पीनसो रुक्कथितो भिषग्वरैः॥१॥

क्षवथुरोगकेलक्षण।

यदा घ्राणमर्मस्थले संविकारे कफेनावलिप्तो मरुन्नासिकायाः॥
तदा याति बाह्यांतराच्छब्दयुक्तो निरुक्तो भिषग्भिर्वरिष्ठः क्षवोयम्॥२

पूतिनस्यरोगकेलक्षण।

पक्वैर्दोषैर्यदा वातस्ताल्वादौ मूर्च्छितो भवेत्॥ नसो निस्सरते पूतिः पूतिनस्यं च तद्वदेत्॥३॥

अर्थ–जिसमें कफसे नाक बंधजावे और पीबबहे, तथा क्लेशहो, और जिसमें सुगन्ध दुर्गन्धका ज्ञान नहीं तथा पीडाहो उसे वैद्योंने पीनसका रोग कहाहै॥ १॥ जिसकी नाकमें पवन दुष्टहोकर नाकके मर्मस्थानोंको दुःखित करै फिर वहीनाककी पवन कफसे मिलकर शब्दयुक्त भीतरसे बाहर निकसै, उसे वैद्योंने क्षवथु अर्थात् छींकका रोग कहाहै॥ २॥ जिसके गला तालुके मूलकी पवन दोषोंको बिगाडकर आप गलेमें मूर्च्छित हो नाकसे दुर्गंध युक्त निकसै, उसे पूतिनस्य कहते हैं॥ ३॥

नासापाककेलक्षण।

नासिकायां स्थितं पित्तं परुषी कुरुतेनिशम्॥ नासिकापाकमित्याहुर्दाहक्लेदव्यथान्वितम्॥ ४॥

पूयरक्तकालक्षण।

दोषेषु पक्वेषु ललाटमध्ये पूयं सरक्तं मुखनाशयुक्तम्॥दुर्गन्धियुक्तं बहुशः स्रवेत्तत्प्रोक्तम्भिषग्भिः किलपूयरक्तम्॥ ५॥

प्रदीप्तरोगकेलक्षण।

दाहान्वितायाः परिनासिकायाः सन्निःसरेद्धूमधनंजयाभ्याम्॥
सार्द्धं शतोदी पवनप्रचंडो रोगं प्रदीप्तं प्रवदन्ति वैद्याः॥ ५॥

अर्थ–नाकमें पित्तदुखितहो फुंसीको पैदाकरे और वो पकजाय तथा दाह राध व्यथायुक्तहो उसे नासिकापाकरोग कहते हैं॥ ४॥ ललाटमें दोषोंके पकनेसे रुधिर राध और दुर्गंध युक्त मुख नाक बहुतस्रवै, उसे पूयरक्तरोग कहते हैं॥ ५॥ जिसकी नाकसे दाहयुक्त प्रचंड पवन निकलै, तथा धुंआंनिकले, और पीडाहो उसे प्रदीप्तरोग कहते हैं॥ ६॥

प्रतीनाहरोगकेलक्षण ।

रुंध्यान्मार्ग्गं नसो वायुः श्लेष्मणा सहितो वली ॥ प्रतीनाहं चतंरोगं विद्यादाधुनिको भिपक् ॥ ७ ॥

नासाशोपकेलक्षण ।

घ्राणोत्थश्लेष्मसंघातः पक्वपित्तोष्मणानिशम् ॥ वातेन शोपितः सोऽयं शोपः प्रोक्तो भिपग्वरैः ॥ ८ ॥

पक्वपीनसकेलक्षण ।

श्लेष्मातिसांद्रः परिगंधहीनः शिरोलघुत्वं स्वरवर्णशुद्धिः ॥ नासावकाशं पवनप्रवृत्तिश्चिह्नानि पक्वस्य हि पीनसस्य ॥ ९ ॥

अर्थ—नाकको पवन कफसे मिलकर श्वासको रोकदे, उसे प्रतीनाहरोग अयके वैद्य कहते हैं ॥ ७ ॥ नाकमें उठाजो कफका समूह वो पित्तकी गर्मीसे पकजाय फिर वात उसको सुखाय देय, तब मनुष्य श्वास कठिनसे ले उसे नासाशोप कहते हैं ॥ ८ ॥ जब पीनस पकजाताहै, तब ये लक्षण होतेहैं, गंधरहित गाढा कफ निकले, शिरहलकाहो, स्वरका वर्णशुद्धहो, नाकशुद्ध, पवन अच्छीतरह निकले, ये पकीपीनसके लक्षणहैं ॥ ९ ॥

सरेकमारोगकीउत्पत्ति ।

घ्राणांतरे सूक्ष्मरजोनिपातादुद्भाषणान्मैथुनतोऽर्कतापात् ॥ शीर्पाभिघाताद्बहुशीतसेवनाद्वातः प्रतिश्यायगदं प्रकुर्यात् ॥ १० ॥

सरेकमारोगकापूर्वरूप ।

शिरोगुरुत्वं च प्रहृष्टरोम शरीरमार्द्रं क्षवथुप्रवृत्तिः ॥ निद्रालसत्वं नयनाश्रुपातो भवेत्प्रतिश्यायपुरो हि चिह्नम् ॥ ११ ॥

वातकीपीनसकेलक्षण ।

स्वरोपघातो गलतालुजिह्वाशोपोऽथनासापिहिताकचित्स्यात् ॥ स्रावोतिसूक्ष्मः परिशंखपीडा मरुत्प्रतिश्यायरुजोपचिह्नम् ॥१२॥

अर्थ—नाकमें धूलिके जानेसे, बहुत जोरसे बोलना, मैथुनके करनेसे, सूर्यके घाममें रहनेसे शिरमें चोट लगनेसे बहुतशीतके सेवनकरनेसे, कुपितजो वात सो पीनस रोगको पैदाकरै ॥१०॥ शिर भारी, रोमांच, शरीरकाटूटना, बारबार छींककाआना, नींद और आलकस तथा नेत्रोंसे अश्रुपातहो ये सरेकमाके पूर्वमें होतेहैं ॥ ११ ॥ स्वर बैठजाय, गला, तालु, जीभ इनका सूखना,

नाकका मार्ग रुकजाय थोडापतला गरम पानी गिराकरै, कनपटी दूखे ये वातके सरेकमांके लक्षणहैं ॥ १२ ॥

पित्तकीपीनसकेलक्षण ।

नासास्रावो महातप्तपीनसोवन्हिधूमवान् ॥ सदाहः पैत्तिको ज्ञेयः श्लेष्मजः कथितो बुधैः ॥ १३ ॥

कफकीपीनसकेलक्षण ।

शुक्लाभो नासिकास्रावः गलोष्ठतालुकंडुमान् ॥ शिरस्तोदःप्रतिश्यायः श्लेष्मजः कथितो बुधैः ॥ १४ ॥

रुधिरकीपीनसकेलक्षण ।

रक्तस्रावः शिरःपीडा दाहः शंखद्वयेऽनिशम् ॥ रक्तत्वं नेत्रयोर्ज्ञेयः प्रतिश्यायः सरक्तजः ॥ १५ ॥

अर्थ–जिसके नाकसे गरम गरम पानी गिरे, और अग्निके समान धुआं निकलै, तथा दाहहो, वो पित्तकी पीनस कहीहै ॥ १३ ॥ नाकसे पानीसपेद गिरे, और गला, तालू, ओठ इनमें खुजली चलै, मस्तकभारीरहे, उसे कफकी पीनस कहते हैं ॥ १४ ॥ जिसकी नाकसे रुधिर गिरै मस्तकमें और दोनों कनपटीनमें दर्द, नेत्र लाल, इन लक्षणोंसे रुधिरकी सरेकमां अर्थात् पीनस जाननी॥१५॥

सन्निपातकीपीनसकेलक्षण ।

श्वासपूतिवहोनाहः क्लेदो जंतुषु निर्दितः ॥ चिह्नैरेतैरसाध्योऽयं प्रतिश्यायस्त्रिदोषजः ॥ १६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे नासारोगलक्षणानि ।

अर्थ–जिसकी नाकसे वासयुक्त पवन निकलै, अनाहरोग हो, क्लेदयुक्त तथा क्रमिपडिजायँ, ऐसे लक्षणोंसे सन्निपातकी पीनस कहीहै ॥ १६ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिनीटीकायां नासारोगलक्षणानि ॥

अथ नेत्ररोगनिदानम् ।

नेत्ररोगोत्पत्तिः ।

शीर्षोपघाताद्विपतीक्ष्णसेवनान्नेत्रांतरेधूमरजोतिपातात्॥सूर्येक्षणात्सूक्ष्मनिरीक्षणान्मुहुर्दोषारुजं संजनयंति नेत्रयोः ॥ १ ॥शुक्राव-

रोधाद्युवतिप्रसंगाद्धातोर्विकाराज्ज्वलनस्यतापात् ॥नाडयादिमो-
क्षांद्बहुमैथुनाच्च नेत्रे रुजं संजनयंति दोपाः ॥ २ ॥

वातकेनेत्ररोगकेलक्षण।

विशुष्कता स्पंदनतातिरूक्षता प्रतोदता कर्कशताथ्यशुद्धता ॥
प्रधर्पतास्तंभनताश्रुपातान्नृणां च नेत्रे पवनात्मको भवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–शिरमें चोट लगनेसे विप अथवा तीखी वस्तुके सेवनसे, नेत्रोंमें धुंआ और धूलिके पडनेसे, सूर्य्यके सामने देखनेसे, छोटी वस्तुके देखनेसे, कुपितहुये जो वात, पित्त, कफ सो नेत्र रोगको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ धीर्यके रोकनेसे बहुत स्त्रीके संगसे, धातुके विकारसे, अग्निकेतापसे, फस्तखुडानेसे, बहुत मैथुनसे नेत्रमे तीनों दोप नेत्ररोग करते है ॥ २ ॥ नेत्रोंका सूखना, तथा फडकना, रूखापन, पीडा, कर्कशता, अशुद्धता, घिसासाहोना, स्तंभनता, आंसुओंका गिरना, ये लक्षण वातके नेत्ररोगमें होते हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेनेत्ररोगकेलक्षण।

उष्णोष्णवाष्पोरविणातितापः शूलारतिः पाडुरता शिरोऽर्त्तिः ॥
दाहोल्पपाको महती च पीडा नेत्रे भवेत्पित्तमये नराणाम् ॥ ४ ॥

कफकेनेत्ररोगकेलक्षण ।

तंद्रातिशोफो गुरुता शिरोर्तिर्दाहोल्पपाको महती च पीडा ॥
ऊष्माविशेपोग्निसमानदाहः स्रावोरतिः शूलमतीव पीडा ॥ ५ ॥

नेत्रमंथकेलक्षण ।

विवर्णता शोणितमाविपाको रक्तस्रवः स्यान्नयने नराणाम् ॥ नि-
र्मथ्यनेत्रेदधिमंथलक्षणैर्वायुस्ततो गच्छति मूर्ध्निविक्रमम् ॥६॥

अर्थ–सूर्य्यके घामसे गरमीहो, तथा गरमगरमपानी निकले, शूल और अरति पीलियाहो, शिरमें दर्दहो, दाहहो, थोडापके, पीडा ज्यादाहो, ये लक्षण पित्तके नेत्ररोगके हैं ॥ ४ ॥ तंद्रा, सूजन, मस्तक भारी, दाह, थोडापके, पीडा बहुत हो, गरमीबहुतहो, अग्निकेसमान दाहहो, अश्रुपात हो अरति, शूल ये कफके नेत्ररोगके लक्षणहै ॥ ५ ॥ जिसके नेत्रबुरेहो, पकजायँ, रुधिर गिरे, और दधिमंथलक्षणोंसे नेत्रोंको मथनकर पवन मस्तकमें प्राप्तहो ॥ ६ ॥

निपीड्यशीर्पं पुनरावृतस्ततो जानीहि तं पंडितनेत्रमंथनम्॥आया-
तियाति प्रकरोति वेदनां वातः प्रचंडो नयनांतरे भ्रुवोः ॥ ७ ॥

वातभ्रमणरोगकेलक्षण ।

शीर्षास्थिशंखन्त्वथ रक्तनेत्रे जानीहि वातभ्रमणं गदं तम् ॥ अवे दना कंडुविशुष्कतास्याल्लघुत्वमक्ष्णोश्च प्रसन्नमार्गः ॥ ८ ॥ मल-प्रवृत्तिर्बहुधानिशान्ते विपक्वदोषं प्रवदंति संतः ॥ पक्वोदुंबर-वत्स्निग्धो गरिष्ठःकंडुशोफवान् ॥ जलस्रावोऽल्पसंतोदो नेत्रपाकः कफोद्भवः ॥ ९ ॥

अर्थ—और मस्तकमें पीडाकर फेर छोटकर नेत्रमें प्राप्तहो, ऐसेही आवे और जाय और नेत्रमें तथा भ्रुकुटीमें पीडाकरै, उसे पंडितोंने नेत्रमंथ रोग कहाहै ॥ ७ ॥ मस्तककी हड्डीमें कनपटीमें मांसमें पीडाहो तथानेत्र लालहो, उसे वातभ्रमणरोग कहाहै, नेत्रपाकके लक्षण पीडारहित तथा खुजली न चलै तथा अश्रुपात रहितहो और नेत्रोंमें हल्कापनहो तथा नेत्रोंका मार्गस्वच्छहो ॥८॥ विशेप कीचडका आना रात्रीके अंतमेंहो, तब जानना कि दोपपाकहुआ पके गूलरके समान तथा चिकने और भारी तथा खुजली और सूजनयुक्त जल बहे थोडीपीडाहो इसको कफसे प्रगट नेत्रपाकजानना ॥ ९ ॥

शिरपाकनेत्रकेलक्षण ।

नेत्रे समर्थे परिवीक्षितुं दिशः स्फोटो ललाटे बहुवेदनान्वितः ॥ शूलश्च दाहोग्निसमो भ्रमो भवेद्रोगोभिषग्भिः शिरपाकईरितः ॥ १० ॥ आच्छाद्यदृष्टिं नयने विनिर्गतं शुक्रं सिताभं परिवर्द्धते निशम् ॥ सूच्याप्रविद्धं खलुनाशमेति नोचेद्बुधाः शुक्रव्रणं वदन्ति ॥११॥ नेत्रांतरे कज्जलिमासमीपेशुक्रद्वयं सूक्ष्मतरं चिरोत्थम् ॥ मुक्तावभासं गततोदपाकं तत्कष्टसाध्यं मुनयो वदन्ति ॥ १२ ॥

अर्थ—नेत्र चारों ओर देखनेको असमर्थहों, बहुतपीडा और शूलयुक्त ललाटमें फूटनहो, अग्निके समान दाहहो, भ्रमहो, उसे वैद्योंने शिरपाक रोग कहाहै ॥ १० ॥ जिसके नेत्रमें शुक्रकी बूंद आय जावे उससे कुछ न दीखे, और वो दिनदिनमें बढे उसे शुक्रव्रण कहते हैं और सुईकेसे चभकाचलें ॥ ११ ॥ जिसके नेत्रकी काली जगेपर छोटी छोटी दोबूंद मोतीके समान बहुत कालकी प्रगटभई हो, और उनमें पीडा न होतीहो और न पके उसे मोतियाबिंदु कष्टसाध्य मुनि कहते हैं ॥ १३ ॥

असाध्यमोतियाबिंदुकेलक्षण ।

शुक्रद्वयं वा त्रितयं चतुष्टयं निर्वेदनं नेत्रगतं विपाकम् ॥ विहाय सीचाभ्रदलावभासं स्यादप्यसाध्यं निविडं चिरोत्थम्॥१३॥ दोषत्रयोत्थं नयनांतरस्थं नीलावभासं निविडं विसर्प्पम् ॥ स्निग्धं दृढं दृष्टिपथावरोधं स्पंदात्मकं शुक्रमसाध्यमाहुः ॥ १४ ॥ नेत्रांतरस्थं रुधिरावभासं मांसोत्थितं स्थूलदलं विशालम्॥विच्छिन्नमध्यं परि चंचलं च शुक्रं भिषग्भिस्तदसाध्यमुक्तम् ॥ १५ ॥

अर्थ–जिसके नेत्रमें दो वा तीन वा चार बूंद बचिहों, उनमें पीडाहो, और पकजावे, और वो बद्दल वा आकाशके रंगकी बूंदहों मिलीमई तथा बहुत दिनकी ये असाध्यहै ॥ १३ ॥ जो तीनों दोषोंसे उठी होय और नीले रगकी मिलीहुई किंचित् चलायमान चिकनी और दृष्टिको रोकदे ऐसी शुक्रकी बूंदभी असाध्यहै ॥१४॥ नेत्रमें रुधिरके रंगकी शुक्रकी बूंदहो और वो मोटी तथा लंबी हो, विच्छिन्न मध्यहो और चंचलहो ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ॥ १५ ॥

एकं द्वयं वात्रितयं चतुष्टयं संछाद्यनेत्रं परिवर्द्धतेनिशम् ॥ शोफोष्णबाष्पो रविपाकसाधनं शुक्रं विदग्धं तदसाध्यमादिशेत् ॥१६॥

इति नेत्रशुक्लक्षणानि ।

नेत्रकेप्रथमपटलकेलक्षण ।

आवृत्यनेत्रे पटले व्यवस्थिते व्यक्तानि रूपाणि नरः प्रपश्येत् ॥

नेत्रद्वितीयपटलकेलक्षण ।

एवं द्वितीये पटलेऽक्षिसंस्थे सूचीमुखं दृष्टिगतं न पश्यति॥१७॥

नेत्रतृतीयपटलकेलक्षणं ।

नेत्रांतरस्थे पटले तृतीये दृष्टिर्भृशं विह्वलतां समेति ॥ आभांसमात्रं खलुपश्यतीह साध्यं शिशुत्वे खलुनान्यत्रस्थम् ॥१८॥

अर्थ–एक दो तीन चार बूंद नेत्रमेंहों, और नेत्रकी दृष्टिको ढकदेवे, और नित्य वढै तथा सूजन गर्मी अश्रुपातका पडना ये शुक्रविदग्धके लक्षणहैं, येभी असाध्यहैं ॥ १६ ॥ इतने रोग नेत्रके शुक्रभागमें होते है, नेत्रके प्रथम पटलमें दोषोंके पहुंचनेसे मनुष्यको यथार्थ न दीखे, ऐसेही नेत्रके दूसरे पटलमें दोष पहुंचनेसे सुईका तथा मक्खी मच्छर वालकाभी समूह नहीं दीखे ॥१७॥ नेत्रके तीसरे पटलमें दोष पहुंचनेसे दृष्टी विह्वल होजाय, कुछ कुछ झांई माद्धमहो, ये बाल अवस्थामें साध्यहै औरमें नहीं ॥ १८ ॥

नेत्रचतुर्थपटलकेलक्षण ।

यस्यावरुद्धे पटलेन नेत्रे दृष्ट्या न पश्येत्सनरोर्कबिम्बम् ॥
विद्युल्लतां चन्द्रमसं सतारं तत्काचसंज्ञं पटलं चतुर्थम् ॥ १९ ॥

वातकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

दृष्ट्या महत्या पटलेन रुद्धया समीरणोत्थेन विकारकारिणा॥रूपाणि सर्व्वाण्यरुणानिमानवाःपश्यंति पीतप्रभया विदग्धया ॥२०॥

पित्तकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

पटलेनावृता दृष्टिः पित्तकोपोत्थितेन सा ॥ नीलानि सर्ववर्णानि परिपश्यति सम्भ्रमम् ॥ २१ ॥

अर्थ–नेत्रके चतुर्थ पटलमें दोष पहुंचनेसे मनुष्यको सूर्य्य चंद्र और बिजली और तारागण ये न दीखे, वो कांचसंज्ञक और इसीको लिंगनाशक और नजला तथा मोतिया बिंदभी कहते है ॥ १९ ॥ जिसकी दृष्टि वादीके विकारसे आच्छादितहो, उसे लालरंग पीला दीखे ॥ २० ॥ जिसकी दृष्टी पित्तके कोपसे ढकीहो उसे भ्रमसे सब रंग नीलेदीखें ॥ २१ ॥

कफकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

आच्छादिताया पटलैः कफोत्थैर्दृष्टिः सिताभैरिवसूर्यमभ्रैः ॥ नेत्रांतरस्थैः परितो विपश्येत् सर्वाणि रूपाणि सितप्रभानि॥२२॥ दृष्टेरूर्ध्वस्थिते दोषे न पश्येदूर्ध्वसंस्थितान् ॥ दृष्टेरधः स्थिते दोषे नरोधस्थान्न पश्यति ॥ २३ ॥ दृष्टेः पार्श्वे स्थिते दोषे पार्श्वस्थान्नैव पश्यति ॥ दृष्टेर्मध्यगते दोषे यदेकं मन्यते द्विधा ॥ २४ ॥

अर्थ–कफके विकारसे पटल जिसकी दृष्टिरोकदे उसको सूर्य्य और आकाश तथा सब रंग सपेददीखे॥२२॥ दृष्टीके ऊर्ध्वभागमें दोष स्थित होय तो ऊपरकी वस्तु न दीखे,और नीचेके भागमें दोषहो तो नीचेकी कोई वस्तु न दीखे ॥ २३ ॥ और दृष्टीके पृष्ठभागमें दोष हो तो पृष्ठस्थितको नहीं देखे, तथा दृष्टीके मध्यमें दोष होयतो एक वस्तुको दो दीखै ॥ २४ ॥

रक्तविन्दुर्भवेन्नेत्रे चंचलः परुषो निलात्॥ पित्तात्पीतं तथा नीलं स्निग्धः पांडुः सितः कफात् ॥ २५ ॥ यः सर्वधूम्राणि नरो विपश्येत्सधूम्रदर्शी मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ यश्चित्ररूपाणि दिवा मन-

इयेत् स वै मनुष्यो नकुलांधसंज्ञः ॥ २६ ॥ संकुच्याभ्यंतरे याति दृष्टिमाहुःकपार्दिकाम्॥वाह्यमायातिसंवृत्यगम्भीरंतंविदुर्बुधा२७॥

अर्थ–वादीसे मनुष्यके नेत्र चञ्चल और लालबिन्दु युक्तहों, और पित्तसे पीले तथा नीले, और कफसे चिकने और सपेद तथा पांडुरंगके होतेहैं ॥ २५ ॥ जिस मनुष्यको सब वस्तु धुएंके रंगकी दीखें, उसे धूम्रदर्शी मुनियोंने कहाहै, और रातमें जिसको चित्रविचित्र रंगको दीखे उसे नकुलांध अर्थात् रतौंधका रोग कहाहै ॥ २६ ॥ जिस मनुष्यकी दृष्टी दर्पणकी संकोचको प्राप्तहो जब दर्पण हट जावे तब यथार्थ होजावे उसे गंभीररोग वैद्य कहते हैं ॥ २७ ॥

नेत्रसंधौ स्थितः शोफः पक्वं पूयं स्रवेत्तु यः ॥ पूतिसांद्रं सरक्तं वा पूयलाख्यं विदुर्बुधाः ॥ २८ ॥ संधौ बृहद्ग्रन्थिमहारपाकी नीरुजो दृढः ॥ उपनाहः सविज्ञेयो गदज्ञैः कंडुरोगदः ॥ २९ ॥ नेत्रसंधौ समुत्पन्ना पिडिका शोणितोद्भवा ॥ रक्तमुष्णं स्रवेन्नित्यमसाध्या रुक् प्रकीर्तिता ॥ ३० ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके नेत्रकी संधीमे सूजनहो और वो पकजावें तथा स्रवै और वास युक्त तथा रुधिर स्रवै उसे पूयलाख्य रोग वैद्य कहते हैं ॥ २८ ॥ जिस मनुष्यके संधीमें बडी गांठहो और वह पके नहीं न पीडा करे दृढहो खुजली चले उसे वैद्योंने उपनाह रोग कहाहै ॥ २९ ॥ नेत्रकी संधीमें रुधिरसे फुंसी पैदा हों उनसे रुधिरस्रवै वो असाध्य कहिये ॥ ३० ॥

उद्धृत्य वर्त्म रोगाणि जायंतेऽभ्यंतरे मुहुः ॥ रुन्धंति गोलके नेत्रे परिवाराणि तानि वै ॥ ३१ ॥ संधौपक्ष्माणि मांसाभाकंडूशोफसमन्विता ॥ चिसुचिमांबुयुता वैद्यैर्वाह्मणी सानिगद्यते ॥ ३२ ॥ अक्ष्णोर्वर्त्मनि सम्भवाश्च पिडिकाः सूक्ष्माघनाः संवृताः पीताभा बहुवेदना खरतरा ज्ञेयाश्च वातोद्भवाः ॥ पित्तोत्थाः पिटिकाःखरा नयनयोरभ्यन्तरे संस्थितादुःस्पर्शावहुदाहशूलसहिताः स्रावान्विताः कण्डुराः ॥ ३३ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके कोयेके वाल उखडकर भीतर चलेजायँ और नेत्रके गोलको रोकदे उसे परवाल कहते हैं ॥ ३१ ॥ संधीके पखवारोंमें मांसके आकार फुंसीहो उसमें खुजली और सूजन तथा चिमचिमी युक्तहो जल स्रवै उसे ब्राह्मणी रोग कहते हैं ॥ ३२ ॥ नेत्रके मार्गमें जो फुंसीहो वह छोटीकरडी गोल पीली पीडायुक्त खरदरीहो सो वातकी जाननी और खरदरी तथा नेत्रके भीतरहो स्पर्श सहाजाय दाहशूल और स्रवै तथा खुजली चले वो पित्तकी फुंसी जाननी ॥ ३३ ॥

अक्ष्णोर्वर्त्मनि जायन्ते पिटिकाः कफसम्भवाः ॥ स्थूलामांसांकुरा क्लिन्नाः कंडूशोफार्तिपाकिनः ॥ ३४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे नेत्ररोगलक्षणानि

अर्थ—तथा मोटी मांसके अंकुरयुक्त गीली खुजलीयुत सूजन पीडा और पकजावे, यो कफकी भरोडी जाननी ॥ ३४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां नेत्ररोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अथमस्तकरोगलक्षणम् ।

अत्यम्लसेवाच्छिरसोभिघाताद्भूमौशयानाज्जलमध्यपातात् ॥ रात्रौ दिवाजागरणाच्च शीताद्वातादिदोषाः प्रभवन्ति शीर्षे ॥ ३५ ॥

वातपित्तकेमस्तकरोगकानिदान

शीतेन शीर्षे निशि वातपीडा क्वचिद्दिवापि प्रभवेत्सशूला ॥ तापेन पित्तप्रभावातितीव्रा ज्वालान्विता शूलवती सशोषा ॥३६॥

कफकेमस्तकरोगकेलक्षण ।

शीर्षे गुरुत्वञ्च कफेन पीडा स्यादालसत्वं मुहुरश्रुपातः ॥ निद्राव-मित्वं मुखनासिकाभ्यां स्रावो विपाकः सशिरोभिघातः ॥ ३७ ॥

अर्थ—अत्यन्त खटाई खानेसे, शिरमें चोट लगनेसे, पृथ्वीपर सोनेसे, जलमें गिरनेसे, रातदिन जागनेसे, शरदीसे, कुपित हुये जो वात, पित्त, कफ सो मस्तकरोग पैदा करतेहैं ॥ ३५ ॥ वादीसे मस्तकमें रातको दर्दहो, कभी दिनमेंभी शूल चलै, पित्तसे पित्तजनितहो अत्यन्त तीव्र ज्वाला और शोषयुक्त पीडाहो ॥ ३६ ॥ शिरभारी, आलस्य, अश्रुपातका पडना, निद्रा, वमन, मुखनाकका स्राव तथा पाक और पीडा ये कफके दोषसे होताहै ॥ ३७ ॥

रुधिरकेमस्तकरोगकेलक्षण ।

शीर्षेतिदाहो महती च पीडा नासामुखाभ्यां बहुरक्तपातः ॥ भवेद्भ्रमो धूमवती च नासा रक्तप्रकोपेन शिरोभिघातः ॥ ३८ ॥ दोषेषु सर्वेषु शिरोगतेषु लिंगानि सर्वाणि भवन्ति शीर्षे ॥ कासप्र-वृत्तिश्चिरकालपाकः प्रोक्तो भिषग्भिः शिरसोभिघातः ॥ ३९ ॥

कृमिकेमस्तकरोगकेलक्षण ।

निर्भिद्यते जंतुभिरुग्रतुंडैः संतुद्यते यस्य शिरो नितान्तम् ॥ घ्राणात्स्रवेच्छोणितमुग्रवेदना शिरोभिघातः कृमिभिर्भवेत्सः ॥४०॥

अर्थ–शिरमें दाह, घोर पीडा, नाक और मुखसे रुधिर गिरे, भ्रम तथा नाकसे धूम निकले. ये रुधिरसे मस्तकरोग जानना ॥ ३८ ॥ सन्निपातके मस्तकरोगमें त्रिदोषके चिह्न मिलतेहों तथा खांसी और देहमें पके वो वैद्योंने सन्निपातका कहा है ॥ ३९ ॥ जिसके शिरमें कृमि पडजावें, उसके शिरमें घोर पीडाहो, नाकसे रुधिर पडे, वो कृमिका मस्तकरोग कहाहै ॥ ४० ॥

आधाशीशीकालक्षण ।

भानूदयेऽर्द्धे शिरसि प्रपीडा संवर्द्धते चांशुमता सहैव ॥ निवर्त्तते शीतकरोदये या सूर्यात्प्रवृत्तं तमवेहि वैद्यः॥ ४१ ॥ कफयुक्पवनः शीर्षे करोति विविधान् गदान् ॥ शिरोभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटे तीव्रवेदनाम् ॥ ४२ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे शीर्षरोगलक्षणम् ॥

अर्थ–जिसका सूर्योदयसे आधा मस्तक क्रमसे दुखने लगे, जब सूर्यास्त हो और चन्द्रमा उदयहो तब दर्दभी बंद होजाय, उसे आधाशीशी कहते हैं ॥ ४१ ॥ कफयुक्त पवन शिरमें अनेक रोग पैदा करे, और शिर कनपटी भृकुटी, कान, नेत्र, ललाट इनमें घोर पीडा होय ॥ ४२ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामकृतहंसराजार्थबोधिनीटीकायां शीर्षरोगनिदानं समाप्तिमगमत् ॥

अथस्त्रीरोगलक्षणम् ।

प्रदररोगकीउत्पत्ति ।

आयासतः कुत्सितयानरोहाच्छोकाद्विरुद्धाशनतः प्रपातात् ॥ अत्यंतभारोद्वहनादजीर्णात्स्याद्गर्भपातात् प्रदरोतिमैथुनात् ॥१॥ योनिं विदीर्यसंजातं शोणितं सर्व्वदा स्त्रियाः ॥ प्रदरन्तं विजानीहिवातपित्तकफोद्भवम् ॥ २ ॥ प्रवृत्ते प्रदरे नित्यं पाण्डुत्वं जायते स्त्रियाः ॥ मूर्च्छा भ्रमस्तृषादाहः प्रलापः कृशता रुचिः ॥ ३ ॥

अर्थ–परिश्रमसे, खोटी सवारीमें बैठनेसे, शोकसे, खोटे भोजनेसे गिरपडनेसे भारी बोझ उठानेसे, अजीर्णसे, गर्भके पडनेसे, अतिमैथुनसे, प्रदरनाम स्त्रियोंके रोग होताहै ॥ १ ॥ योनिको

विदीर्ण कर जो रुधिर सदा पडे उसे वातका, पित्तका, कफका, प्रदर रोग जानो ॥ २ ॥ प्रदर रोग पैदा होनेसे स्त्रीका वर्ण पीला होजाय, और मूर्च्छा भ्रम, प्यास, दाह, बडबडाना, कृशता, अरुचि ये रोग होते हैं ॥ ३ ॥

वातपित्तकेप्रदररोगकेलक्षण।

योनिः स्रवेच्छोणितमल्पमल्पं श्यावं सकष्टं पवनात्मकं तत् ॥
पित्तोत्थितं सामिषरक्तमुष्णं दाहार्त्तिशूलभ्रमकम्पकारी ॥ ४ ॥

कफकेप्रदररोगकेलक्षण।

योनिक्षतोत्थं रुधिरञ्च फेनिलं पीतारुणं स्निग्धतरञ्च पिच्छिलम्॥
शैथिल्यकंडूकृमिशोथशीतकृज्जानीहि तं त्वं प्रदरं कफोद्भवम् ॥५॥

सन्निपातकेप्रदरकालक्षण।

दोषत्रयोत्थे प्रदरे युवत्याः सर्वाणि लिंगानि भवन्ति काये ॥
उच्छ्वास शूलारतिपूतियुक्ते तस्मिन्न कुर्वीत भिषक्चिकित्साम्॥६॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
प्रदरलक्षणम्।

अर्थ—जिस स्त्रीकी योनिसे कालेरंगका रुधिर कष्टसे थोडाथोडा निकले, उसे वादीका जानो और मांसयुक्त, गरम, और दाहयुक्त, रुधिर निकले तथा शूल भ्रम कंपसे पित्तका जानना ॥ ४ ॥ योनिमेंसे रुधिर झाग मिला, चिकना, पीला, गाढा, लाल, निकले और खुजली, कृमी, शिथिलता, सूजन, शीतलता युक्तहो, उसे कफका प्रदर रोग जानना ॥ ५ ॥ सन्निपातके प्रदरमें त्रिदोषके चिह्न होते हैं, तथा श्वास, शूल, अरति, दुर्गंध युक्त ऐसे प्रदरकी वैद्य चिकित्सा न करै॥६॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां प्रदररोगस्समाप्तः ॥

अथयोनिकन्दकेलक्षण।

उच्चैः प्रपातान्नखदन्तघाताद्ध्वश्रमात्कुत्सितवीर्य्ययोगात् ॥
कुयानरोहादतिमैथुनाद्वा योनौ भवेत्कंदकसंज्ञकारुक् ॥७॥ योनौ
संजायते कन्दं लकुचाकृतिपूययुक् ॥ विवर्णस्फुटितं रूक्षं वातक-
न्तंविदुर्बुधाः ॥ ८ ॥

पित्तकेयोनिकन्दकेलक्षण।

रक्ताक्तं योनिसम्भूतं चिञ्चिणीबीजसन्निभम्॥ज्वरदाहान्वितं पैत्तं
योनिकंदं तमादिशेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–ऊंचे स्थानके गिरनेसे नखदांतके घातसे, रस्ता चलनेसे, खोटावीर्य्य पडनेसे, खोटी सवारीमें बैठनेसे, अति मैथुनसे, योनिमें कंदसंज्ञक रोग होताहै ॥ ७ ॥ योनिमें बडहलके समान कंदहो उसमेंसे राध निकले, और विवर्ण तथा फूटा, रूखा हो, उसे वातका योनिकंद कहते हैं ॥ ८ ॥ जिसमेंसे रुधिर निकले और वह इमलीके बीजके समानहो तथा ज्वर, दाह, युक्तहो, उसको पित्तका योनि कंद कहते हैं ॥ ९ ॥

कफकेयोनिकन्दकेलक्षण ।

तिलपुष्पसमंस्निग्धं योनिमध्योद्भवं दृढम्॥कंडूशोफान्वितं क्लिन्नं योनिकंदं कफात्मकम् ॥ १० ॥

सन्निपातकेयोनिकंदकेलक्षण ।

सन्निपातोत्थितं रौद्रं सर्व्वलिंगसमन्वितम्॥योनिकंदं भिषक्तस्य चिकित्सां नैवकारयेत् ॥ ११ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे योनिकंदलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ–जो तिलके फूलके समान चिकना और दृढ कंदहो तथा खुजली और सूजन तथा गीलाहो, उसे कफका योनिकंद कहते हैं ॥ १० ॥ जिसमें सन्निपातके सब लक्षण मिलतेहों, उसे घोर सन्निपातका जानकर वैद्य इलाज न करे ॥ ११ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां योनिकंदलक्षणं समाप्तम् ॥

अथयोनिकेद्वादशरोगकेलक्षण ।

योनौ द्वादशदोषाः स्युः प्रोक्ता वैद्यैः पृथक्पृथक्॥केचिन्नैसर्गिकाः केचिद्दोषजाः वीर्य्यदोषजाः॥१॥आच्छिद्रा या भवेद्योनिः षंढाख्या साभिधीयते॥सूक्ष्मच्छिद्रा तु या सूचीमुखा सा कथ्यते बुधैः॥२॥ विवृत्तास्या महास्थूला महायोनिः प्रकीर्त्तिता॥ रजो वातहतं यस्या असौख्या सोच्यतेबुधैः ॥ ३ ॥

अर्थ–योनिमें बारह दोष पृथक् पृथक् वैद्योंने कहे हैं, कोई तो नैसर्गिक कोई दोषोंसे और कोई वीर्य्यके दोषसे ॥१॥ जिसकी योनिमें छिद्र नहो उसे षंढाख्ययोनि कहतेहैं, और जिसमें छोटा छिद्रहो उसे सूचीमुख योनि कहते हैं ॥ २ ॥ जो गोल मुखकी और मोटी हो उसे महायोनि कहते हैं,और जिसका रजोदर्श वातसे चलागया हो उसे असौख्ययोनि कहते हैं ॥ ३ ॥

वातकीयोनिकेलक्षण ।

ह्रस्वातिरूक्षाकृशताल्पपुष्पाश्यामा विवर्णास्फुटिताविशुष्का ॥
वक्राल्परोमापरुपासरोगा योनिर्बुधैर्वातवती निरुक्ता ॥ ४ ॥

पित्तकीयोनिकेलक्षण ।

ऊष्मान्विता कामवती विशाला लाक्षारसाभा परिपूर्णमांसा ॥
नीरोगता गर्भवती विशुद्धा योनिर्बुधैः पित्तवती निरुक्ता ॥ ५ ॥

कफकीयोनिकेलक्षण ।

स्थूला सदार्द्रा बहुकंडुरा सा कामान्विता दीर्घमुखी मनोज्ञा ॥
रोमाधिका स्निग्धतरातिशीता योनिर्निरुक्ता कफयुग्भिषग्भिः॥६॥

अर्थ–जो योनि छोटी, और रूखी, कृश, अल्पपुष्पकी, काली, श्याम वर्णकी, फटी हुई, शुष्क, मुखपर थोडे बालहों, कठोर, रोग युक्त, ये वातकी योनिके लक्षण हैं ॥ ४ ॥ गरमी युक्त, कामवती, बडी, लाखके रंगकीसी पूर्णमांस युक्त, निरोग गर्भवान्, शुद्ध हो, ये पित्तकी योनिके लक्षणहैं ॥ ५ ॥ मोटी, सदागीली रहै, बहुत खुजली युक्त, कामयुक्त, दीर्घमुखकी, सुंदर, बहुत रोमयुक्त; चिकनी, शीतल ये कफकी योनिके लक्षणहैं ॥ ६ ॥

वातेन यस्या निहतं च पुष्पं तस्याः फलं नैव भवेत्कदाचित् ॥
योन्यंतरस्थेन महाबलेन हृन्नाभिकट्यांतरदुःखवेदनाम् ॥ ७ ॥
पित्तेन दग्धं कुसुमं विशुद्धं शुक्रेण मिश्रम्बहिरुद्गिरेद्या ॥ नात्यूष्मणाधारयितुं समर्था प्रस्रंसिनी योनिरुदाहृता सा ॥ ८ ॥

विप्लुताकेलक्षण ।

रतिक्रीडारुचिर्यस्याः परितो या प्लुताभवेत् ॥ नित्यवेदनयायुक्ता विप्लुता सा प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥

अर्थ–योनिमें बलवान वात पुष्पको नाश करदे तब सन्तान नहीं हो, और हृदय, नाभी,कमर इनमें पीडा हो ॥ ७ ॥ जिसका पुष्प पित्तदग्ध करदे और शुक्रयुक्त रजको बाहर निकालदे और पित्तकी गर्मीसे गर्भ न रहे, उसे प्रस्रंसिनी योनि कहीहै ॥८॥ रति क्रीडाके आनंदसे जिसकी योनि आर्द्र रहै, और नित्य पीडाहो उसे विप्लुता योनि कहते हैं ॥९॥

पूतिगंधयोनिकेलक्षण ।

संनिपातान्वितायोनिर्दुर्गंधंवहतेऽनिशम् ॥ शूलदाहार्त्तियुक्ता सा पूतिगंधिर्विधीयते ॥ १० ॥

वन्ध्यायोनिकेलक्षण ।

पित्तानिलाभ्यांपरिकोपिताभ्यांसंपीडिता कृच्छ्रतरेण योनिः ॥ कृष्णं रजोमुंचति फेनिलं या वंध्यामुनींद्रैः परिकीर्त्तिता सा॥११॥

खंडितायोनिकेलक्षण ।

योनेरभ्यंतरे वाह्ये खरस्पर्शातु मैथुने ॥ न गृह्णाति सदावीर्य खंडिनी साभिधीयते ॥ १२ ॥

अर्थ—सन्निपातसे योनिमें दुर्गंध आवे, तथा शूल दाहभीहो उसे पूतिगंध योनि कहते हैं॥१०॥ जिसकी योनि वात पित्तके कोपसे परिपीडितहो और जिसकी योनिसे काला और झाग युक्त रुधिर निकले उसे ऋषि वंध्यायोनि कहते हैं ॥ ११ ॥ योनिके वाहर और भीतर मैथुनके समय, खर्दरास्पर्श मालूम पडे और वीर्यका जो ग्रहण न करै उसे खंडिता योनि कहते हैं ॥ १२ ॥

पिडिकाचितसर्वांगी मणिनांतरवाह्ययोः ॥ सा योनिरुपदंशेनमूत्र फेनरुजार्दिता ॥ १३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य-
शास्त्रे योनिरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—योनिके वाहर भीतर फुंसीहों वो योनि उपदंशरोगकरके व्याप्त जाननी ॥ १३ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां योनिरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अथप्रसूतिकारोगकालक्षण ।

उच्चैः प्रपाताद्दृढमैथुनाद्वातीक्ष्णोष्णदुष्टौषधिसेवनाद्वा ॥ दंडाभिघाताद्बहुवेदनाद्वागर्भच्युतिः स्याद्भयतः श्रमाद्वा ॥ १४ ॥ स्रावोमासाच्चतुर्थात्प्राक्पातः पंचमषष्ठयोः ॥ मासयोर्भवति स्त्रीणां प्रसूतिस्तदनंतरम् ॥ १५ ॥ प्रसूतिसमये वायुः स्त्रियाः कुक्षिगतो यदि ॥ निरुध्य शोणितस्रावं करोति वहुवेदनाम् ॥ १६ ॥

अर्थ—उचस्थानके गिरनेसे दृढमैथुनसे तीखी गरम दुष्ट औषधके खानेसे दंड आदिकी चोट लगनेसे वहुत पीडासे भयसे श्रमसे गर्भपात होताहै ॥ १४ ॥ चारमहीनासे पूर्व गर्भ गिरे उसे स्राव कहते हैं, और पांचवें छठे महीनामें पात कहाता है, इसके अनंतर अर्थात् सातवें महीनासे उपरान्त प्रसूति कहते हैं ॥ १५ ॥ प्रसूति समयमें पवन स्त्रीकी कूखमें प्राप्तहो रुकजावे वह रुधिरको निकाले तथा पीडाकरे ॥ १६ ॥

बालेपृथिव्यांपतितेतदानिशं संरक्षणीयामरुतः प्रसूता ॥ यस्याः शरीरेपवनेप्रविष्टेनूनंभवेद्रोगवती सदा सा ॥ १७ ॥ हृत्कुक्षिशूलं गुरुता शरीरे कंपः पिपासा कटिबस्तिपीडा ॥ दाहोंगमर्दोल्परुचिः प्रलापः शोथः कृशत्वं प्रदरोतिसारः ॥ १८ ॥ निद्रालसत्वंबहु पांडुतांगे शीतं शिरोर्त्तिर्भ्रमताविशुद्धिः ॥ तापोप्यनाहोबलता- तिकासः स्यात्सूतिकायाः परिरोगचिह्नम् ॥ १९ ॥

अर्थ--जिस समय बालक पृथ्वीमें गिरै उसी समय प्रसूतास्त्रीकी पवनसे रक्षा करनी कदाचित् पवन स्त्रीके लगजाय तो निश्चय प्रसूतिका रोग पैदाहोय ॥ १७॥ जिस स्त्रीके प्रसूति रोगहैं उसके ये रोगहों हृदय कूख इनमें शूलहो शरीर भारी कंप प्यास कमर और मूत्रस्थानमें पीडा दाह अंगोंका टूटना अल्प रुचि प्रलाप सूजन कृशता प्रदर अतीसार॥ १८॥निद्रा आलकस पीलिया शरदी मस्तकमें दर्द भ्रम भ्रष्टता ज्वर अनाह दुर्बलता खांसी इतनेरोग प्रसूतिसे होतेहैं ॥ १९ ॥

प्रसूतिरोगकेउपद्रव

अतीसारोज्वरः शूलं बलहानिः शिरोव्यथा ॥ शोफोनाहोतिदाहो- ष्टौसूतिकायामुपद्रवाः ॥ २० ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रे प्रसूतिकारोगलक्षणानि ॥

१ अतीसार २ ज्वर, ३ शूल, ४ बलहानि, ५ मस्तकमें दर्द, ६ शोथ, ७ अनाह, ८ दाह, ये प्रसूतिके आठ उपद्रव हैं ॥ २० ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिनीटीकायां सूतिकारोगास्समाप्ताः ॥

अथबालरोगलक्षणम् ।

वातलदुग्धकेगुण ।

स्तन्यं दुग्धं वातलं तोयतुल्यं रूक्षं गौरं तुच्छसारं कषायम् ॥ बालोनित्यं तं पिबेत् स्यात्कृशांगः शब्दक्षामो बद्धविण्मूत्रवातः१

पित्त युक्त दुग्धके गुण ।

सक्षारमुष्णं कटुपित्तदूषितं बालोल्पसारः कुचजं पयः पिबन् ॥ तृष्णालुरूक्षावयवः सपैत्तिकः खिन्नो भवेद्भिन्नमलःसकामलः२॥

कफदूषित दुग्धके गुण ।

दुग्धं श्लेष्मविदूषितं कुचभवं स्निग्धं घनं पिच्छिलं यो बालः प्रतिवासरं परिपिबन् स्थूलोदरो जायते ॥ लालाढ्यः कफरोगवान् वैलयुतो निद्रावृतश्छर्दिमाञ्शून्यान्तःकरणोल्पघूर्णनयनः कंड्वादिरोगान्वितः ॥ ३ ॥

अर्थ--स्तनका दूध जलके समानहो रूखा तथा भारी वलरहितहो कसैला हो वो वातदूषित दुग्ध है,उसे बालक जो पीवे तो कृशांगहो मन्द शब्द तथा मल मूत्र कमउतरे॥१॥जो खारा गरम तथा कडुआ हो वो पित्त दूषित दुग्ध है, उसे जो बालक पीवे तो बलहीन हो तृष्णाढ्य रूखा देह पित्तप्रकृति वाला दस्त बहुतहो पीलिया युक्तहो तथा खिन्नहो॥२॥जो कुचका दूध कफसे दूषितहो तो चिकना गाढा मलाईदार होताहै, जो बालक ऐसे दूधको पीवे उसका वडा पेटहोजाय लार बहै कफ रोगसे ग्रसितरहे, बल युक्त नींद बहुत आवै उलटी करे शून्य अंतःकरण कुछ टेढे नेत्र खुजली आदिरोग करके युक्त रहै ॥ ३ ॥

दोषरहितदुग्धकीपरीक्षा ।

जले स्तन्यं परिक्षिप्तमेकीभूतं च पांडुरम् ॥ मधुरं स्वादुतद्दुग्धं निर्दोषं तद्विदुर्बुधाः ॥ ४ ॥ निर्दोषजं पयः पीत्वा नीरोगो बालको भवेत् ॥ बलवीर्यान्वितो धीरो बहु शक्तिसमन्वितः॥५॥ शिशोरंगपीडां च तीव्रामतीव्रां बुधो रोदनाल्लक्षयेदंगदेशे ॥ तनोः स्पर्शनाच्छ्रोतसां दर्शनाद्वा विदित्वा रुजं कारयेद्वै चिकित्साम् ॥ ६ ॥

अर्थ--जो दूध जलमें मिलानेसे पीला होजावे, तथा मीठा स्वादयुक्त हो, उसे निर्दोष दूध जानना ॥ ४ ॥ जो बालक दोषहीन दूध पीताहै वह बलवीर्य धीरता शक्तिमान होताहै ॥ ५ ॥ वैद्य बालककी अंग पीडा रोनेसे तथा शरीरके स्पर्शसे वा नेत्रोंके देखनेसे जानकर फिर इलाज करे॥६॥

मातुः स्तन्यविकारेण बालानां नेत्रवर्त्मनि ॥ जायते कुकूणं तेन नेत्रयोः कंडुरं भवेत् ॥ ७ ॥ कुकूणेनोरुजातेन सूर्याभां परिवीक्षितुम् ॥ न समर्थो भवेद्बालो नेत्रोन्मीलितुमक्षमः॥ ८ ॥

पारिगर्भिककेलक्षण ।

भवेद्बालको गुर्विणीदुग्धपानाद्भ्रमश्वासनिद्रान्वितो वह्निसादः ॥ कृशांगोतिकासोरुचिर्दंतपातस्तमाहुर्बुधागार्भिकं कोष्ठबंधम् ॥९॥

अर्थ—माताके स्तनविकारसे बालकके नेत्रोंमें कुकुण रोग हो, उससे नेत्रोंमें खुजली चलतीहै॥७॥ जब बालकके कुकुण रोग होजाताहै वो सूर्यके देखनेको समर्थ नहीं, हो और नेत्रमिचेभी नहीं॥८॥ गार्भिणी माताके दुग्धपानसे बालकको भ्रम, श्वास, निद्रा, अग्निमंद, कृशांग, अतिखांसी, अरुचि, दंतपात, ये होते हैं, इसे वैद्य गर्भिककोष्ठबंध वा पारिगर्भिक कहते हैं ॥ ९ ॥

तालुकंठरोगकेलक्षण।

शिशोस्तात्वामिषे श्लेष्मवातयुक्तालुकंटकम्॥कुर्यात्तेन रुजामूर्ध्नि भवेत्तालुनि निम्नता ॥ १० ॥ तालुपाकस्त्रिदोषोत्थः सर्वांगेषु विसर्पति ॥ असाध्योयं बुधैरुक्तोयंत्रमंत्रैश्चसाधयेत् ॥ ११ ॥ क्षुद्र रोगे च कथिते ह्यजगल्ल्यहिपूतने॥ज्वराद्या व्याधयः सर्वे महतां- येपुरोगताः ॥ बालदेहेपि ते तद्वज्जानीयात्कुशलो भिषक्॥

सामान्यग्रहयुक्तबालककेलक्षण।

ग्रहैर्गृहीतोल्पशिशुः प्रवेपते मुहुर्मुहुस्त्रस्यति रौति जृम्भते॥ परं नखैर्लुश्चति खं समीक्षते कचित्कचित्कूजति हन्ति रोदिति१२

अर्थ—बालकके तालुके मांसमे वात युक्त कफ प्राप्त होकर तालुकंटक रोग पैदा करे, उससे तालु नीचे लटक आवे ॥ १० ॥ त्रिदोषका तालुपाक सब अंगमें फैल जावे है, सो असाध्यहै, वो यंत्रमंत्र आदिसे अच्छाहो ॥ ११ ॥ जो क्षुद्ररोगोंमें अजगल्ली अहिपूतना रोग कहे हैं, वो और ज्वरादि सर्वरोग जो बडे मनुष्योंके होते हैं, वो सब बालककी देहमें होते है, ऐसे कुशल वैद्यजाने यह माधवाचार्यका मतहै, जो बालक ग्रहों करके गृहीत हो वो कभी कांपे त्रासखाय रोवे जंभाईले नखोंसे अपनी देह नोचे आकाशको देखै कभी २ गूंजै और पीडाहो तथा रोवे ॥ १२ ॥

स्कंदग्रहकेलक्षण।

स्कंदग्रहेणैव शिशुर्गृहीतः फेनं वमेद्रोदिति साश्रुपातः ॥ भिन्न स्वरो भिन्नमलोरुणाक्षो जागर्त्ति रात्रौ परितोल्पसंज्ञः ॥ १३ ॥

शकुनीग्रहकेलक्षण।

बालोगृहीतः परितः शकुन्यास्फोटैश्चितांगो बहुभिः स्रवद्भिः॥ दाहान्वितैः शोणितपूयगंधिभिर्भीत्यार्तिभिः संचकितो भवेत्सः १४

रेवतीग्रहकेलक्षण।

स्फोटैः स्रवद्भिर्बहुभिर्युतांगो भिन्नस्वरो हीनबलो विचर्चाः॥ तृ- ष्णातिसारज्वरदाहयुक्तः स्याद्रेवतीग्रस्ततनुश्च बालः ॥ १५॥

जो बालक स्कन्दग्रह करके ग्रसा गया हो वो मुखसे झाग पटके, रोवै, भिन्न स्वरहो, दस्तहो, लालनेत्र, रात्रिमें जागे, होश न रहे ॥ १३ ॥ जो बालक शकुनीग्रहने ग्रसाहो वो जिसमें राधहै ऐसे फोडा करके व्याप्त हो, दाहयुक्त, रुधिर निकले, दुर्गन्धआवे, डरपै ॥ १४ ॥ जिस बालककी देह फोडोंसे व्याप्तहो और वे स्रवें, भिन्नस्वरहो बलरहित, तथा तेजरहित, तृष्णा, अतीसार, ज्वर, दाहवान हो उसे रेवतीग्रहग्रस्त जानना ॥ १५ ॥

पूतनाग्रहकेलक्षण ।

वसागंधियुक् पूतनाक्रांतदेहः सिशुर्लक्षणैर्जायते पंचपड्भिः ॥
पिपासांगविस्फोटकंपार्त्तिदाहैर्ज्वरश्वासकासातिसारांगकंपैः ॥१६॥

मंडिताग्रहकेलक्षण ।

प्रसन्नवक्त्रो वहुभुक्शिशुः स्याद्ग्रहेण यो मंडितया गृहीतः ॥
विशुद्धगात्रो मलमूत्रगंधिर्वृतः शिराभिस्तुविनिर्गताभिः॥ १७॥

नैगमेयग्रहकेलक्षण ।

वहेत्पूतिगंधं मुखान्नाशिकाया रदैर्मातरं संदशेत् खंविपश्येत् ॥
भवेद्यस्य कंठोष्ठवक्त्रेषु शोषो गृहीतः शिशुर्नैगमेयग्रहेण ॥ १८॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे शिशुरोगनिदानम् ॥

अर्थ–जिसकी देहमें चर्बीकीसी वास मारै, तथा प्यास और अंगोंका टूटना, पीडा, दाह, ज्वर, श्वास, खांसी, अतीसार, कंपहो इन लक्षणोंसे बालक पूतनाग्रहग्रस्त जानना ॥ १६ ॥ जिस बालकका मुख प्रसन्नहो बहुत भोजन करे, शुद्ध देहहो, मल मूत्रकी दुर्गंध आवे, नाडीनसे व्याप्तहो, इन लक्षणोंसे बालक मण्डिताग्रहग्रस्त जानना ॥ १७ ॥ जिसकी देहमें वासआवै, माताको दांतोंसे काटै, आकाशकी ओर देखै, कंठ ओठ मुख सूखे, उसे नैगमेय ग्रहग्रस्त जानना ॥ १८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां बालरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथविषरोगनिदानम्

विषं स्थावरं मूलजं दुग्धजं वा भवेत्पत्रजं पुष्पजं त्वग्भवं वा ॥
फलात्संभवं वीर्यनिर्यासजं वा द्वयोर्योगजं भूमिजं कृत्रिमं वा॥१॥

अथस्थावरविषकेअपगुण

मूर्च्छां श्वासं ज्वरं हिक्कां फेनं छर्दिंगलग्रहम् ॥ दृष्टिनाशं भ्रमं मत्तं कुरुते स्थावरं विषम् ॥ २ ॥

जंगमविषकेअपगुण ।

जीवांगजं जंगममुग्रवीर्यंहालाहलं दाहमतीवनिद्राम् ॥ शोथं विसंज्ञां तमकं क्लमत्वं रोमांचितांगं कुरुतेऽतिनिद्राम् ॥ ३ ॥

अर्थ-विष दोप्रकारका है, एक स्थावर, दूसरा जंगम स्थावरविष मूल आदि और जंगम सर्पादिकका विषादि उत्पन्न करै, इसीसे इसको विषकहते है, स्थावर विष, मूल,दल,फल,त्वचा, दूध, फूल, वीर्य्य, गोंद, भूमिसे पैदा हीरा आदि और कृत्रिम अर्थात् बनाभया ॥ १ ॥ मूर्च्छा, श्वास, ज्वर, हिचकी, झाग, रद, गलग्रह, दृष्टिनाश भ्रम, मस्तपना इतने अपगुण स्थावर विष करती है ॥ २ ॥ प्राणीसे पैदा जो विष वो जंगम विषहै वह इतने अवगुण करै दाह, घोर, निद्रा, सूजन, बेहोशी, अंधकार, ग्लानि, रोमांच, अतिनिद्रा ॥ ३ ॥

विषदेनेवालेमनुष्यकीपरीक्षा ।

पृष्टो विषादो न ददाति चोत्तरं ग्रस्तो ग्रहेणैव मुहुर्निरीक्षते ॥ नाना विचेष्टां कुरुते विकंपते कंडूयतेङ्गं रुदते विशंकते ॥ ४ ॥

मूलजविषकेलक्षण ।

मूलजं भक्षितं कुर्याद्विषं मोहं विजृम्भणम् ॥ प्रलापं वेपनं श्वासं मोहं दाहं विचेष्टनम् ॥ ५ ॥

पत्रविषकेलक्षण ।

पत्रोद्भवं विषं कुर्यान्मुखशोथं च शोषणम् ॥

फलकेविषकेलक्षण ।

फलोत्थं दाहमन्नाहं वैकल्यं दृष्टिनाशनम् ॥ ६ ॥

अर्थ-जो पूछनेसे उत्तर न दे, मानों किसी ग्रहने ग्रसलिया, वारवार देखने लगे, नाना प्रकारकी चेष्टाकरै, कांपै कभी खुजानेलगे, कभी रोवै, तथा शंकाकरै, उसको जानले कि किसीने विष दियाहै ॥ ४ ॥ जो मनुष्य मूलज कहिये जड कंद आदि जैसे सिंगीमोहरा ऐसे विष खानेमें मोह, जंभाई, प्रलाप, कंप, श्वास, मोह, दाह, चेष्टाहीन होताहै ॥ ५ ॥ मुखशोष, देहशोष ये अपगुण पत्रका विषभक्षण करै है, दाह, अनाह, वेकली, दृष्टिनाश, ये फल विषके अपगुण हैं ॥ ६ ॥

फूलगोंदत्वचाकेविषकेलक्षण ।

पुष्पोत्थं छर्दिराध्मानं मोहं च कुरुते विषम् ॥ त्वङ्गनिर्यासोद्भव स्रावं पूतिकंपशिरोरुजम् ॥ ७॥

दुग्धविषकेलक्षण ।

विषं क्षीरसमुद्भूतमाध्मानं कंठशोषणम् ॥ विड्वंधमूत्रसंरोधं दृढांगं कुरुते भ्रमम् ॥ ८ ॥

धातुहरतालआदिकेलक्षण ।

धातूत्थं यद्विषंकुयान्मूर्च्छां दाहं च तालुनि ॥ विषाणि प्राणघातीनि सर्वाणि कथितानि च ॥ ९ ॥

अर्थ-फूलका विष रद अफरा मोहको करे, तथा गोंद और त्वचाका विष खाय दुर्गंध, कंप, शिरमें दर्द ॥ ७ ॥ दूधका विष अफरा, कंठ शोष, दस्त, मूत्रका रुकना, दृढांग और भ्रम करै॥८॥ हीरा हरताल आदि धातुका विष मूर्च्छा, तालुयेमें दाह तथा सर्व विष प्राणके हर्ता जानने ॥ ९ ॥

सर्पकाटेकेलक्षण ।

भुजंगेन दष्टस्य नासामुखाभ्यां पतेद्रक्तधारांगदेशेषु शोफः ॥ भवेन्मंडलैर्मंडितांगो विवर्णो विशीर्णांगमांसोथ निःशोणितांगः ॥ १० ॥ विषादोंगकंपो भयो रोमहर्षः शरीरे गुरुत्वं भ्रमो दृष्टिनाशः ॥ तृषाध्मानमानीलता गात्रदेशे ह्यनाहो रतिर्जृम्भणं मूर्च्छता स्यात् ॥ ११ ॥

देशविशेषऔरकालविशेषमेंजोसर्पकाटेउसकेलक्षण ।

अश्वत्थमूले पिचुमंदमूले चतुष्पथे देवगृहे श्मशाने ॥ वाल्मीक देशे दिनसंध्ययोर्वा सर्प्पेण दष्टः सुधया न जीवेत् ॥ १२ ॥

अर्थ-जिसे सर्प्पकाटे उसकी नाक और मुखसे रुधिरकी धार गिरै, सबदेहमें सूजन हो, देहमें रुधिरके चकत्तेहों,देहका मांस विखर जाय,तथा देहमें रुधिर न रहै ॥१०॥ खेद, अंग कंप, तथा विवर्ण हो, भय, रोमांच, देहभारी, भ्रम, नेत्रोंसे न दीखै,प्यास,अफरा,शरीरनीला, अनाह, अरति, मूर्च्छा, जंभाई,ये लक्षण सर्प काटेके हैं ॥११॥ पीपलके वृक्षके नीचे, तथा निम्बके वृक्षके नीचे, चौराहेमें, मन्दिरमें, श्मशानमें,बांबीके पास, संध्याके समय (भरणी,आर्द्रा,श्लेषा,मघा,मूल,कृत्तिका, इननक्षत्रोंमें) जो सर्प्पकाटे तो मनुष्य मरजावै ॥ १२ ॥

मूषकविषलक्षण ।

मूषकस्य विषं कुर्याच्छर्दिं शोफं विवर्णताम् ॥ मूर्च्छां मंदश्रुतिं श्वासं लालास्रावं शिरोरुजम् ॥ १३ ॥

कीटआदिविषकेलक्षण ।

दष्टस्य कीटैर्विषदिग्धतुंडैः कृष्णाभमंगं वहुवेदनास्यात् ॥ शोफोति दाहः परिभिन्नवर्चा मोहप्रलापोधिकरोमहर्षः ॥ १४ ॥

कालेविच्छूकेलक्षण ।

दष्टो मनुष्योऽसितवृश्चिकेन नाना विचेष्टां कुरुते विषार्त्तः ॥ भीतो विषण्णोग्निसमानदाहः पीडार्दितो रौति विलापमुच्चैः ॥ १५ ॥

अर्थ–विषैले मूषेका विष रद, सूजन, विवर्ण, मूर्च्छा, मंद सुने, श्वास, लार टपकें, शिरमेंपीडा ये लक्षण हों ॥ १३ ॥ कीट अथवा जिसे विषैल डाढवाला जानवर काटे उसके लक्षण देहकाला तथा पीडायुक्त सूजन दाह तेजरहित मोह, प्रलाप, रोमांच ये हों ॥ १४ ॥ काले विच्छू काटेके ये लक्षण हैं, नानाप्रकारकी चेष्टाकरै, डरपै, शून्यता, अग्निके समान दाह, घोर पीडा, पुकारकर रोवै ॥ १५ ॥

विषं वृश्चिकं दुःसहं प्राणहारि महामोहदं सौख्यविध्वंसकारि ॥ वलज्ञानविज्ञानतेजोपहारि व्यथाशोफवैकल्यदाहार्तिकारी ॥१६॥

वर्हीसर्पकाटेकेलक्षण ।

ज्वरो घोरतरं शूलं छर्दिःशोफो विसर्पति ॥ वर्णनाशोभवेत्पीडा वर्हिदष्टस्य लक्षणम् ॥ १७ ॥ प्राणिदंशेन संदष्टो हृष्टरोमा क्षतातिमान् ॥ स्तब्धलिंगो भवेच्छोफो विनिद्रश्चकितोनिशम् ॥१८॥

अर्थ–विच्छूका विष नहीं सहाजाय, प्राणहर्ता, महामोह करै, सुखको दूर करै, वल, ज्ञान, तेज, इनको दूर करै व्यथा, सूजन, वेकली दाह, और पीडा करै ॥ १६ ॥ घोरज्वर, शूल, रद, सूजनता बढे, वर्णका नाश और पीडा होय, ये वर्ही नामसर्पकाटेके लक्षणहैं॥ १७॥प्राणीके विषसे डसेहुयेके ये लक्षणहैं, रोमांच, घावसे पीडित, टेढा लिंग, सूजन, निद्राहीन और चकित ॥१८॥

मेंडकमछलीकेविषके लक्षण ।

शोफश्छर्दितृषानिद्रामंडूकविषलक्षणम् ॥ मत्स्योत्थितं विषं कुर्याद्दाहं शोफं तृषां व्यथाम् ॥ १९ ॥

जोंककेविषकालक्षण ।

मूर्च्छा शोफज्वरं कंडू तृषां कुर्युर्जलौकसः ॥

छिपकलीकेविषकालक्षण ।

दाहं स्वेदं व्यथां शोथं कुर्याच्च गृहगोधिका ॥ २० ॥

शतपदी (खानखजूरा) केविपकेलक्षण ।

शतपद्याविषं कुर्यात्स्वेदं दाहं रुजं बहु ॥

मच्छरकेविपकालक्षण ।

मशकानां विषं कुर्याच्छोफाल्पं तुच्छवेदनाम् ॥२१॥

अर्थ–मेंडकका विष सूजन, रद, प्यास, निद्राकरैहै, और मछलीका विष दाह, सूजन, प्यास और, व्यथाको करै ॥ १९ ॥ विषैले जोंककाटे तो मूर्च्छा, सूजन, ज्वर, खुजली, प्यासहो, दाह, पसीना, पीडा सूजन, ये छिपकली काटेसे होतेहै ॥ २० ॥ कातरके काटनेसे पसीना, दाह, पीडाहो मच्छरका विष थोडी सूजन, और थोडीही पीडा करैहै ॥ २१ ॥

लूताविपकेलक्षण ।

लूताविषं महाघोरं पिंडिकां बहुवेदनाम् ॥ कुरुते चंचलां तीव्रां पाकदाहज्वरान्विताम् ॥ २२ ॥

मक्खीकेविपकेलक्षण ।

मक्षिकाणां विषं तुच्छं शोफतोदसमन्वितम् ॥

नखदंतविपकेलक्षण ।

नखदंतविषं रौद्रं दाहस्रावव्यथाकरम् ॥ २३ ॥

सर्पादिककाटेकाअसाध्यलक्षण ।

दृष्टिर्गता यस्य पतंति केशा नासामुखाभ्यां रुधिरस्य पातः ॥ वक्रं मुखं यस्य विवर्णमंगं विषाभिभूतं परिवर्जयेत्तम् ॥ २४ ॥

अर्थ–लूताविष महाघोर ये लक्षण करैहै, पींडिका चंचलतीव्रपीडा, पाक, दाह, ज्वर ॥ २२ ॥ विषैलमक्खी काटे उसकी थोडी सूजन, और पीडायुक्त हो जिसके सिंह आदिका नख लगाहो मगर आदिकी दाढ लगीहो उसके लक्षण दाहहो, स्रावहो, व्यथाहो ॥ २३ ॥ जिस पुरुषकी दृष्टि मारीजाय, और शिरके बाल गिरपडें, नाक मुखसे रुधिर गिरै, टेढामुख होजाय, तथा विवर्ण ऐसे रोगीको वैद्य त्यागदे ॥ २४ ॥

(तथा) हीनस्वरं यस्य पतंति दंष्ट्राः सर्वांगशीतं रसनातिकृष्णा ॥ वैकल्यमंगे वदनं करालं विषार्दितं दूरतरं त्यजेत्तम् ॥ २५ ॥

दूषीविपकेलक्षण ।

जलस्य पानाद्विषदूषितस्य दिग्देशकालांतरसंभवस्य ॥ नरस्य देहे विषलक्षणस्य दूषीविषं चोच्छलते कृशस्य ॥ २६ ॥ दूषी-

विषं संकुरुते नरस्य हस्तांघ्रिशोथं मुखकंठशोषम् ॥ मूर्च्छां ज्वरं मंडलचर्चितांगं कुष्ठं रुजत्वं जठरस्य वृद्धिम् ॥ २७ ॥

अर्थ–हीनस्वर होजाय, दांत डाढौं गिरपडैं, सर्वांगमें शीतलगे, कालीजीभ हो जाय, देहमें बेकली, करालमुखहो, ऐसे विषार्दित मनुष्यको वैद्य त्याग करदे॥२५॥दिशा देश कालमें प्रगट ऐसे विषदूषित जल पीनेसे विषके वा विषमिले पदार्थके खानेसे क्रशमनुष्यकी देहमें नाना प्रकारके रोग करे है ॥२६॥ दूषी विष ये लक्षण करैहै, हाथ, पैरमें सूजन, मुख कण्ठका सूखना मूर्च्छा, ज्वर, रुधिरके चकत्ते, कोढ, पेटका वढजाना ॥ २७ ॥

मांसक्षयं पाण्डुरचर्चितांगं निद्रां विजृम्भां वलवीर्यनाशम् ॥ छर्दिं पिपासां विकलं विवर्णं दूषीविषं संकुरुते विकारम् ॥ २८ ॥ दूषीविषं त्रिदोषोत्थं यन्त्रमंत्रौषधादिभिः ॥ असाध्यं मुनिभिः प्रोक्तं तस्य जाप्यं हितं भवेत् ॥ २९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे विषलक्षणनिदानं संपूर्णम् ॥

अर्थ–पीलिया, मासकाक्षय, निद्रा, जंभाई, बल वीर्य्यका नाश, रद, प्यास, बेकली, देहका विवर्ण ये, दूषीविष विकार करे है ॥ २८ ॥ त्रिदोषसे उठा दूषीविष असाध्यहै, वो मंत्र औषधियोंसे और जाप्यसे हित होय ॥ २९ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठककृतहंसराजार्थबोधिन्यां विषरोगनिदानम् ॥

मूत्रपरीक्षा ।

सुपात्रे समादाय मूत्रं गदीनां प्रभाते भिषक्चिंतयेत्तैलबिंदुम् ॥ विनिक्षिप्य तास्मिन्विकाशं समेति तदा साध्यमेवं वदेद्रोगिणंतम् ॥ १ ॥ यदा बिंदुरूपस्थितं मूत्रमध्ये तले संश्रितं वा तदा साध्यमेवम् ॥ त्रिकोणस्थितं तैलबिंदुर्यदिस्यात्तदा चैव दोषं वदेन्मानवानाम् ॥ २ ॥ क्षुरादंडकोदंडतूणीरखड्गंगदाचक्रबाणासिरूपं विधत्ते ॥ यदा तैलबिंदुस्त्रिशूलाकृतिर्वा तदा रोगिणो यास्यते मृत्यु वक्रे ॥ ३ ॥

अर्थ–वैद्य रोगीके मूत्रको प्रातःकाल कांसीके पात्रमें या कांचके पात्रमें तेलकी बूंद डालकर परिक्षा करे, यदि मूत्रमें तेलकी बूंद प्रकाशमान देखै तो रोगीको साध्य कहै ॥ १ ॥ और जो तेलकी बूंद मूत्रमें डूबजाय तो असाध्य कहै, और जो मूत्रकी बूंद त्रिकोणके आकार होजाय तो द्विदोष युक्त

मनुष्य जानें ॥ २ ॥ कदाचित् तेलकी बूंद छुराके वा दण्डके या गदाके वा तरवारके वा बाणके या खड्गके वा धनुषके वा फरसाके आकार होजाय, अथवा त्रिशूलके आकार होजाय, वो रोगी मौतके मुखमें जाय ॥ ३ ॥

ज्वरार्त्तस्य मूत्रे यदा तैलविन्दुर्विधत्ते भुजङ्गाकृतिं मध्यरंध्रम् ॥ विरूपं कृतान्ताकृतिं वृश्चिकाभं स रोगी यमस्यालये शीघ्रगंता ॥४॥ ज्वरार्त्तस्य पुंसो यदा मूत्रमध्ये समादाय तैलं तृणेन प्रभाते॥ विनिक्षिप्य सिंहासनाभं विधत्ते तडागाकृतिं दीर्घमायुर्वदंति ॥ ५ ॥ भेरीदुंदुभिशंखगोमुखतुरीतुल्यंमृदंगाकृतिं वीणातोरणहंसकम्बुसुरभीछत्राश्वयानासमम् ॥ ढक्काकुम्भकिरीटहारसदृशं केयूररत्नद्युतिं सन्धत्ते तिलतैलविंदुरनिशं मूत्रे महारोगिणः॥६॥

अर्थ—ज्वरवान् पुरुषके मूत्रमें तेलकी बूंद सर्पके आकार और बीचमें छिद्रहों तथा छुरी और मौतके आकारहो तथा बिच्छूके आकारहो वो रोगी जल्दी यमराजके घरजाय ॥ ४ ॥ और जिस ज्वरवाले पुरुषके मूत्रमें तेलकी बूंद डारनेसे सिंहासनके आकार, अथवा तालाबके आकार होजाय, उस रोगीको दीर्घआयु जानना ॥५॥ भेरी, दुंदुभी शंख, गोमुख, तुरही, मृदङ्ग, तमूरा, तोरण, हंस, कमल, गौ, छत्र, घोडा, सवारी, ढका, घट, किरीट, हार, केयूर, रत्न, इनकीसी आकृतिके सदृश तेलकी बूंद होय वो महारोगी जानना ॥ ६ ॥

प्रसरति यदि मूत्रे रोगिणस्तैलविन्दुर्दिशि विदिशि समंतान्नीरुजं तं हि विद्यात् ॥ व्रजति दिशि मघोनः पश्चिमायां दिशाया पवनककुभि रोगी रोगमुक्तं नितान्तम् ॥ ७ ॥

वातपित्तकफकेमूत्रकीपरीक्षा

श्यामं स्निग्धं तारकाभिर्युतं तद्विद्यान्मूत्रं रोगिणो वातभूतम् ॥ पीतं रक्तं पित्तजम्बुद्बुदोक्तं श्लेष्मोद्भूतं पल्वलंवारितुल्यम् ॥ ८ ॥

द्विदोषऔरत्रिदोषमूत्रकीपरीक्षा

रोगीमूत्रं द्विदोषोत्थं सर्षपतैलसन्निभम् ॥ संनिपातोत्थितं कृष्णं विद्याद्बुद्बुदसंयुतम् ॥ ९ ॥

अर्थ—जिस रोगीके मूत्रमें तेलकी बूंद दिशा और विदिशामें फैल जाय, उसे नैरोग्य जानना चाहिये, और तेलकी बूंद पूर्व दिशामें वा पश्चिमदिशामें तथा वायव्य और उत्तरदिशामें फैलजाय तोभी रोगी रोगमुक्त जानना ॥ ७ ॥ वातसे मूत्र नीला, और चिकना, उतरताहै, पित्तसे लाल, और पीला तथा बबूलेयुक्त उतरे है, कफसे गाढा, और चिकना तथा तलैयाके जल समान उतरै

॥ ८ ॥ द्विदोषवाले पुरुषका मूत्र सरसोंके तेलके समान उतरै, और सन्निपातवाले पुरुषका मूत्र काला और बबूलेयुक्त उतरता है ॥ ९ ॥

अजीर्णसंभवं मूत्रमजामूत्रसमं भवेत् ॥ ज्वरोत्थं कुंकुमाकारं सुखिनो जलसन्निभम् ॥ १० ॥ भिषक्चक्रचित्तोत्सवंवैद्यशास्त्रं कृतं हंसराजेन पद्यैर्मनोज्ञैः ॥ सुहृद्यैरदोषै रुजोध्वांतनाशं हरेरंघ्रिसंसेवनानंदमूर्त्तेः ॥ ११ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य शास्त्रे रोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

अर्थ–अजीर्णसे मूत्र बकरीके मूत्रके समानउतरै, ज्वरसे केसरियारंग सरीखा उतरे है, सुखी पुरुषका मूत्र जलके समान उतरै ॥ १० ॥ भिषक्चक्रचित्तोत्सव वैद्यशास्त्र हंसराज कविने मनको प्रसन्नकारक पदोंसे तथा हृदयके हरणकारक दोष रहित पदोंसे रोगका हरणकरनेवाला श्रीनिकुंजविहारीके चरणारविन्द सेवकने बनायाहै ॥ ११ ॥

इति श्रीमाथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थसुबोधिनीटीकायांरोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

नपुंसकलक्षणानि सुश्रुताल्लिख्यंते ॥

आसेक्यनपुंसकके लक्षण ।

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यः पुरुषो भवेत् ॥ सशुक्रं प्राश्य लभते ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥ १ ॥

सौगंधिकनपुंसकके लक्षण ।

यः पूतियोनौ जायेत स सौगंधिकसंज्ञितः ॥ सयोनिशेफसोर्गंधमाघ्राय लभते बलम् ॥ २ ॥

कुंभिकनपुंसकके लक्षण । 20106

स्वगुदेऽब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्त्तते ॥ कुंभिकः स तु विज्ञेय ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥ ३ ॥

अर्थ–माता पिताके अति अल्पवीर्य्यसे जो गर्भ रहता है, वो पुरुष आसेक्य नाम नपुंसक होता है,वो दूसरेके मैथुनके करनेसे पैदा शुक्र खाय जावे तब उसको चैतन्यता पैदाहो तब विषय करनेको प्रवृत्तहो इसका दूसरा नाम मुखयोनि है ॥ १ ॥ जो पुरुष दुष्टयोनिसे पैदाहुआ हो वो योनि या लिंगको सूंघले तब चैतन्यता प्राप्तहो उसे सौगंधिक कहते हैं और दूसरा नाम नासा-

योनि कहतेहैं ॥ २ ॥ जो पुरुष पहले दूसरे पुरुषसे अपनी गुदामंजन करावे, तब उसको चैतन्यता प्राप्तहो, तब स्त्रीके विषे पुरुषताको प्राप्तहो, उसे कुम्भिक नपुंसक कहते हैं ॥ ३ ॥

ईर्ष्यकके लक्षणोंको सुनो ।

ईर्ष्यकके लक्षण ।

दृष्ट्वा व्यवायमन्येषां व्यवाये यः प्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकः स तु विज्ञेयो दृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥ ४ ॥

महापंढके लक्षण ।

योभार्य्यायामृतौ मोहादंगनेव प्रवर्त्तते ॥ तत्र स्त्रीचेष्टिताकारो जायते पंढसंज्ञितः ॥ ५ ॥

नारीपंढके लक्षण ।

ऋतौ पुरुषवद्वापि प्रवर्त्तेतांगना यदि ॥ तत्र कन्या यदिभवेत्सा भवेन्नरचेष्टिता ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे नपुंसकलक्षणानि समाप्तानि ॥

अर्थ—जो पुरुष दूसरेको मैथुन करतादेख आप मैथुन करनेको प्रवृत्त हो, उसे ईर्ष्यक नपुंसक कहते हैं, दूसरा नाम दृक्योनिहै ॥ ४ ॥ जो पुरुष ऋतुके समय स्त्रीके प्रमाण प्रवृत्तहो अर्थात् विपरीत रतिकरे, उसके वीर्य्यसे पैदा जो बालक वो स्त्रीकीसी चेष्टावान् हो, और स्त्रीके आकार युक्तहो उसे महापण्ढ कहते हैं ॥ ५ ॥ ऋतुकालके समय जो स्त्री पुरुषके प्रमाण प्रवृत्तहो अर्थात् पुरुषको नीचे सुलाय आप ऊपर चढ मैथुन करै उससें जो कन्या पैदाहो वह पुरुषके आकारहो और पुरुषकीसी चेष्टावालीहो ॥ ६ ॥

इति श्रीमाथुरवंशोत्पन्नप्रशंसनीयगुणगणालंकृतकन्हैयालालपाठकतनयदत्तरामप्रणीतहंसराजार्थसुबोधिनीटीकासमाप्तिमगात् ॥

इति हंसराजनिदानंसम्पूर्णम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बंबई.